For More Newspapers And Magazines Join Paid Group 8969469464

दैनिक जागरण

एक बुरा शब्द सारे अच्छे परिणामों को बुरे में बदल सकता है

भारत रत्न आडवाणी

कुछ समय पहले जब सामाजिक न्याय के पुरोधा कर्पूरी ठाकुर को भारत रत्न से सम्मानित करने की घोषणा की गई थी तो कई लोगों की यह अनुभूति थी कि इसी अवसर पर लालकृष्ण आडवाणी को भी यह सम्मान प्रदान किया जाना चाहिए था। यह अच्छा हुआ कि अंततः ऐसा ही किया गया। लालकृष्ण आडवाणी का योगदान केवल यह नहीं है कि उन्होंने भाजपा को एक शक्तिशाली राजनीतिक दल में तब्दील किया। उन्होंने भाजपा नेताओं की एक पूरी पीढ़ी को गढ़ने का काम किया। इसी पीढ़ी ने ही भाजपा को एक नया आयाम दिया। निःसंदेह लालकृष्ण आडवाणी को इसके लिए भी याद किया जाएगा कि उन्होंने राम मंदिर निर्माण के लिए रथयात्रा निकाली। इस रथयात्रा के जरिये उन्होंने केवल अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण की अलख ही नहीं जगाई, बल्कि भारतीय संस्कृति और सभ्यता के प्रति अपराधबोध रखने वालों को जागृत किया। उन्होंने हिंदू समाज को अपनी आस्था और पहचान पर गर्व करना भी सिखाया। लालकृष्ण आडवाणी राजनीतिक शुचिता के लिए भी याद किए जाने चाहिए। यह विशेष रूप से स्मरण रहना चाहिए कि जैन-हवाला कांड में अपना नाम आने के बाद किस तरह उन्होंने लोकसभा से त्यागपत्र देने के साथ यह घोषणा की थी कि जब तक भ्रष्टाचार के आरोपों से मुक्ति नहीं मिल जाती, तब तक वह संसद में कदम नहीं रखेंगे। अपने इस दृढ़ संकल्प के चलते उन्होंने अगला लोकसभा चुनाव भी नहीं लड़ा। आज जब नेता भ्रष्टाचार के गंभीर आरोपों से घिरने और यहां तक कि जेल जाने के बाद भी पदत्याग करने को तैयार नहीं होते, तब राजनीतिक शुचिता के प्रति लालकृष्ण आडवाणी की यह प्रतिबद्धता एक अनुकरणीय उदाहरण है। उन्होंने विकृत और विजातीय सेक्युलरिज्म को छद्म करार देकर उसकी ऐसी पोल खोली कि आज तथाकथित सेक्युलर दल खुद को ऐसा बताने में संकोच करते हैं। सेक्युलरिज्म को बेनकाब करके उन्होंने भारतीय राजनीति को रूपांतरित करने का जो काम किया, उसकी मिसाल मिलना कठिन है।

लालकृष्ण आडवाणी को भारत रत्न से सम्मानित करने पर इस तरह की आपत्तियों का कोई मूल्य नहीं कि मोदी सरकार अपने लोगों को ही यह सम्मान प्रदान कर रही है। एक तो चंद दिनों पहले ही उसने कर्पूरी ठाकुर को यह सम्मान प्रदान किया है। दूसरे, वह मदन मोहन मालवीय एवं पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी को भी भारत रत्न से विभूषित कर चुकी है। ऐसा करके मोदी सरकार ने यही रेखांकित किया कि उसके मन में दूसरी विचारधाराओं के प्रति भी सम्मान है। यह भावना अन्य दलों और विशेष रूप से कांग्रेस को भी दिखानी चाहिए, क्योंकि उसकी सरकारों ने गांधी परिवार के सदस्यों को तो भारत रत्न देने में तत्परता दिखाई, लेकिन तनिक भी भिन्न विचारधारा वाले नेताओं को यह सम्मान देने के लिए आगे नहीं आई। इस क्रम में उसने अपने ही दल के कई दिग्गज नेताओं की अनदेखी की। यह एक तथ्य है कि सरदार पटेल, डा. आंबेडकर, मौलाना आजाद आदि को भारत रत्न गैर कांग्रेसी सरकारों ने प्रदान किया।

आत्मनिर्भर निकाय

मध्य प्रदेश के सबसे समृद्ध और देश के सबसे चर्चित नगर निगमों में से एक इंदौर नगर निगम में मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव ने शुक्रवार को नगरीय निकायों के संदर्भ में महत्वपूर्ण बात कही। उन्होंने नगरीय निकायों से आत्मनिर्भर बनने का आह्वान करते हुए नई व्यवस्था दी कि अब विकास प्राधिकरणों की तरह नगर निगम भी आवासीय योजनाएं बना सकेंगे। एक अर्थ में यह पहल अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि इसका ठीक से क्रियान्वयन हो सकेगा, तो नगरीय निकाय आर्थिक रूप से संपन्न होते हुए आत्मनिर्भर बन सकेंगे। वस्तुतः अब तक आवासीय योजना को लेकर यही होता आया है कि शहरों में विकास प्राधिकरण आवासीय योजनाएं विकसित करते हैं और उससे आय अर्जित करते हैं। योजना विकसित करने के बाद वे इसे संचालन के लिए नगरीय निकाय को सौंप देते हैं। इन दोनों एजेंसियों के बीच कालोनियों का विकास अधर में अटक जाता है। कई बार अधूरी सड़कें, अपर्याप्त बिजली लाइनें और पेयजल एवं पानी निकासी संबंधी परियोजनाएं आधी-अधूरी रहती हैं और आवासीय योजना का हस्तांतरण हो जाता है। इसका खामियाजा उस योजना में अपना आवास खरीदने वालों को उठाना पड़ता है। बात केवल योजनाओं के विकास की ही नहीं, बल्कि नगरीय निकायों को आत्मनिर्भर बनाने की भी है। आखिर निकाय कब तक राज्य या केंद्र सरकार से मिलने वाले फंड के आधार पर अपने काम करते रहेंगे। उन्हें विभिन्न स्रोतों से अपनी आय बढ़ानी ही होगी। आवासीय योजना इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकता है। जब निगम ही कालोनी विकसित करेगा, तो निश्चित ही उसकी आय बढ़ेगी और जनता को बेहतर सुविधाएं मिल सकेंगी। किंतु यह सब ईमानदारीपूर्वक तथा दृढ़तापूर्वक करना होगा।

आत्मविश्वास से भरी मोदी सरकार

संजय गुप्त

अंतरिम बजट मोदी सरकार के इसी भरोसे को रेखांकित कर रहा है कि वह तीसरी बार सत्ता हासिल करने जा रही है

अवधेश राजपूत

मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल के आखिरी वर्ष में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण की ओर से पेश अंतरिम बजट से न केवल सरकार का यह आत्मविश्वास झलकता है कि वह अपने कार्यों के बल पर ही तीसरी बार सत्ता में वापसी करेगी, बल्कि देश को विकसित राष्ट्र बनाने के उसके संकल्प का परिचय भी मिलता है। यह एक ऐसा अंतरिम बजट है, जिसमें सरकार ने चुनाव जीतने के लिए मतदाताओं को रिझाने के लिए कोई लोकलुभावन घोषणा नहीं की। ध्यान रहे कि 2019 के अंतरिम बजट में कई लोकलुभावन घोषणाएं की गई थीं। इस बार ऐसा कुछ नहीं किया गया। इसका मतलब है कि सरकार यह मानकर चल रही है कि जनता को उस पर यह भरोसा है कि वह देशहित में सही दिशा में काम कर रही है। शायद जनता के इसी भरोसे के चलते अंतरिम बजट पेश करते हुए वित्त मंत्री ने साफ तौर पर यह कहा कि पूर्ण बजट में बड़ी घोषणाएं की जाएंगी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी अंतरिम बजट के पहले यह कह दिया था कि जब चुनाव का समय निकट होता है, तब आमतौर पर पूर्ण बजट नहीं रखा जाता। हम भी उसी परंपरा का निर्वाह करते हुए पूर्ण बजट नई सरकार बनने के बाद आपके समक्ष लेकर आएंगे। यह कथन उनके इस आत्मविश्वास का ही परिचायक है कि वह सत्ता में लौट रहे हैं। यह आत्मविश्वास बीते दस साल में अर्जित की गई सफलताओं से उपजा है। इन सफलताओं का महत्व इसलिए है, क्योंकि मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल के लगभग दो वर्ष कोविड महामारी की भेंट चढ़ गए।

कोविड महामारी के चलते जहां कई प्रमुख देशों की अर्थव्यवस्थाएं संकट में फंस गईं और अभी तक उबर नहीं सकी हैं, वहीं भारतीय अर्थव्यवस्था कोविड संकट से उबरकर सबसे तेज गति से बढ़ रही है। भारत जैसे विशाल आबादी और अपेक्षाकृत कमजोर स्वास्थ्य ढांचे वाले देश का कोविड संकट से पार पाना एक कठिन चुनौती थी, लेकिन मोदी सरकार ने इस चुनौती का सामना कहीं अधिक कुशलता से किया। इसी कारण इस समय देश का माहौल यह रेखांकित कर रहा है कि मोदी सरकार तीसरी बार सत्ता में आने जा रही है। इस माहौल का एक कारण यह भी है कि विपक्ष बिखरा हुआ है और वह जनता को आकर्षित करने वाला न तो कोई विमर्श खड़ा पा रहा है और न ही कोई वैकल्पिक एजेंडा पेश कर पा रहा है। सरकार ने अंतरिम बजट में ऐसी कोई घोषणा नहीं की, जिससे विपक्ष को यह कहने का अवसर मिलता कि उसने लोगों को लुभाने के लिए रेवड़ियां बांटने का काम किया। जब वित्त मंत्री संसद में अंतरिम बजट पेश कर रही थीं, तब विपक्षी सांसदों को उसकी तार्किक आलोचना का कोई अवसर नहीं दिखा। विपक्ष रस्मी तौर पर ही अंतरिम बजट की आलोचना कर सका, क्योंकि उसके पास कहने के लिए बहुत कुछ नहीं था। पूर्व वित्त मंत्री पी. चिदंबरम केवल यही कह सके कि सरकार ने रोजगार का ध्यान नहीं रखा। इसी तरह कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे यह कहने तक सीमित रहे कि अंतरिम बजट कामचलाऊ है।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने अपने भाषण में केवल अपनी सरकार की उपलब्धियों को विस्तार से रेखांकित ही नहीं किया, बल्कि सरकार के भावी एजेंडे की झलक भी पेश की। इसी के साथ उन्होंने विपक्ष की चुनावी रणनीति को भी कठघरे में खड़ा किया। विपक्ष एक अर्से से जाति जनगणना की मांग कर मोदी सरकार को घेर रहा था। इसका जवाब प्रधानमंत्री ने यह कहकर दिया कि उनके लिए केवल चार ही जातियां हैं- महिला, युवा, किसान और गरीब। उन्होंने इन चारों वर्गों के उत्थान के लिए विशेष उपाय करने शुरू कर दिए हैं। इसकी झलक अंतरिम बजट में भी दिखाई दी। यह झलक दिखाकर मोदी सरकार ने विपक्ष की जात-पांत की राजनीति के साथ उसके क्षेत्रवाद, अल्पसंख्यकवाद और तुष्टीकरण के तौर-तरीकों को भी चुनौती दी। मोदी सरकार एक लंबे समय से यह भी प्रदर्शित कर रही है कि वह भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। उसने 2047 तक देश को विकसित बनाने का न केवल संकल्प लिया है, बल्कि उसे पूरा करने के लिए आवश्यक कदम भी उठाए हैं। इन कदमों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है।

यह विडंबना ही है कि जब मोदी सरकार देश को विकसित बनाने के लक्ष्य को पाने के लिए राज्यों का भी सहयोग लेने को तत्पर है और इसी कारण अंतरिम बजट में राज्यों के लिए 50 वर्ष तक बिना ब्याज के 75 हजार करोड़ रुपये के कर्ज का प्रविधान किया, तब कुछ विपक्षी दल क्षेत्रवाद को हवा देने में लगे हुए हैं। कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार के भाई और कांग्रेस सांसद डीके सुरेश ने अंतरिम बजट पर यह बेतुका बयान दिया कि यदि दक्षिणी राज्यों के हिस्से का पैसा इसी तरह उत्तर भारत में बांटा जाएगा तो वे अलग देश की मांग करने के लिए विवश होंगे। यह हर लिहाज से एक खतरनाक बयान है। इसी कारण कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को इस बयान की आलोचना करनी पड़ी। चिंताजनक यह है कि डीके सुरेश जैसा बयान तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने भी दिया। उन्होंने यह कहा कि अंतरिम बजट में तमिलनाडु की अनदेखी की गई है। साफ है कि वह क्षेत्रवाद की अपनी संकीर्ण राजनीति के चलते इससे अनभिज्ञ ही रहना चाहते हैं कि अंतरिम बजट किसी राज्य विशेष को ध्यान में रखकर नहीं बनाया जाता। यह पहली बार नहीं, जब कांग्रेस या उसके सहयोगी दलों के नेताओं ने क्षेत्रवाद की राजनीति को हवा दी हो। वे अतीत में भी ऐसा करते रहे हैं।

अंतरिम बजट के बाद देश को प्रतीक्षा है पूर्ण बजट की, क्योंकि उसमें बड़ी घोषणाएं करने की बात कही गई है। देश की जनता को मोदी सरकार से अन्य अनेक अपेक्षाओं के साथ यह उम्मीद भी है कि वह अपने सुधार कार्यक्रम को और अधिक तेजी दे, क्योंकि कई सुधारों की प्रतीक्षा है। भले ही केंद्र में शीर्ष स्तर पर भ्रष्टाचार का कोई बड़ा मामला देखने को न मिला हो, लेकिन नौकरशाही के मध्य और निम्न स्तर पर भ्रष्टाचार पर लगाम नहीं लग सकी है। मोदी सरकार को इस पर ध्यान देना होगा, क्योंकि आम आदमी इसी भ्रष्टाचार से त्रस्त है।

response@jagran.com

मुख्य अतिथि तलाशने की समस्या

हास्य-व्यंग्य

रंगनाथ द्विवेदी

मुख्य अतिथि की व्यस्तता का जिक्र ऐसे किया जाता है, जैसे यदि वह कुछ देर और ठहर गए तो सब कुछ थम जाएगा

हम सभी को यह पता है कि किसी भी कार्यक्रम का प्राण तत्व और प्राण सेतु उसका मुख्य अतिथि ही होता है। पहले के समय में बड़ी मुश्किल से पूरे क्षेत्र में एकाध मुख्य अतिथि हुआ करते थे। उन्हीं को मुख्य अतिथि बनाकर सारे महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का काम चला लिया जाता था। आज के समय में कार्यक्रम बहुत अधिक होने लगे हैं। इसलिए मुख्य अतिथि खोजने में मुश्किल होने लगी है। इसलिए और भी, क्योंकि मुख्य अतिथियों में एक-दूसरे से ज्यादा कार्यक्रम में मुख्य अतिथि होने की होड़ सी लगी रहती है। पहले के मुख्य अतिथि काफी संभ्रांत, शालीन और क्षेत्र के सम्मानित लोग हुआ करते थे, लेकिन आज के मुख्य अतिथि में ये गुण होना बहुत आवश्यक नहीं है। उनकी सबसे बड़ी योग्यता है उनके पास पैसे के साथ ही उसी स्तर का भौकाल होना और अपने गले में मालाएं डलवाने के लिए तत्पर रहना।

अब मुख्य अतिथि किसे चुनना है, यह आयोजनकर्ता के चातुर्य पर निर्भर करता है। वांछित मुख्य अतिथि को निमंत्रण पत्र देते समय आयोजनकर्ता के पास ऐसे लोग भी होने जरूरी हैं, जो मुख्य अतिथि को इसके लिए राजी कर सकें कि वह कार्यक्रम के लिए कुछ सहयोग राशि देने को तैयार हो जाए। ऐसे मुख्य अतिथि आसानी से मिल भी जाते हैं। तमाम मुख्य अतिथियों के साथ समस्या यह होती है कि यदि उन्हें कार्यक्रम में दस बजे पहुंचना होता है तो वह 11 बजे के बाद ही पहुंचते हैं। देर से पहुंचने वाले मुख्य अतिथियों का कहना होता है कि इससे वहां बैठे लोगों की उत्कंठा बनी रहती है और संचालक भी कई बार उनके नाम का उद्घोष कर पाता है। इससे उन्हें प्रचार मिलता है। कार्यक्रम में जाने से पहले ऐसे मुख्य अतिथि अपने चेलों से खुद द्वारा प्रायोजित साज-सज्जा का अच्छे से निरीक्षण कराते हैं। इस प्रायोजित साज-सज्जा के अलावा चार-पांच लग्जरी कारें, साथ में कुछ असलहा और दो-तीन फोटोग्राफर भी चाहिए होते हैं। दो-तीन लोग मोबाइल पकड़ने वाले भी चाहिए होते हैं, ताकि वे पल-पल की जानकारी इंटरनेट मीडिया पर दे सकें। कार्यक्रम स्थल के पास जब मुख्य अतिथि की कार रुकती है तो आयोजनकर्ताओं के साथ उनके चेले ही उन्हें रिसीव करने के लिए ऐसे दौड़ पड़ते हैं, जैसे वे मुख्य अतिथि से पहली बार मिल रहे हों। मुख्य अतिथि के साथ आए लोग उनके पीछे-पीछे कदमताल मिलाते हुए ऐसे चलते हैं, जैसे इससे पहले सेना में रहे हों। मुख्य अतिथि के मंच पर पहुंचते ही उन्हें बुलाने वालों के साथ उनके चेले उन्हें मालाएं पहुंचाने में जुट जाते हैं। इसी के साथ कुछ लोग उनकी जय-जयकार करने में लग जाते हैं। मुख्य अतिथि की कुर्सी पर बैठने से पहले अपने दोनों हाथ ऐसे जोड़ते हैं कि कोई अपने सगे संबंधियों को भी नहीं जोड़ता होगा। उनके आसन ग्रहण करते ही उनकी व्यस्तता का जिक्र कार्यक्रम के आयोजक ऐसे करते हैं, जैसे उनसे व्यस्त और कोई नहीं। और यदि वह कुछ और देर ठहर गए तो देश-दुनिया के सारे काम रुक जाएंगे। उनकी अति व्यस्तता के झूठ का उद्देश्य उनके व्यक्तित्व का बेवजह बखान करने के लिए ही किया जाता है।

आज अधिकतर मुख्य अतिथि ऐसे होते हैं कि उन्हें इससे फर्क नहीं पड़ता कि किस विषय पर क्या बोलना है। वह जयवायु परिवर्तन से लेकर गिरते भूजल तक पर बोलने में सक्षम होते हैं। वह जब संबोधन करने के लिए माइक हाथ में थामकर मुश्किल से दो शब्द ही कहते हैं कि अचानक कहीं से तालियां बजने लगती हैं। तालियां सुनकर सामने बैठे श्रोता भी अचकचाकर तालियां बजाने लगते हैं। ऐसा करते हुए वह अपने आप से यह सवाल भी करते हैं कि मुख्य अतिथि ने ऐसी क्या बात कह दी कि लोग तालियां बजा रहे हैं और उन्हें समझ नहीं आई? संबोधन समाप्त होने के बाद कुछ लोग उनके साथ सेल्फी लेने में जुट जाते हैं। यह देखकर कुछ और लोग भी यह मानकर उनके साथ सेल्फी लेने लगते हैं कि हो न हो, यह कोई बड़ी हस्ती हैं।

response@jagran.com

ऊर्जा

सम्मोहन

सम्मोहन का अर्थ है- विमुग्धता। यह अवचेतन मन की वह प्रक्रिया है जिसके अधीन जीव आत्मदशा को विस्मृत कर स्वयं से नियंत्रण खो देता है। यद्यपि इसे सिद्ध करने के तंत्र-मंत्रादि कई साधन हैं। किंतु यह सम्मोहन का निकृष्टतम रूप है। वस्तुतः सात्विक श्रद्धा ही प्रगाढ़ होकर सम्मोहन का रूप धारण करती है। अतः सम्मोहन सात्विक वृत्तियों से उत्पन्न श्रद्धा का सुखद और स्वाभाविक परिणाम है। गोपियों और ग्वाल बालों का भगवान श्रीकृष्ण के प्रति सम्मोहन ऐसा ही था। वे उनके नैसर्गिक रूप-सौंदर्य और लोकोपकारी लीलाओं से स्वतः आकृष्ट होते थे।

यही सम्मोहन भगवान श्रीराम में भी है। गोस्वामी जी ने मानस में उनके सम्मोहन को प्रकट किया है। मां कौशल्या का उनके मुख में ब्रह्मांड दर्शन, धनुषयज्ञ में उपस्थित राजाओं और नर-नारियों का श्रीराम को अपनी भावनानुसार विविध रूपों में देखना जैसे अनेक प्रसंग इसी सम्मोहन के उदाहरण हैं। इसे कल्पना कहकर मिथक मानने वालों ने भी श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा के समय इसके प्रत्यक्ष दर्शन किए। जब अधिकांश भक्तों ने अवचेतन अवस्था में पहुंचकर भाव की उच्चतम दशा को प्राप्त कर लिया। नेत्रों से स्वतः अश्रुधारा झरने लगी। शरीर रोमांचित और पुलकित हो गया। समय जैसे ठहर गया। बेसुध कर देने वाले वे पल सामान्य नहीं थे। ऐसे वर्णनों में कल्पना की नहीं, भावदशा की पराकाष्ठा होती है।

वस्तुतः अंतरात्मा के तार हमारे पूर्वजों से जुड़े रहते हैं। वहां पहुंचने के लिए तंत्र-मंत्र की नहीं, प्रेमातिरेक की आवश्यकता होती है। अतिशय प्रेम ही तादात्म्य स्थापन का मूल कारण है। पूर्वज होने से श्रीराम हमारे अवचेतन मन में सदा विराजमान रहते हैं। श्रद्धा और भक्ति का सैलाब सारे तटबंध तोड़कर हमारी मनश्चेतना के तार उनसे जोड़ देता है और हम भाव विभोर हो जाते हैं। यही सम्मोहन की स्वाभाविक प्रक्रिया है।

डा. सत्यप्रकाश मिश्र

तथ्य-कथ्य

पिछले लोकसभा चुनाव में 50 प्रतिशत से अधिक वोट पाने वाले दलों के सांसद

स्रोत: एडीआर

अंतरिक्ष से आए जीवन के बीज

मुकुल व्यास

जिन कार्बनिक अणुओं ने हमारे ग्रह पर जीवन को जन्म दिया, वे प्राचीन धूमकेतुओं द्वारा यहां लाए गए थे

पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति कैसे हुई, यह आज भी एक बड़ा रहस्य है। कुछ विज्ञानियों का मानना है कि पृथ्वी पर जीवन का बीजारोपण अंतरिक्ष से हुआ था। अब एक नए अध्ययन से उनके इस विचार को बल मिला है। जापानी विज्ञानियों ने रीयुगु क्षुद्रग्रह के नमूनों की विस्तृत जांच करने के बाद निष्कर्ष निकाला है कि जिन कार्बनिक अणुओं ने हमारे ग्रह पर जीवन को जन्म दिया, वे प्राचीन धूमकेतुओं द्वारा यहां लाए गए थे। अंतरिक्ष चट्टान के नमूने जापान के हायाबुसा-2 मिशन द्वारा पृथ्वी पर लाए गए थे, जिसने 2018 में रीयुगु की यात्रा की थी। जापानी रोबोटिक यान द्वारा एकत्र की गई सामग्री हमारे सौरमंडल के बारे में सूचनाओं का एक बहुमूल्य खजाना साबित हो रही है। रीयुगु 870 मीटर चौड़ा पृथ्वी के निकट का क्षुद्रग्रह है। क्षुद्रग्रह मूल रूप से सौरमंडल के निर्माण के बाद बची हुई सामग्री हैं, इसलिए रीयुगु के नमूनों के विश्लेषण से यह जानकारी मिलेगी कि सौरमंडल के निर्माण के समय स्थितियां कैसी थीं। खगोल विज्ञानी यह निर्धारित करने में रुचि रखते हैं कि लगभग 4.6 अरब साल पहले सौरमंडल के गठन के तुरंत बाद उसमें कार्बनिक अणुओं को कैसे वितरित किया गया था। इनसे यह सुराग मिल सकता है कि जीवन कैसे और कहां उभरा। रीयुगु के नमूनों से पहले ही 20 से अधिक अमीनो एसिड, विटामिन बी 3 (नियासिन) और अंतर-नक्षत्रीय धूल के बारे में बहुत सी जानकारी मिल चुकी है।

जापान के विज्ञानियों को रीयुगु नमूनों में सूक्ष्म उल्का के प्रहारों के सुबूत भी मिले हैं। उनके निष्कर्षों के अनुसार ये सूक्ष्म उल्कापिंड संभवतः अन्य धूमकेतुओं से आए थे। चंद्रमा और अन्य वायुरहित पिंडों की तरह रीयुगु में कोई सुरक्षात्मक वायुमंडल नहीं है। इसका अर्थ यह हुआ कि इसकी सतह सीधे अंतरिक्ष के संपर्क में रहती है और अंतरग्रहीय धूल इकट्ठा कर सकती है। इसमें अपक्षय या क्षरण का अनुभव नहीं होता। इस वजह से इसकी सतह पर पिछले उल्का प्रहारों के कारण बने क्रेटर कई युगों के बीतने के बावजूद सावधानीपूर्वक संरक्षित हैं। इन प्रहारों से तीव्र गर्मी उत्पन्न होती है जो सतह पर कांच के पिघले हुए धब्बे छोड़ देती है। ये धब्बे अंतरिक्ष के वैक्यूम में तेजी से जम जाते हैं। उल्का प्रहारों के कारण क्षुद्रग्रह की सतह सामग्री की संरचना में परिवर्तन होता है। इससे इन प्रहारों के इतिहास के बारे में जानकारी मिलती है। सूक्ष्म उल्काओं में मौजूद कार्बनिक पदार्थ अंतरिक्ष से पृथ्वी पर लाए गए जीवन के छोटे बीज हो सकते हैं। उम्मीद यह है कि इस अध्ययन से जीवन के उद्भव से पहले चार अरब साल पहले पृथ्वी के चारों ओर अंतरिक्ष में प्राचीन कार्बनिक पदार्थों के परिवहन के बारे में अधिक जानकारी मिलेगी।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

चम्पाई मतलब

ईडी के फेर में फंसे हेमंत सोरेन ने जबसे चम्पाई सोरेन को झारखंड सरकार की कमान सौंपी है, तभी से इस शब्द के अर्थ तलाशने का सिलसिला तेज हो गया है। झारखंड से ज्यादा बाहर वाले जानना चाह रहे हैं कि चम्पाई कौन हैं? पहली बार रात दस बजे जब खबर ब्रेक हुई कि हेमंत की जगह चम्पाई मुख्यमंत्री होंगे तो दिल्ली के मीडिया को लगा कि जरूर कोई महिला होगी। बाद में जब पता चला कि चम्पाई महिला नहीं, पुरुष हैं तो चम्पा की तरह पीलापन लिए हुए मुलायम एवं आकर्षक होने की कल्पना कर ली गई, लेकिन जब मीडिया में उम्रदराज एवं सफेद बालों वाले पुरुष की तस्वीर आने लगी तो सोच बदलना पड़ा। ऐसा नहीं कि झारखंड में किसी कम विख्यात (या अज्ञात) शख्स के मुख्यमंत्री बनने के बाद उसके व्यक्तित्व की इतनी खूबसूरत कल्पना पहली बार की गई है। करीब डेढ़ दशक पहले भी जब निर्दलीय मधु कोड़ा ने भाजपा के अर्जुन मुंडा को हटाकर सत्ता संभाली थी तो दूसरे प्रदेश के लोगों एवं मीडिया ने उन्हें महिला ही समझ लिया था। बाद में पता चला कि मधु कोई महिला नहीं, बल्कि मूंछ वाले पुरुष हैं। खैर, तस्वीर देखने के बाद जब चम्पाई की शख्सीयत की तस्वीर साफ हो गई तो अब उनके नाम के अर्थ तलाशे जा रहे हैं।

राजरंग

सांसत में मंत्रीजी

भाजपा के एक केंद्रीय मंत्री की जान सांसत में फंसी हुई है। मंत्रीजी राज्यसभा के सदस्य हैं और मार्च में उनका कार्यकाल समाप्त हो रहा है। चर्चा है कि पार्टी कई राज्यसभा सांसदों को लोकसभा के चुनावी मैदान में उतार सकती है। भाजपा के जिन सांसदों का कार्यकाल मार्च में समाप्त हो रहा है उनमें नौ मंत्री भी शामिल हैं। माना जा रहा है कि पार्टी फरवरी के मध्य तक राज्यसभा के लिए उम्मीदवारों का एलान कर सकती है। मंत्री महोदय सांस थाम कर इसका इंतजार कर रहे हैं। यदि राज्यसभा के लिए उम्मीदवारों की सूची में उनका नाम हुआ तो लोकसभा चुनाव लड़ने की नौबत नहीं आएगी। सूची में नाम नहीं आने की स्थिति में उन्हें मैदान-ए-जंग के लिए तैयार होना पड़ेगा। वैसे धर्मेंद्र प्रधान जैसे कुछ मंत्री ऐसे भी हैं, जिन्होंने पहले से ही लोकसभा चुनाव लड़ने का एलान कर रखा है और इसके लिए क्षेत्र में तैयारी भी शुरू कर दी है।

अगली पारी की चिंता

ऐसे तो यह बजट अंतरिम था और कहा गया कि इसीलिए कोई अहम घोषणा नहीं की गई, लेकिन सरकार के अंतिम साल होने की वजह से सांसदों से लेकर मंत्रियों तक में बजट पर अपनी प्रतिक्रिया देने की होड़ दिखी। इसकी मुख्य वजह थी कि कोई भी मंत्री या सांसद इस बात को लेकर आश्वस्त नहीं है कि नई सरकार में मंत्री बनने का मौका किसे दिया जाएगा। सत्ताधारी दल के कई सांसदों के टिकट पर तलवार लटकी है तो कुछ वर्तमान मंत्रियों के सामने भी अगली पारी में मौके मिल पाएंगे इसको लेकर संशय है। जाहिर है ऐसे तमाम नेता विशेषकर बजट पर बढ़-चढ़कर प्रतिक्रिया देने के बहाने अखबार एवं टीवी चैनलों पर जगह पाने की होड़ में दिखे। शायद इस उम्मीद में कि बजट के जयगान से ही अगली पारी की सियासत का कहीं रास्ता निकल जाए।

सावधान और सतर्क

संसद में पिछले सत्र के दौरान दर्शक दीर्घा से कूदकर सुरक्षा में सेंध लगाने के प्रयास के बाद उसकी सुरक्षा अब कई गुना बढ़ा दी गई है। बजट सत्र के दौरान संसद में सुरक्षा और सतर्कता का गजब आलम दिखाई दे रहा है। संसद की सुरक्षा में सेंध लगाने वाले दर्शक दीर्घा से सदन में कूदे थे, इसे देखते हुए दर्शक दीर्घा के साथ-साथ प्रेस दीर्घा तक की पहली लाइन की सीटें हटा दी गई हैं। आधा दर्जन सुरक्षा कर्मी लगातार दीर्घा में बैठे सुरक्षा की टोह लेते रहते हैं, ताकि अब चूक से भी चूक न हो। हालांकि चाक चौबंद सुरक्षा से कई बार मुश्किलें भी खड़ी हो रही हैं। पहले सिर्फ महिला पत्रकारों का ही बैग बाहर रखवा लिया जाता था, लेकिन अब पुरुष पत्रकार भी पत्रकार दीर्घा में अपना वालेट, गाड़ी की चाबी जैसे सामान नहीं ले जा सकते हैं। सिर्फ नोट बुक और पेन ही अंदर ले जा सकते हैं।

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।

****

आजकल

अनंत विजय
anant@nda.jagran.com

हिंदी पर 'हिंदुस्तानी' की प्रेतछाया

स्वाधीनता के पश्चात अनेक नेताओं ने हिंदी के बजाय उर्दू को प्राथमिकता दी। देश के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद ने भी ऐसा ही किया। परंतु उनके बारे में ऐसा लिखा कम ही गया, बल्कि उन्हें एक ऐसे नेता के रूप में प्रस्तुत किया गया जो भारतीय शिक्षा एवं संस्कृति के लिए आजीवन संघर्ष करता रहा। जबकि हिंदी को पीछे रखते हुए मौलाना ने हिंदुस्तानी भाषा को सदैव आगे रखने का उपक्रम किया। लिहाजा अब तक का जो नैरेटिव है उस पर अमृतकाल में नए सिरे से चर्चा होनी चाहिए

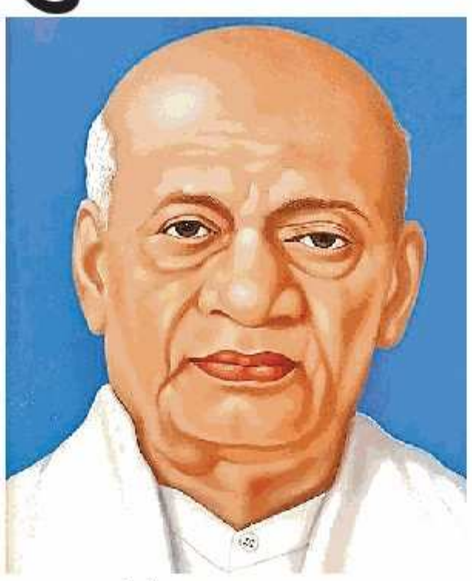

सरदार वल्लभभाई पटेल।

मौलाना अबुल कलाम आजाद।

कहीं एक व्यंग्योक्ति पढ़ी थी कि वामपंथी इतिहासकारों के पास ज्योतिष विज्ञान से अधिक शक्ति होती है। ज्योतिषि किसी का भविष्य बदलने का दावा कर सकते हैं, लेकिन वामपंथी इतिहासकार तो अतीत बदल देते हैं। इस बात का स्मरण दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के संस्थापक डा. नगेन्द्र की आत्मकथा, अर्धकथा पढ़ते समय आया। दरअसल डा. नगेन्द्र ने कुछ दिनों तक आल इंडिया रेडियो में भी नौकरी की थी। उस समय सूचना और प्रसारण मंत्री सरदार पटेल थे। मौलाना अबुल कलाम आजाद शिक्षा मंत्री थे, जब 1947 में डा. नगेन्द्र ने आल इंडिया रेडियो का पद ग्रहण किया। उन्होंने लिखा, 'उस समय रेडियो में हिंदी की काफी दुर्दशा थी। वार्ता, नाटक, संगीत आदि सभी अनुभागों में उर्दू का बोलबाला था। नाम हिंदुस्तानी था, पर भाषा उर्दू थी। यह हिंदुस्तानी शुद्ध उर्दू ही थी जिसमें क्रियाओं और विभक्तियों के अतिरिक्त जो वस्तुतः हिंदी और उर्दू में समान ही होती है, हिंदी का कोई लक्षण नहीं था। अंतरराष्ट्रीय के लिए वैनुलअकवामी, प्रधानमंत्री के लिए वजीरे आजम, गृह मंत्री और विदेश मंत्री आदि के लिए वजीरे दाखिला और वजीरे खालिजा जैसे शब्दों का प्रयोग होता था। स्वागत, धन्यवाद जैसे शब्दों का प्रयोग भी वर्जित था। कभी कभी पंजाबी भाषा के अनुवादक आभारी के स्थान पर धन्यवादी जैसे शब्दों का प्रयोग कर दिया करते थे, जिससे तथाकथित हिंदुस्तानी का रूप और भी विकृत हो जाता था।'

उस समय रेडियो के महानिदेशक पीसी चौधुरी थे। उनकी पीठ पर लौहपुरुष सरदार पटेल का हाथ था। वह रेडियो की हिंदी सेवा की भाषा को लेकर संवेदनशील थे। रेडियो में दिल्ली और पंजाब के लोगों की संख्या अधिक थी। केंद्र सरकार के कर्मचारियों का बड़ा वर्ग था जो न हिंदी जानता था न उर्दू। जब रेडियो के हिंदी सेवा में भाषा को लेकर आवश्यक सुधार होने लगे तो ये सभी लोग मिलकर बुखारीकालीन उर्दूनिष्ठ हिंदुस्तानी के सहज रूपांतरण के सभी प्रकार के प्रयत्नों का तीव्र विरोध करने लगे थे। डा. नगेन्द्र लिखते हैं, 'प्रो. बुखारी के समय आल इंडिया रेडियो में एंग्लो मुस्लिम संस्कृति का वातावरण था, इसलिए वहां के अधिकांश अधिकारी, जिनमें हिंदू भी थे, किसी प्रकार का साहित्यिक-सांस्कृतिक परिवर्तन नहीं चाहते थे और तरह तरह की प्रशासनिक बाधाएं उत्पन्न करते थे।' डा. नगेन्द्र धुन के पक्के थे। उन्हें भाषा संबंधी विसंगतियों को दूर करने के लिए रेडियो में लाया गया था। नगेन्द्र चाहते थे कि संगीत, नाटक, वार्ता आदि सभी घटकों में भारतीय संस्कृति का प्रवेश हो। इन जगहों पर भारतीय संस्कृति का प्रवेश भाषा के साथ ही संभव था। उस समय रेडियो में उच्चतर स्तर यानी विभागीय मंत्री सरदार पटेल की नीतियों को लागू करना था। इसमें उस समय एक बड़ी बाधा उतपन्न हो गई। बाधा यह कि जिनके हाथ में क्रियान्वयन का दायित्व था उन्हें भाषा की व्यावहारिक समस्याओं का ज्ञान नहीं था।

बात हो रही थी रेडियो की भाषा की। डा. नगेन्द्र ने स्पष्ट रूप से लिखा है कि हिंदी विरोधियों की अंतिम शरण भूमि थी तत्कालीन शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद का कार्यालय। वहां से तरह तरह की शिकायतें आती रहती थीं। जाहिर है इस तरह की बातों को शिक्षा मंत्री का प्रश्रय था। एक बार रेडियो पर मौलाना आजाद को वजीरे तालीम की जगह शिक्षा मंत्री कहा गया। एक कर्मचारी नगेन्द्र के पास पहुंचे और कहा कि मौलाना साहब के आफिस से फोन आया था और वहां से पूछा जा रहा है कि क्या उनका मंत्रालय बदल दिया गया है। नगेन्द्र कहते हैं कि ये भले मजाक हो, लेकिन ये रेडियो की भाषा पर कटाक्ष जैसा था। इसी तरह से एक बार बुलेटिन में 'वे' शब्द के प्रयोग पर मौलाना के कार्यालय से आपत्ति आई। उस पर नगेन्द्र को उप-महानिदेशक के सामने सफाई पेश करनी पड़ी थी। उन्होंने बताया कि हिंदी में एकवचन में 'वह' और बहुवचन में वे का प्रयोग किया जाता है। उर्दू में एकवचन और बहुवचन दोनों में 'वो' का प्रयोग होता है, जो हिंदी व्याकरण की दृष्टि से गलत था। नगेन्द्र इस तरह की आपत्तियों से इतने परेशान हो गए थे कि उन्हें गांधी जी की शरण में जाना पड़ा। गांधी जी को उन्होंने एक बुलेटिन की भाषा दिखाई। गांधी जी ने उसे पढ़कर कहा था कि इसमें तो सब ठीक है। यह बात जब रेडियो महा-निदेशालय पहुंची तो सबको संतोष हुआ।

एक शिक्षा मंत्री किसी भाषा को लेकर इतना दुराग्रही हो तो क्या कहा जा सकता है। आरंभ में इतिहासकार और ज्योतिष का जो उदाहरण दिया है उसका संदर्भ यही था। मौलाना आजाद की जो छवि गढ़ी गई वह बहुत ही उदार, सहिष्णु, सर्वसमावेशी और सभी का सम्मान करनेवाले व्यक्ति के तौर पर किया गया। इस तरह की बातें भी पीढ़ियों से बताई गईं और अब भी बताई जा रही हैं। अकादमिक जगत में उनका एक अलग ही रूप दिखता है। केवल नगेन्द्र ही नहीं, जोश मलीहाबादी ने भी अपनी आत्मकथा, यादों की बारात में मौलाना के बारे में एक प्रसंग का उल्लेख किया है। उससे भी संकेत मिलता है कि मौलाना आजाद उर्दू और मुसलमानों की पक्षधरता के लिए किसी भी हद तक जा सकते थे। जोश मलीहाबादी भारत विभाजन के बाद पाकिस्तान चले गए, लेकिन अन्यान्य कारणों से वहां टिक न सके। वहां से लौटे तो नेहरू ने उन्हें भारत सरकार की पत्रिका 'आजकल' में संपादक के तौर पर नौकरी दे दी। एक दिन जोश मलीहाबादी नेहरू से मिलने पहुंचे। नेहरू ने उनसे पूछा कि आप अपने महकमे के मंत्री सरदार पटेल से मिले कि नहीं? जोश मलीहाबादी ने कहा, 'अभी तक नहीं।' नेहरू ने मुलाकात तय करवा दी। जोश साहब सरदार पटेल से मिले। जब वह सरदार पटेल से मिलकर उनके बंगले से बाहर निकले तो मौलाना आजाद दिखे। उन्होंने आवाज दी और जब उनकी मोटर में बैठे तो कहा, 'जोश साहब! आप और सरदार पटेल।' इसके पहले भी जब नेहरू ने जोश मलीहाबादी को 'आजकल' की नौकरी की पेशकश की थी तो मौलाना ने नेहरू को आगाह किया था कि सोच समझकर जोश साहब को आश्वासन दें, यह महकमा सरदार पटेल का है। जोश मलीहाबादी की आत्मकथा में इस तरह के कई प्रसंग हैं जिससे यह ध्वनित होता है कि मौलाना उर्दू और मुसलमानों की पक्षधरता करते थे और सरदार पटेल से नफरत, अन्यथा दर्दनाक तेवर क्यों होता।

इतिहासकारों ने क्या किया, सरदार पटेल को कट्टर हिंदूवादी बताकर उन्हें आधुनिक भारत के इतिहास में परिधि पर रखने का प्रयास किया। दूसरी तरफ मौलाना आजाद के बारे में अच्छा लिखकर उन्हें एक ऐसे नेता के तौर पर पेश किया जो विभाजन के बाद भारत में रुका और भारतीय शिक्षा एवं संस्कृति के लिए जीवन के अंतिम समय तक संघर्ष करता रहा। उर्दू को हर हालत में बनाए रखने और हिंदी पर उसे वरीयता देने के उनके मन का विश्लेषण नहीं हुआ। जिस तरह से हिन्दुस्तानी का प्रेत हिंदी पर मंडराता रहा उसे मौलाना ने और शक्ति दी। स्वाधीनता के अमृतकाल में इन विषयों पर अकादमिक जगत में चर्चा हो और जो नैरेटिव सेट किया गया था, उसे चुनौती दी जानी चाहिए।

खरी खरी

आइए, टिकट हम देते हैं...

पूरन सरमा

ठंड समाप्त होते ही किसी भी समय आगामी लोकसभा चुनाव की तिथियां जारी हो सकती हैं। कुछ राजनीतिक दल भले ही आपसी गठबंधन और सीट शेयरिंग के मसले को अभी तक सुलझा नहीं पाए हैं, परंतु कुछ दल तो चुनावी तैयारी में पूरी तरह से जुट चुके हैं। कुछ दल तो ऐसे भी हैं जो निरंतर चुनावी मूड में ही रहते हैं।

इस बीच टिकट प्राप्त करने के लिए उम्मीदवारों में मारा-मारी मची हुई है। चुनाव में खड़े होने वाले को पार्टी के नए कायदे-कानून समझाए जा रहे हैं। भीड़ कम करने के लिए स्वच्छ छवि की दुहाई दी जा रही है। जनता में उत्तम छवि तथा सही चरित्र वाले को टिकट देने की पार्टियां आए दिन घोषणाएं कर रही हैं। लेकिन उत्तम छवि और उत्तम चरित्र वाले घरों में दुबके पड़े हैं। सारे लुच्चे, लफंगे और छंटे हुए असामाजिक तत्व एवं आपराधिक दागी लाइन में लगे हुए हैं। गबन-घोटाले तथा सरकारी पूंजी में सेंध लगाने वाले भी इसी भीड़ में हैं। लेकिन मैं इन सबसे बेखबर हूं। मुझे पता है कि पार्टी हाईकमान टिकट फेयर रूप में आफर नहीं करेगा तो मैं चुनाव का टिकट ब्लैक में खरीद लूंगा। उसके दो कारण हैं, एक तो मैं काली कमाई का मालिक हूं। मैंने सही-गलत तरीकों से अकूत संपत्ति एकत्रित कर रखी है और आजकल चुनाव पैसा खर्च करके ही जीता जाता है। छवियों से चुनाव जीतने का चलन होता तो पता नहीं राजनीति में बेईमान होते भी या नहीं? चुनाव में मैं अपना कालाधन पार्टी को देता हूं और चुनाव के समय चुनाव सीमा से हजार गुना धन खर्च करूंगा तो मैं नहीं तो क्या 'आप' का उम्मीदवार जीतेगा। बल्कि मैं तो बिचौलिया भी हूं, पार्टी कार्यालय में बायोडेटा लेकर घूमने के बजाय आप मुझसे मिल सकते हैं, पूरी गारंटी के साथ मैं आपको टिकट दिलवाऊंगा।

मेरे पास दागी से दागी उम्मीदवार भी टिकट के लिए संपर्क कर सकता है। पार्टी हाईकमान मेरी शक्तियों से भली प्रकार से परिचित हैं। अपने क्षेत्र का नामी-गिरामी लफंगा हूं। पता नहीं मेरे ऊपर देशभर में कितनी जगहों पर कितनी अदालतों में मामले लंबित हैं और कितनी बार जेल यात्रा कर आया हूं, लेकिन सबमें रिश्वत-कमीशन के बूते पर निर्दोष साबित होता आया हूं। राजनीति में मैंने कोई कच्ची गोलियां नहीं खेली हैं। चुनाव कोई मिशन तो है नहीं, यह तो एक स्टंट है, जिसे अपना कर एकाध महीने की भाग-दौड़ से जीता सकता है।

मेरे एक उम्मीदवार मित्र पिछले दो-तीन माह से बड़े-बड़े बुद्धिजीवियों से अपना बायोडेटा बनवा रहे हैं। मैंने कहा भी कि इन काजग पुर्जों के चक्कर के बजाय मेरे चक्कर लगाओ, मैं दिलवाऊंगा चुनाव का टिकट। लेकिन उनके थोड़ा अन्ना का भूत सवार है, अतः वे छवि से टिकट लेने व चुनाव में जीतने में विश्वास रखते हैं। उन्हें पता नहीं है, यह अन्नाओं का या केजरीवालों का युग नहीं है। यह राजनीति विशुद्ध बदमाशों और लफंगों की रणभूमि है, जिसमें यही पैंतरेबाजी काम आती है। पार्टियों के हाईकमान कौनसे दूध के धुले हैं। वे कौनसे नेहरू, गांधी या पटेल हैं? वे भी हमारे वाले ग्रास रूट से होकर पार्टी में पोजीशन ले सके हैं। उन्हें सब पता है वोटर को कैसे और कौन लुभा सकता है। यह भी पता है कि ये परिवर्तन की बातें करने वाले मतदान करने ही नहीं आते। मतदान के लिए तो भौतिक आडंबर अपनाकर वोटर को पोलिंग बूथ तक मनुहारपूर्वक ले जाया जाता है और बूथ से निकलते ही सौ जूते और हुक्के पानी प्रस्तुत किया जाता है। क्योंकि पांच वर्ष तक उसकी कोई प्रासंगिकता नहीं है। अभी जो मारा-मारी मची हुई है, उसमें तो मुझे मेरे अकेले दोस्त के सिवा कोई उम्मीदवार दिखाई नहीं दे रहा।

(लेखक व्यंग्यकार हैं)

पोस्ट

जब कर्पूरी ठाकुर को भारत रत्न मिला तो कहा गया कि इनके पास अपने लोग नहीं हैं, इसीलिए हमारे लोगों को सम्मान देना पड़ रहा है। जब लालकृष्ण आडवाणी को भारत रत्न मिला तो कहा जा रहा कि ये केवल अपने लोगों को ही अवार्ड देते हैं।

अनुपम के. सिंह@anupamnawada

गुरु दक्षिणा। सही समय पर, सही शिक्षक को। आडवाणी जी ने व्यक्तिगत रूप से इस देश को नए नेताओं की एक पूरी पीढ़ी गढ़ कर दी। प्रमोद महाजन से लेकर सुषमा स्वराज तक, मनोहर पर्रिकर से अरुण जेटली तक, राजनाथ सिंह से वेंकैया नायडू तक और वर्तमान प्रधानमंत्री से लेकर वर्तमान राष्ट्रपति तक। आधुनिक भारत के लोकतांत्रिक इतिहास में इतनी बड़ी तादाद में अगली पीढ़ी के नेता तैयार करने का काम किसी और नेता ने नहीं किया। सही मायने में गुरु दक्षिणा का कार्यक्रम संपन्न हुआ है।

यशवंत देशमुख@YRDeshmukh

मौत का झूठा नाटक कैंसर से जूझ रहे और उसे मात देने वालों के साथ किया गया मजाक है। पूनम पांडे और उनके साथ इस झमे में शामिल लोगों के खिलाफ कार्रवाई की जानी चाहिए।

पल्लवी घोष@_pallavighosh

अकेले पूरी टीम का बोझ उठाया और दोहरा शतक जड़ डाला। क्या जबरदस्त खिलाड़ी है यशस्वी जायसवाल

सौरभ त्रिपाठी@Saurabh_LT

रचनाकर्म

कोलाहल से विचारों की नीरवता की ओर

सुकांत सौरभ

हमारे जीवन को कौन नियंत्रित कर रहा है? क्या हम अपने जीवन में होने वाली सभी घटनाओं के लिए किसी अन्य को उत्तरदायी मानते हैं या हम स्वयं को प्रमुख कारक के रूप में देखते हैं, यह निर्धारित करता है कि हमारा जीवन कैसा चल रहा है। हमारे मन का शोर हमारे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। विचलित मन हमारे दुख का सबसे बड़ा कारण है। यह मन हमें यह देखने से रोक देता है कि हमारे सामने क्या संभावनाएं हैं। यह जीवन में आने वाले नए अवसरों को देखने से वंचित कर देता है। निक ट्रेंटन की पुस्तक 'द ओवरथिंकिंग क्योर' इन्हीं मूलभूत समस्याओं के निदान से भरपूर है। इस पुस्तक में केवल पांच अध्याय हैं, परंतु इसमें बताए समाधान हमें अपने दिमाग को व्यवस्थित करने, अपने विचारों को नियंत्रित करने और अपनी मानसिक आदतों को परिवर्तित करने के लिए मार्गदर्शित करते हैं।

पुस्तक यह समझकर लिखी गई है कि हम प्रतिदिन किन समस्याओं से जूझ रहे हैं। कैसे हमने स्वयं को थका देने वाली स्थिति में डाल दिया है। चिंता और तनाव के जाल में हम कैसे अपने दिमाग पर नियंत्रण खो रहे हैं और बुरे विचारों के जाल में फंसते चले जा रहे हैं। लेखक निक ट्रेंटन इस पुस्तक के माध्यम से हमें हमारे बुरे विचार के जाल को तोड़कर अपने बारे में सोचने और महसूस करने के तरीके को पूरी तरह से बदलने के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

जो लोग शांत स्वभाव के होते हैं, हमने उनके बारे में अक्सर ऐसा सुना है कि उनमें कोई एक्स फैक्टर है, जो उन्हें इतना संयमित और स्वयं पर नियंत्रण रखने में सहयोग करता है। लेखक निक ट्रेंटन ने ऐसे लोगों की विशेषता पर बहुत बल दिया है। उनके अनुसार, ऐसे लोग सक्रिय होते हैं। अर्थात वे अपने जीवन को निर्देशित करने और आकार देने के लिए परिस्थितियों पर निर्भर नहीं होते हैं, बल्कि सक्रिय दायित्व लेते हैं और अपने दम पर काम करते हैं। वे अपने कार्यक्षेत्र पर, वे क्या चाहते हैं और वे उन चीजों को कैसे प्राप्त कर सकते हैं, इस पर ध्यान केंद्रित करते हैं। स्वाभाविक रूप से, उनका रवैया उन्हें एक ऐसे मानसिक ढांचे में रखता है, जो समस्याओं को सुलझाने और अवसरों की खोज पर केंद्रित होता है। मुख्य रूप से, जब भी उनके जीवन पथ की बात आती है, तो वे ही निर्णय लेते हैं। लेखक ने इस पुस्तक में ऐसे मानसिक ढांचे को विकसित करने के उपायों पर विस्तृत जानकारी दी है।

सचेतनता (माइंडफुलनेस) जीवन में शांति की भावना पैदा करने में मदद करती है। पुस्तक में सचेतनता आधारित तकनीक 'एसीटी' (एक्शन कमिटमेंट थिरेपी) पर विस्तृत चर्चा की गई है। यह विशेष रूप से भावनाओं को प्रबंधित व उन्हें नियंत्रित करने का उपाय है। यह दो शब्दों से बना है। एक्शन का अर्थ है कार्य करना और कमिटमेंट का प्रतिबद्ध रहना। इस तकनीक में हम उस चीज को स्वीकार करते हैं, जिसे हम नियंत्रित नहीं कर सकते। वहीं, हम अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए जो कर सकते हैं, उस कार्य के प्रति प्रतिबद्ध रहते हैं।

अक्सर, हम एक पूर्वाग्रह बना लेते हैं और उसके अनुसार लोगों के बारे में सोचने लगते हैं। इसके पीछे हमारी उनके प्रति गलत अवधारणा होती है। हम उन्हें जज कर लेते हैं और अर्थहीन विवाद का यह मुख्य कारण है। लेखक ने ऐसे विवाद से बचने के लिए बहुत ही सरल उपाय बताया है। अत्यधिक रक्षात्मक होने से उन्होंने बचने की सलाह दी है।

पुस्तक हमें अधिक सोचने से बचने के उपायों को बताती है, साथ ही वर्तमान में रहने और जागरूक रहने के लिए प्रेरित करती है। यह पुस्तक उन रामबाण उपायों को वर्णित करती है, जिसका उपयोग कर हम अधिक सोचने से उत्पन्न होने वाली समस्याओं से बच सकते हैं।

यह पुस्तक वैचारिक प्रवाह को नियंत्रित करने व अपनी आदतों को परिवर्तित करने के लिए मार्गदर्शन करती है। उन उपायों को भी वर्णित करती है, जिनका उपयोग कर हम अधिक सोचने से उत्पन्न होने वाली समस्याओं से बच सकते हैं

पुस्तक: द ओवरथिंकिंग क्योर
लेखक: निक ट्रेंटन
प्रकाशक: मंजुल प्रकाशन
मूल्य: 299 रुपये

ब्रह्महत्या का रहस्य

ब्रजबिहारी

साम्राज्यों के उत्थान-पतन, राजा-महाराजाओं के वैभवशाली जीवन, उनके प्रेम एवं घृणा की कहानियों के साथ राजमहलों के षड्यंत्रों की कहानियों में रुचि रखने वाले पाठकों को टीवी महालिंगम का पहला उपन्यास 'ब्रह्महत्या' निश्चित रूप से पसंद आएगा। नैसर्गिक सौंदर्य समेटे हिमालय की वादियों से लेकर मिथिला के गौरवशाली साम्राज्य तक फैले इस कथा संसार का विस्तार व्यापक और गहरा है। उपन्यास अपनी गति और शिल्प से पाठकों को बांधे रखता है। हिमालय और मिथिला के बीच में नैमिष नामक जंगल भी है, जिसके अंदर ऐसी घटनाएं होती हैं, जो पाठकों को रोमांच के कगार पर पहुंचा देती हैं।

सोलह महाजनपदों के महाराजा मिथिला नरेश त्रिविक्रम शौर्य अपने पूर्वजों के स्थापित विशाल साम्राज्य के स्वामी हैं, लेकिन उनके जीवन में शांति नहीं है। पत्नी और बेटे की मृत्यु के बाद उसका जीवन सुरा और सुंदरियों में डूब चुका है। महाराजा का भाई अजित शौर्य राजकाज से ऊबा हुआ है और जिंदगी को अपनी शर्तों पर जीना चाहता है। राजमहल में विधवा राजमाता भी हैं, जो साध्वी का जीवन जी रही हैं।

एक दिन मिथिला की सभा में एक ब्राह्मण आता है और साम्राज्य पर आ रहे खतरे की चेतावनी देकर गायब हो जाता है। कौन है वह ब्राह्मण? क्या है उसकी भविष्यवाणी? जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, रहस्य की परतें एक-एक कर खुलती जाती हैं। उपन्यास का शिल्प कसा हुआ है। शैली सहज और भाषा प्रवाहमयी है। उपन्यास की घटनाओं और दृश्यों के वर्णन सजीव हैं। इसमें प्रेम और दया के भाव जगाने वाले पात्र हैं, तो घृणा और जुगुप्सा जगाने वाले चरित्र भी। कई स्थानों पर तो कथाक्रम इतना वीभत्स हो जाता है कि पाठक के लिए यह विश्वास करना कठिन हो जाता है कि क्या सचमुच ऐसे लोग भी होते हैं, जो प्रतिशोध की अग्नि में जलकर अमानुष हो जाते हैं।

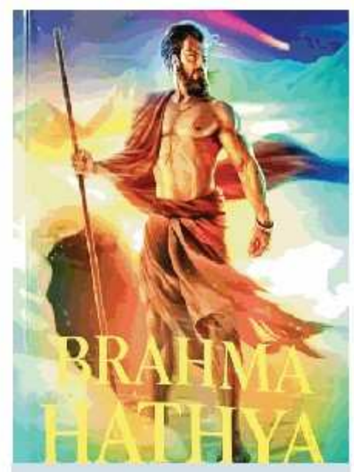

पुस्तक: ब्रह्महत्या
लेखक: टीवी महालिंगम
प्रकाशक: वेस्टलैंड बुक्स
मूल्य: 499 रुपये

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या कांग्रेस को अलग देश वाले बयान पर अपने सांसद डीके सुरेश के खिलाफ कार्रवाई करनी चाहिए?

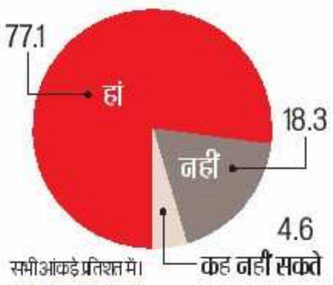

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

क्या अपनी मौत की फर्जी खबर प्रचारित करने के लिए पूनम पांडे के खिलाफ कार्रवाई की जानी चाहिए?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

डाका मुस्लिम वोट पर डाल रहे हो जाय,
उनके ही घर में उन्हें बुद्धू रहे बनाय।
बुद्धू रहे बनाय न ममता इतनी सीधी,
तुमको सबक सिखाय रहेंगी अब तो दीदी।
राजनीति में लोग बांटकर पड़े इलाका,
नहीं बनेंगे दोस्त अगर डालोगे डाका।

– ओमप्रकाश तिवारी

अद्भुत, अलौकिक, अप्रतिम कुंभ

यतीन्द्र मिश्र

अध्यात्म, परंपरा, संस्कृति और विरासत के विविध आयामों को सहेजता अथाह, अनंत, असीमित कुंभ मेला भारतीय लोक में गहराई से रचा-बसा है। यह हमारी सनातन संस्कृति ही है कि हम धर्म, जाति, संप्रदाय से ऊपर उठकर साहचर्य, सद्भाव और सहयोग को स्थान देते हैं। कुंभ इसी सनातन परंपरा को चरितार्थ करता ऐसा ही महापर्व है। धनंजय चोपड़ा की 'भारत में कुंभ' कुंभ से संबंधित कथा एवं इतिहास की सरिता में डुबकी लगाते हुए इसके सांस्कृतिक, धार्मिक, पारंपरिक, व्यावसायिक जैसे विविध दृष्टिकोणों पर अपना विचार प्रस्तुत करती है। पुस्तक कुल 12 अध्यायों में आकार लेती है, जिसमें हमें भारत के अलग-अलग स्थानों जैसे- प्रयाग, उज्जैन, हरिद्वार, नासिक में लगने वाले कुंभ मेले के लगभग समस्त पहलुओं की झलक मिलती है। कुंभ का सामान्य अर्थ 'घड़े' से जुड़ा है। 'कुंभ' मिट्टी और पानी से गूंथकर चाक पर पृथ्वी की तरह घूमकर अग्नि में तपकर दोनों किनारों पर संकरा और बीच में विस्तार लिए हुए एक जीवन यात्रा को संदर्भित करता है। शायद यही कारण है कि जीवन के दुखों, अनाचार, अत्याचार, अशिक्षा और असमानता से मुक्ति की आकांक्षा सहेजे जन-सैलाब शताब्दियों से इस अंतहीन यात्रा को दोहराता आ रहा है।

पुस्तक में कुंभ की महत्ता का वर्णन इस प्रकार है- 'कुंभ ही घट है, कुंभ ही समुद्र, कुंभ ही पृथ्वी, कुंभ ही सूर्य और कुंभ ही शरीर है। कुंभ ही संस्कृतियों का संगम है, कुंभ ही परंपराओं की थाती है, कुंभ ही सरोकारों का विस्तृत फलक है और कुंभ ही संस्कारों का समुच्चय है। कुंभ ही प्रकृति, कुंभ ही समरस जीवन की धारा है, कुंभ ही ऊर्जा का स्रोत है और कुंभ ही लोक का केंद्र है। लोक-परलोक, चेतना-अवचेतना, सगुण-निर्गुण, आत्मा-परमात्मा, भीतर-बाहर, बोधअबोध जैसी अनगिनत युक्तियों को परिभाषित करने में कुंभ शामिल है।' पुस्तक सर्वप्रथम वेदों, पुराणों, ज्योतिष आदि में वर्णित कुंभ के पक्षों की चर्चा करती है। यहीं कुंभ की आध्यात्मिक तरंगों, सामूहिक संस्कृति और सामाजिक संवेदनाओं का जिक्र अपनी उपस्थिति दर्ज कराता है। कहा जाता है कि- कुंभ में त्रिदेव हैं तो सप्त सागर और सप्त दीप भी समाहित हैं।

इस महापर्व में संपूर्ण भारत धर्म, जाति, क्षेत्र, भाषा, शिक्षा, अर्थ जैसी चीजों की ऊंच-नीच से परे होकर, एक जैसा दिखता है। इस तरह का भाव, सौहार्द, सद्भाव, उत्साह, ललक और साहचर्य विरले ही देखने को मिलता है। कुंभ के आयोजन का एक पक्ष यह भी है कि देश-काल-परिस्थिति को ठीक से समझा जाए और उससे निपटने के बहुआयामी रास्तों की खोज की जाए। कुंभ हमेशा से ही सामाजिक विमर्शों का केंद्रबिंदु रहा है। पुस्तक में प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन, नासिक का कुंभ मेला, साथ ही वृंदावन, राजिम, कुंभकोणम पर भी गहनता से चर्चा मिलती है।

यह कृति प्राचीन काल, मध्यकाल, ब्रिटिश काल एवं स्वतंत्र भारत में कुंभ की लोकप्रियता का बखान करते हुए दिखती है। यहीं तीसरे अध्याय में कई जगह छोटी-बड़ी कविताएं और दोहे अपनी उपस्थिति दर्शाते हैं। यहां ये पंक्ति देखें- 'सतुआ और पिसान बांधकर कुंभ नहाने/ नर-नारी घर पुर तज कर प्रयाग आए थे/ देखा कोटि संख्य जनता सामने पड़ी है/ गंगा-यमुना की धारा के साथ अड़ी है।' लोभ, मोह, अहंकार, क्रोध आदि का त्याग कर सहस्त्रों की संख्या में लोग इस पावन पर्व में शामिल होते हैं और धर्म, संस्कृति, संस्कार, परंपरा, लोकाचार, व्यापार, मनोरंजन की अनगिनत आकांक्षाओं की पूर्ति करते हैं। यूनेस्को (संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन) ने कुंभ मेले को 'मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत' की सूची में शामिल किया है।

यूनेस्को के अनुसार, 'कुंभ मेला पृथ्वी पर तीर्थयात्रियों का सबसे बड़ा शांत-सहज जन-समूह होता है।' श्रद्धालु विश्वास करते हैं कि गंगा स्नान करने से पाप व जीवन-मरण के चक्र से मुक्ति मिल जाती है। देशभर से करोड़ों लोग बिना किसी निमंत्रण के कुंभ स्थल पर पहुंचते हैं।

अध्याय 'अखाड़ों का रोमांच' में विभिन्न संप्रदायों से संबंधित अखाड़ों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। जैसे दशनामी संन्यासी, बैरागी संन्यासी, उदासीन संन्यासी और निर्मला संन्यासी। इन सभी संप्रदाय के अपने-अपने अखाड़े होते हैं। कुंभ में नागा साधुओं की भूमिका पर लेखक ने एक संपूर्ण अध्याय समर्पित किया है। कल्पवास और कल्पवासी के अर्थ, माहात्म्य, विधि-विधान आदि पहलुओं पर समर्पित अध्याय में यह भी जिक्र है कि भारत के प्रथम राष्ट्रपति ने किस प्रकार कल्पवास किया था। समकालीन परिदृश्यों में मार्केट, मीडिया और मेला, वर्चुअल होता कुंभ, यहीं पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और हाईटेक कुंभ, साथ ही साथ इस परिवर्तनशील वातावरण में कुंभ के अथाह जन-मानस के भीड़-प्रबंधन की आवश्यकता पर केंद्रित पाठ मौजूद है।

पूरी किताब में लेखक कुंभ मेले से जुड़े अपने संस्मरणों के माध्यम से बड़ी कुशलतापूर्वक हमें कुंभ की यात्रा पर ले जाते हैं, जिसे पढ़ते वक्त हम इस महा-उत्सव की दुनिया में खुद को पाते हैं। वास्तव में यह पर्व अपने आप में खगोल विज्ञान, ज्योतिष, आध्यात्मिकता, कर्मकांडी परंपराओं, सामाजिक व सांस्कृतिक रीति-रिवाज को समाहित करके और उन्हें व्यवहार में लाकर स्वयं को ज्ञान में अत्यंत समृद्ध बना लेता है। सही अर्थों में अद्भुत, अलौकिक, अप्रतिम कुंभ।

यह कृति प्राचीन काल और मध्यकाल से लेकर ब्रिटिश काल एवं उसके बाद स्वतंत्र भारत में चार विभिन्न स्थानों पर आयोजित होने वाले कुंभ की लोकप्रियता को विस्तार से दर्शाती है...

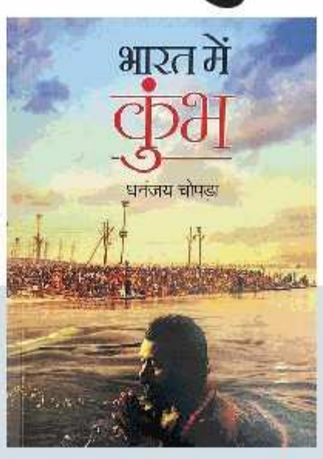

पुस्तक: भारत में कुंभ
लेखक: धनंजय चोपड़ा
प्रकाशक: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली
मूल्य: 390 रुपये

****

मोदी की राम-राम का मतलब

तेजी से पनपते हुए इस अलगाव को तभी रोका जा सकता है, जब हम चेहरों पर चस्पां मुखौटों की असलियत पहचान कर आगे का रास्ता निर्धारित करें। नरेंद्र मोदी यही कर रहे हैं। वे जानते हैं, ढकोसलों से किसी का भला नहीं होता। अपनी पहचान को कायम रखते हुए दूसरे की पहचान को स्वीकार करने में भला क्या हर्ज?

स्कैन करें
आजकल स्तंभ के तहत प्रकाशित आलेखों के लिए

शशि शेखर

क्या आपने संसद के बजट सत्र से ऐन पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का मीडिया उद्बोधन सुना? उन्होंने अपने वक्तव्य की शुरुआत और समापन 'राम-राम' से किया। इसके तत्काल बाद राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु के अभिभाषण में भी राम मंदिर का जिक्र आया। क्या केंद्र सरकार राम नाम के भरोसे अगले चुनावी समर में उतरने जा रही है?

कोई कुछ भी कहे, पर मुझे ऐसा नहीं लगता। भरोसा न हो, तो राष्ट्रपति के अभिभाषण के अगले दिन वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने जो अंतरिम बजट पेश किया, उस पर नजर डाल देखिए, सब साफ हो जाएगा। मोदी और उनके सहयोगी तीसरे कार्यकाल की प्राप्ति के लिए इतने आश्वस्त हैं कि इस बार कोई लोक-लुभावन घोषणा नहीं की गई। पिछली बार चुनाव से पहले किसानों को प्रति वर्ष छह हजार रुपये की राशि देने की घोषणा की गई थी। इसके अलावा मध्यवर्ग के लिए आयकर की सीमा बढ़ाने के साथ असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को पेंशन का तोहफा दिया गया था। यह दांव काम कर गया था और एनडीए पहले से ज्यादा सदस्यों के साथ लोकसभा पर काबिज हो गया। साफ है, प्रधानमंत्री इस बार नई दिल्ली के सर्वोच्च सदन में वापसी के मुद्दे पर पूरी तरह आश्वस्त हैं। आप चाहें, तो अंतरिम बजट को सरकार के आत्मविश्वास का दस्तावेज मान सकते हैं। यही वजह है कि मैं आज की चर्चा चुनाव के बजाय प्रधानमंत्री के 'राम-राम' पर केंद्रित रखना चाहता हूं।

उत्तर भारत के ग्रामीण इलाकों को जानने वाले जानते हैं कि आपसी अभिवादन के लिए राम-राम से ज्यादा प्रचलित शब्द कोई और नहीं है। आज जिन लोगों को इन अल्फाजों में किसी धर्म विशेष की झलक दिखाई पड़ती है, उन्हें बताने में हर्ज नहीं कि चार दशक पहले तक इस सम्बोधन से किसी को परहेज न था। इस खूबसूरत तथ्य को समझाने के लिए अपने बचपन के एक अनुभव से आपको रूबरू कराना चाहूंगा।

आजकल

हमारे गांव में महज एक मुस्लिम परिवार रहता था। अलादीन खान साहब उसके मुखिया हुआ करते थे। वे विनम्र स्वभाव, पर रोबीली शख्सियत के स्वामी थे। उनकी ओर से वार्तालाप की शुरुआत हमेशा राम-राम से हुआ करती। पिता ने सिखाया था कि अगर मुस्लिम परिचितों से मिलो, तो उन्हें 'आदाब' बोला करो, पर अलादीन साहब आदाब का जवाब भी राम-राम से देते। क्या उन पर कोई सामाजिक दबाव था? कतई नहीं। वे जिस रवायत का हिस्सा थे, वहां ये शब्द सदियों से आम आदमी की भावसत्ता का प्रतीक हुआ करते थे। धार्मिक विभाजनों और विग्रहों का इससे कोई वास्ता नहीं था। तीन दशक पहले हिमाचल प्रदेश में समान अनुभव हुआ था। धर्मशाला के जिला सूचना विभाग में एक चपरासी थे - रामलाल। बेहद शिष्ट और हरदम मदद के लिए तत्पर। बाद में जिला सूचना अधिकारी ने बताया था कि मुसलमान होने के बावजूद वह रामलाल कहलाना पसंद करते हैं।

जो नहीं जानते, उन्हें बता दूं। भारतीय सेना की कुछ इकाइयों के जवान आज भी अपने अधिकारियों और सहयोगियों का सत्कार इन्हीं दो लफ्जों के साथ करते हैं। धर्म और संप्रदाय इसमें कभी बाधा नहीं बनते।

यहां एक किस्सा याद आता है। सन 1971 की जंग के बाद भारत ने पाकिस्तानी फौज के 90 हजार से ज्यादा सिपाहियों और अधिकारियों को युद्धबंदी बना लिया था। ये लोग देश की विभिन्न छावनियों में रखे गए थे। उसी दौरान एक भारतीय जवान से पाकिस्तानी फौज के वरिष्ठ अफसर ने पूछा कि तुम नाम से तो मुसलमान हो, पर अपने अफसरों को सैल्यूट करते वक्त राम-राम जी बोलते हो। ऐसा क्यों? तुम्हें तो 'अस्सलाम वालेकुम' बोलना चाहिए। हमारे जवान का जवाब था कि जब तक मैं ड्यूटी पर होता हूं, तब तक यही बोलता हूं। यह हमारी रेजीमेंट की परंपरा है और हममें से हर कोई इस पर गर्व करता है। ड्यूटी के बाद मैं किससे क्या बोलूं, इस पर कोई पाबंदी नहीं है।

पाकिस्तानी अधिकारी और उसके सहयोगी इस जवाब पर हक्का-बक्का रह गए थे।

पता नहीं, वे समझ पाए थे या नहीं कि एक सा डीएनए और समान इतिहास के बावजूद इस वैषम्य को सियासी स्वार्थ के लिए जतन के साथ गढ़ा गया था। वे जिनकी संतानें थे, उन्होंने मजहब के आधार पर मुल्क का बंटवारा कुबूल किया था, जबकि हिन्दुस्तानी सैनिक के वालिदैन मौका मिलने के बावजूद अपनी सरजमीं और संस्कारों को छोड़कर नहीं गए। पाकिस्तान धर्म के आधार पर बना, इसीलिए समय के साथ धार्मिक आग्रह वहां की जेहनियत पर हावी होते चले गए। भारत ने सर्वधर्म समभाव का रास्ता चुना और तमाम मतभेदों के बावजूद इस राह पर आगे बढ़ता गया।

भारत और पाकिस्तान की आर्थिक और सामाजिक स्थिति के बीच बढ़ता वैषम्य इसी का नतीजा है।

हो सकता है, आपमें से कुछ दोस्त अलादीन खान साहब और अनाम सिपाही के किस्सों से यह मतलब निकाल बैठें कि हिंदुओं की बहुसंख्या वाले देश में अल्पसंख्यकों को रंग-ढंग बदलना पड़ जाता है। सहोदर पाकिस्तान इसका जीता-जागता उदाहरण है। वहां कई हिंदू अल्पसंख्यक अपने बच्चों का नामकरण ऐसे करते हैं कि अगर कोई सिर्फ नाम से मजहब जानने की कोशिश करे, तो आसानी से समझ न सके कि सामने खड़ा शख्स किस धर्म को मानता है। भारत में ऐसा नहीं है। हम साथ रहते हैं और एक-दूसरे पर असर डालते हैं। 1970 के दशक के आखिर में मेरी ममेरी बहन की शादी एक इंजीनियर से हुई। बहनोई साहब जब पहली बार हमारे घर आए, तो उनका पहला दिन यादगार बन गया। उन्होंने सुबह की शुरुआत 'आदाब' से की, क्योंकि उनकी पढ़ाई-लिखाई अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में हुई थी। किसी ने इसे अस्वाभाविक नहीं माना।

क्या आपको नहीं लगता कि वह मासूमियत रास्ता भटक रही है?

इस लेख की शुरुआत में मैंने इसीलिए 1980 के दशक का उल्लेख किया था। इसी दौरान 'राम जन्मभूमि मुक्ति आंदोलन' आरंभ हुआ था। उस जद्दोजहद के दौरान हुई हिंसा और ध्वंस बचाया जा सकता था, अगर सियासतदां इसे ईमानदारी से कानून और अदालतों के हवाले कर सिर्फ अपनी शपथ का पालन करते रहते। ऐसा नहीं किया गया। हमने आस्था को वोट बैंक की राजनीति में बदलने की कोशिश की, जिसका दुष्परिणाम सामने है।

तेजी से पनपते हुए इस अलगाव को तभी रोका जा सकता है, जब हम चेहरों पर चस्पां मुखौटों की असलियत पहचान कर आगे का रास्ता निर्धारित करें। नरेंद्र मोदी यही कर रहे हैं। वे जानते हैं, ढकोसलों से किसी का भला नहीं होता। अपनी पहचान को कायम रखते हुए दूसरे की पहचान को स्वीकार करने में भला क्या हर्ज? यहां याद दिलाना ठीक रहेगा कि अब तक किसी प्रधानमंत्री ने अपना संबोधन राम-राम या सत श्री अकाल से शुरू नहीं किया है। मोदी ने सत्ता संभालने के बाद कई काम पहली बार किए। उनकी यह भाव मुद्रा इस सिलसिले की अगली कड़ी है।

@shekharkahin
@shashishekhar.journalist

जीना इसी का नाम है

इनास मुजामिल
सामाजिक कार्यकर्ता, सूडान

हैवानियत से छिड़ी लड़ाई में मजलूमों की एक आवाज

इनास की मां ने सातों बेटियों की जिम्मेदारी खुद उठाने की सोची। मगर सूडानी समाज को गवारा न हुआ। इस परिवार को घर से बेदखल करने का दबाव बनाया गया। मगर मां मजबूती से खड़ी रहीं। उनकी इस सफल लड़ाई ने ही इनास को दमन के खिलाफ खड़े होने का साहस दिया।

जब कोई इंसान हैवान बन जाता है, तो यौन हिंसा उसका सबसे आसान हथियार होती है। उत्तरी अफ्रीकी देश सूडान भी इसका भुक्तभोगी है। भले ही 1956 में यह मुल्क अहिंसक तरीके से ब्रिटिश साम्राज्यवाद से मुक्त हुआ, लेकिन 15 से अधिक सैन्य तख्तापलट देखने के बाद इसे अब मानवता के लिहाज से एक 'दुःस्वप्न' कहा जाता है। फिलहाल यहां दो सैन्य गुटों में हिंसक टकराव है, जिसमें से एक का नेतृत्व सूडान के सेना प्रमुख अब्देल फतेह अल-बुरहान कर रहे हैं, तो दूसरे का रैपिड सपोर्ट फोर्स (अर्द्धसैनिक बल) के मुखिया मोहम्मद हमदान दगालो। सूडान की सत्ता पर काबिज होने की उनकी यह जंग आम सूडानियों पर भारी पड़ रही है। आलम यह है कि अप्रैल, 2023 से जारी इस गृह युद्ध में 80 लाख से अधिक लोग पलायन कर चुके हैं और लाखों भूख से मुकाबिल हैं। इसमें महिलाओं और बच्चियों का अपना संघर्ष है, क्योंकि दोनों गुटों के लड़ाके उनका यौन उत्पीड़न कर रहे हैं। इनास मुजामिल इन्हीं मजलूमों की आवाज हैं।

इनास का जन्म राजधानी खार्तुम में हुआ, लेकिन यहां की पितृसत्तात्मक व्यवस्था से उनका पाला तब पड़ा, जब उनके पिता का देहांत हुआ। उस वक्त वह सिर्फ 13 साल की थीं। अपने पति को खोने के बाद इनास की मां ने सातों बेटियों की जिम्मेदारी खुद उठाने की सोची। मगर सूडानी समाज को यह गवारा न हुआ। इस परिवार को अपने ही घर से बेदखल करने का दबाव बनाया जाने लगा। मगर मां मजबूती से खड़ी रहीं। उनकी इस सफल लड़ाई ने ही इनास को दमन के खिलाफ खड़े होने का साहस दिया।

इनास का यह जज्बा मुसलसल कायम रहा। साल 2002 में उनका दाखिला खार्तुम यूनिवर्सिटी में हुआ और स्नातक स्तर पर विषय था कृषि अर्थशास्त्र, लेकिन वह यहां लैंगिक समानता, खासतौर से महिलाओं के लिए छोटे-छोटे उद्यमों के प्रबंधन पर मुखर रहीं। इसके लिए उन्होंने कई चर्चाएं आयोजित कीं। दारफुर नरसंहार पर उनका अध्ययन विश्वविद्यालय का बेहतरीन शोध-पत्र घोषित किया गया।

इन सबसे मानवाधिकारों को लेकर इनास की राय दिनोंदिन मजबूत होती गई। वह कहीं अधिक खुलकर लोकतंत्र और नारी सशक्तिकरण की हिमायत करने लगीं। वह लोकतंत्र समर्थकों की एक मजबूती बन गई थीं। हालांकि, उनको यह भी इल्म था कि ऐसी कोई मुहिम महिलाओं की मजबूत भागीदारी के बिना सफल नहीं हो सकती, तो वह घर-घर जाकर लोगों से मिलने लगीं। यह कोई आसान काम नहीं था। इसमें उनको न सिर्फ पुरुष-वर्ग के ताने सुनने को मिले, बल्कि बंधनों की आदी हो चुकी महिलाओं के विरोध भी झेलने पड़े। लिहाजा, उन्होंने नई पीढ़ी पर ध्यान लगाना शुरू किया।

साल 2017 की 'सूडानीज फीमेल साइकलिस्ट

इनीशिएटिव' इसमें एक अहम कड़ी साबित हुई। यूं तो 1950 के दशक से ही सूडान के लोग साइकिल चला रहे थे, लेकिन इस पर पुरुषों और लड़कों का ही अधिकार था। इनास और उनकी दोस्त रुवैदा इब्राहिम ने महिलाओं को आगे आने के लिए प्रेरित किया। शुरुआत में चंद लड़कियां ही इस पहल से जुड़ीं, पर बाद में इसमें 2,000 से अधिक भागीदारों के आने से सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की हिस्सेदारी बढ़ाने की मांग अधिक मुखर होने लगी। यह ऐसा वक्त था, जब इनास अहफाद यूनिवर्सिटी फॉर वुमेन से मास्टर डिग्री की पढ़ाई भी कर रही थीं और अपने सामाजिक कर्तव्यों के निर्वहन में भी जुटी थीं। अपनी संस्था 'मदनिया' की नींव भी उन्होंने इसी दौरान डाली, जिसका मुख्य मकसद था, लोगों, खासकर महिलाओं की सार्वजनिक भागीदारी बढ़ाना।

सैन्य तानाशाह उमर अल-बशीर के खिलाफ जन-विद्रोह ने इनास को वैश्विक पहचान दी। 2018-19 की इस क्रांति में हजारों महिलाएं इनास की एक आवाज पर उठ खड़ी हुईं। उनके हथियार थे, रसोईघर के सामान। यह एक सफल आंदोलन रहा और बशीर सत्ता से बेदखल कर दिए गए। नागरिक सरकार बनाने की कवायद तेज हुई, लेकिन यह अपने अंजाम तक पहुंच पाती कि 2023 की सैन्य बगावत ने फिर से इस देश को हिंसा की दलदल में धकेल दिया। महज एक रात में ही पूरी तस्वीर बदल गई। बुरहान और दगालो के लड़ाके एक-दूसरे के खून के प्यासे हो गए। घरों, शिक्षण संस्थानों, यहां तक कि अस्पतालों को भी निशाना बनाया जाने लगा। वे चुन-चुनकर उन्हें भी मारने लगे, जो 2018-19 की क्रांति में शामिल थे। औरतों के साथ बलात्कार मानो सामान्य बात हो गई। इससे बड़ी संख्या में सूडानी पड़ोसी देशों में भागने को मजबूर हुए। इनास भी उनमें से एक थीं।

इनास बताती हैं, 'मैं खार्तुम छोड़ना नहीं चाहती थी, पर जब देखा कि पड़ोस के मकान में खाना बना रही महिला को गोलियों से भून दिया गया, तो मुझे भी तुरंत घर छोड़ना पड़ा।' उन्होंने इथियोपिया जाने की सोची। हर दिन वे सभी एक से दूसरे शहर भागते रहे। राजधानी अदीस अबाबा पहुंचने में उन्हें नौ दिन लगे। यहां कई रातें उन्होंने आंखों में गुजारीं।

ऐसा नहीं है कि अब वह शांत हो गई हैं। अरबी, डच और अंग्रेजी भाषा में निपुण इनास अनवरत तमाम वैश्विक मंचों पर सूडान के नागरिकों की आवाज बुलंद कर रही हैं। वह ऑनलाइन माध्यमों से जुड़कर सूडान में जरूरतमंदों तक मदद भी पहुंचा

अरबी, डच और अंग्रेजी भाषा में निपुण इनास अनवरत तमाम वैश्विक मंचों पर सूडान के नागरिकों की आवाज बुलंद कर रही हैं। वह सूडान में जरूरतमंदों तक मदद भी पहुंचा रही हैं। उनके मित्रों के मुताबिक, अब भी उन्हें 20-20 घंटे काम करते देखा जा सकता है।

रही हैं। उनके मित्रों के मुताबिक, अब भी उन्हें 20-20 घंटे काम करते देखा जा सकता है। सूडानी महिलाओं का भरोसा बनाए रखने का वह हरसंभव प्रयास कर रही हैं। इस कारण उनकी झोली में कई पुरस्कार भी आए हैं, लेकिन यह उनकी मंजिल नहीं। उनके मुताबिक, जब तक सूडान एक सभ्य समाज नहीं बन जाता, उन्हें कहां चैन है। इससे यही लगता है, मशहूर अमेरिकी कवि रॉबर्ट फ्रॉस्ट ने उन जैसी हस्तियों के लिए ही लिखा है, अभी तो मीलों मुझको, मीलों मुझको चलना है।

प्रस्तुति : हेमेन्द्र मिश्र

वो लम्हा

पॉल एर्लिच
नोबेल विजेता चिकित्सा वैज्ञानिक

सेहत के लिए जादुई गोली की तलाश

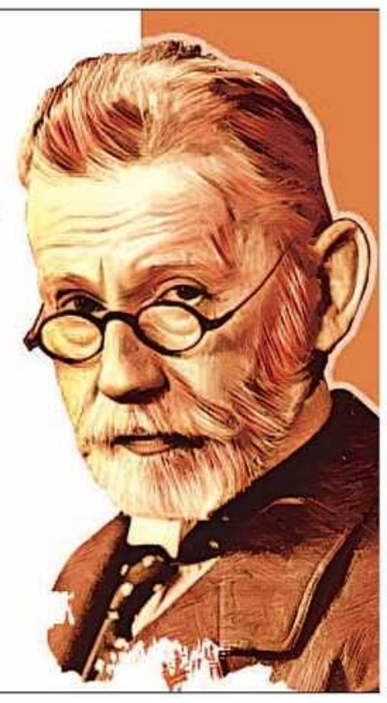

वह दिन-रात शोध में लगे रहते थे। विषाणुओं को जीवाणुओं के बीच से कैसे पकड़कर अलग किया जाता है? विषाणु कैसे नौ दो ग्यारह होने की कोशिश में लगे रहते हैं? विषाणु खुद को जीवाणुओं के बीच कैसे छिपाते हैं और कैसे मौका मिलते ही आबादी बढ़ाते हैं।

संगत बुरी हो, तो तबाही में उतार देती है और अच्छी संगत से इंसान महानता की सीढ़ियां सरपट चढ़ने लगता है। खासकर बच्चों पर सिर्फ इंसानी संगत ही नहीं, बल्कि अन्य चीजों व मशीनों का सबसे ज्यादा असर होता है। उस जर्मन यहूदी बालक के मन को भी एक मशीन ने मोह लिया। क्या गजब मशीन थी, किसी भी चीज को अनेक भागों में बांट देती थी। मानव कोशिकाएं हों या रक्त की बूंदें, वह मशीन बहुत सहजता से एक कण से अनेक कण और अनेक कणों से सैकड़ों कण निकालने में माहिर थी। जब ऐसी मशीन से पाला पड़ा, तब बालक की उम्र बमुश्किल नौ साल रही होगी, वह बार-बार मशीन को निहारता था। देर तक गहराई से समझता था कि मशीन में कौन-सा यंत्र क्या काम करता है, कैसे करता है। मशीन का नाम माइक्रोटोम्स था, माइक्रोबायोलॉजी से जुड़ी वह मशीन उस जमाने में चंद लोगों के पास ही थी, इसलिए भी वह उस स्कूली बालक को बहुत लुभा रही थी। मशीन के मालिक थे उस बालक के एक ममेरे भाई, उम्र में बस 19 थे, पर उसी उम्र में असाध्य रोगों के पीछे लग गए थे। वह दोस्त भी थे, तो उस मशीन के बारे में बताते हुए थकते नहीं थे। विस्तार से बताते थे कि इस मशीन के जरिए दुनिया में तमाम रोगों के विषाणुओं की पड़ताल मुमकिन है।

उस दुर्लभ मशीन को देख बालक ने तय कर लिया कि अब ऐसी ही मशीनों के साथ रहना है और दुनिया के तमाम असाध्य रोगों के विषाणुओं के पीछे हाथ धोकर पड़ जाना है। पता नहीं, कैसे-कैसे रोग पनप रहे हैं। डॉक्टरों के पास सबका इलाज नहीं है, पर माइक्रोटोम्स से इलाज खोजना संभव है। सोच की दशा से पढ़ाई की दिशा भी बदली और दुनिया को बेहतरीन चिकित्सक-वैज्ञानिक पॉल एर्लिच नसीब हुए।

वह दिन-रात शोध में लगे रहते थे। विषाणुओं को जीवाणुओं के बीच से कैसे पकड़कर अलग किया जाता है? विषाणु कैसे नौ दो ग्यारह होने की साजिश में लगे रहते हैं? विषाणु खुद को जीवाणुओं के बीच कैसे छिपाते हैं और कैसे मौका मिलते ही अपनी आबादी का विस्फोट करते हैं। विषाणु कैसे रंग बदलते हैं और उनके रंग-ढंग को कैसे नियंत्रित किया जा सकता है? श्वेत और लाल रक्त कोशिकाओं को समझने और अलग करने की विधि का आविष्कार उन्होंने ही किया। उन्होंने ही बताया कि मानव कोशिकाओं में रासायनिक प्रतिक्रियाएं लगातार होती हैं और सही रासायनिक एजेंटों का उपयोग रोगग्रस्त कोशिकाओं को ठीक करने या संक्रामक विषाणुओं को नष्ट करने के लिए किया जा सकता है, इस सिद्धांत ने चिकित्सा निदान और उपचार विज्ञान में नई क्रांति को जन्म दिया। दुनिया के अनेक वैज्ञानिक रक्त में रोग खंगालने के कार्य में जुट गए।

दिन-रात प्रयोग में लगे रहने वाले एर्लिच ने तंत्रिका संबंधी विकारों के उपचार में मेथिलीन ब्लू के उपयोग की भी खोज की। टाइफायड, बुखार और नेत्र रोग उपचार को भी उन्होंने आसान बनाया। हालांकि, दुर्भाग्य देखिए, उन्हें तपेदिक से निरंतर जूझना पड़ा। एक बार तपेदिक की वजह से उन्हें प्रयोग छोड़कर बैठने के लिए मजबूर होना पड़ा, पर मानव शरीर में फेरा लगाते विषाणुओं ने उन्हें फिर ललकारा और पॉल फिर उनके खिलाफ युद्ध में उतर आए। तब तक कैंसर असाध्य रोग बन चुका था, इस महारोग की चुनौती को भी पॉल एर्लिच (1854-1915) ने स्वीकार किया और यह सिद्ध किया कि कैंसर जैसे घातक विष को भी एक तरह के रसायन या विष की यथोचित मात्रा से परास्त किया जा सकता है। एक ऐसा विष या द्रव्य तैयार किया जा सकता है, जो मानव शरीर में जाकर विषाणुओं पर ही प्रहार करे। उपचार के ऐसे तत्वों की खोज आसान नहीं थी, पर एक-दो ऐसे तत्वों की खोज में वह सफल हुए। यह उस प्रसिद्ध कीमोथैरेपी का आविष्कार था, जिसे आज कैंसर के खिलाफ राम वाण की तरह इस्तेमाल किया जाता है। पॉल एर्लिच ने 115 साल पहले ही बता दिया था कि सही समय पर कैंसर का पता लग जाए, तो कीमोथैरेपी से जीवन बचाया जा सकता है।

दुनिया हर साल 4 फरवरी को कैंसर दिवस मनाती है और पॉल एर्लिच को याद करती है। उन्हें चिकित्सा शास्त्र में योगदान के लिए साल 1908 में नोबेल से सम्मानित किया गया था। वह एक जादुई गोली की तलाश में लगे थे, ताकि एक गोली से ही उपचार संभव हो जाए। दुनिया से जाते-जाते उन्होंने जादुई गोली या मैजिक बुलेट का स्वरूप तैयार कर लिया था। उनके पास समय कम था और काम बहुत ज्यादा। युवा उन्हें घेर लेते थे और पूछते थे कि आपने इतने आविष्कार कैसे किए? वह बिना समय गंवाए आगे की राह बताते थे, 'अनुसंधान में सफलता के लिए चार चीजें जरूरी हैं : भाग्य, धैर्य, कौशल और पैसा।'

प्रस्तुति : ज्ञानेश उपाध्याय

साहित्य का यह नया नॉरमल

तिरछी नजर

सुधीश पचौरी हिंदी साहित्यकार

एक वही था, जो साहित्य का एकमात्र 'सेकुलर सहारा' था- पक्का लोकतंत्री था, उसी से उम्मीद थी, लेकिन वह भी एक बार फिर से लुढ़क गया।

आह! वो दिन याद आ रहा है, जब 'विश्व कविता' समारोह करने हेतु उसके 'उदार दरबार' में गुहार लगाने के लिए कई नामी-गिरामी कवि दौड़ लगा रहे थे, खबर भी 'ब्रेक' हो चुकी थी कि विश्व कविता होने वाली है और हम सभी जल्द ही विश्व कवि होने जा रहे हैं, लेकिन एक दिन खबर आई कि वह सेकुलर जी अचानक नॉन-सेकुलर हो गए हैं।

सच! उस दिन मेरे विश्व कवि बनने का वह आखिरी चांस भी मारा गया! बाकी जो दरबार बचे, वे या तो वीर रस पसंद रहे या भक्ति रस वाले रहे, जबकि अपन ठहरे ब्रेख्त, लोर्का की परंपरा के सौ टक्का लोकतंत्री कवि! लेकिन अंदर की बात यह है कि मैं फिर भी पता करता रहता हूं कि अब कौन सा सेकुलर शरणदाता बचा है, जो हिंदी साहित्य को शरण दे सकता है।

काश! साहित्य का स्वर्णकाल, यानी रीतिकाल फिर से लौट आता और साहित्य के प्रति संवेदनशील कोई राजा, बादशाह, अमीर-उमरा मिल जाता, जो मुझे अपनी शरण में ले लेता और मैं उसके चाहे अनुसार हर रोज एक दोहा, सवैया लिखता और हर एक के बदले हजार डॉलर पाता! इतिहास बताता है कि साहित्य तब तक नहीं पनपता है, जब तक कोई शरणदाता न हो! कवि और शरणदाता के बीच आलोचक नाम की कोई 'थर्ड पार्टी' न हो, तो और अच्छा!

ऐसे ही आलोचक मुक्त दिनों में एक से एक बढ़िया साहित्य लिखा गया, जब से साहित्य में मीनमेख निकालने वाले आए हैं, तब से ही साहित्य बर्बाद हुआ है, इसीलिए मैं तलाशता रहता हूं कि कहीं कोई मिल जाए एक ठो शरणदाता और उसका दरबार!

यूं भी हर बड़ा साहित्यकार किसी न किसी का दरबारी रहा है, भले ऊपर से कहता रहे कि हमारी कलम आजाद कलम है, गुलाम नहीं। मेरा मानना है कि बिना 'फाइनेंस' के तो कोई 'लिटफेस्ट' तक नहीं हो सकता, इसीलिए हर लिटफेस्ट का कोई न कोई स्पॉन्सर या प्रायोजक या फाइनेंसर होता है और आजकल के लिटफेस्टों के लिए तो एक-दो दर्जन तक कॉरपोरेट और एमएनसीज होते हैं, जिनको आप उनके छपे ब्रांड चिह्नों से जान सकते हैं। वही लिटफेस्ट का खर्चा-पानी चलाते हैं, तब जाकर हमारे जैसे साहित्यकार पांच सितारा होते हैं।

साहित्य का यही 'इकोनॉमिक फील्ड' है, जो इन दिनों बड़े कॉरपोरेटों से, मल्टीनेशनल कॉरपोरेटों के प्रायोजन से बनता है, यह उन कवियों को भी जगह देता है, जो अपने साहित्य की हर लाइन में पूंजीवाद हो बर्बाद, एमएनसीज हो बर्बाद, साम्राज्यवाद हो बर्बाद और फासिज्म हो बर्बाद जैसे नारे लगाते दिखते हैं। ऐसे सभी रणबांकुरे आजकल साल में छह महीने ऐसे लिटफेस्टों में अपने को 'इनवाइट' दिलाने के लिए निकले रहते हैं और फिर सारे नारे भूलकर मंचों पर विराजते हैं। इस प्रक्रिया में साहित्य की थैरेपी भी होती रहती है, सारा 'अशरण साहित्य' लिटफेस्टों में और फिर सोशल मीडिया में अपनी 'उछल-कूद' मचाकर और इस तरह अपना गुस्सा निकालकर हलका होता रहता है, तब भी साहित्य के प्रति उदार कॉरपोरेट और एमएनसीज उसको शरण देते रहते हैं।

लिटफेस्ट के बाद साहित्यकार अपने साहित्य के कपड़े-लत्ते तक सोशल मीडिया पर हर समय फहराते और सुखाते रहते हैं। उधर उनके आजू-बाजू, फेसबुक, यू-ट्यूब, एक्स(ट्विटर) आदि पर बहुत से एमएनसीज भी अपने ब्रांड चिह्न बीच-बीच में फहराते रहते हैं और 'कलम की आजादी' के लिए लड़ने वाले सारे लड़ाकों को उनके व्यूअर्स के हिसाब से पैसे भी देते रहते हैं!

इस तरह साहित्य का कॉरपोरेटीकरण होता रहता है, लेकिन इसे लेकर एक भी साहित्यकार चूं नहीं करता है।

मित्रे! यही साहित्य का 'नया नॉरमल' है!

कटाक्ष

राजेंद्र धोड़पकर

भाजपा की शिखर यात्रा के 'सारथी'

बंटवारे का दंश लिए करीब 20 साल का एक नौजवान कराची से दिल्ली आया और भारत की राजनीति को नई दिशा देने वाला 'सारथी' बन गया। लाल कृष्ण आडवाणी भाजपा की शिखर यात्रा की नींव के पत्थर भी बने और उस पर लहराने वाला झंडा भी। उनके पग संघर्ष के पथ पर कभी नहीं डगमगाए।

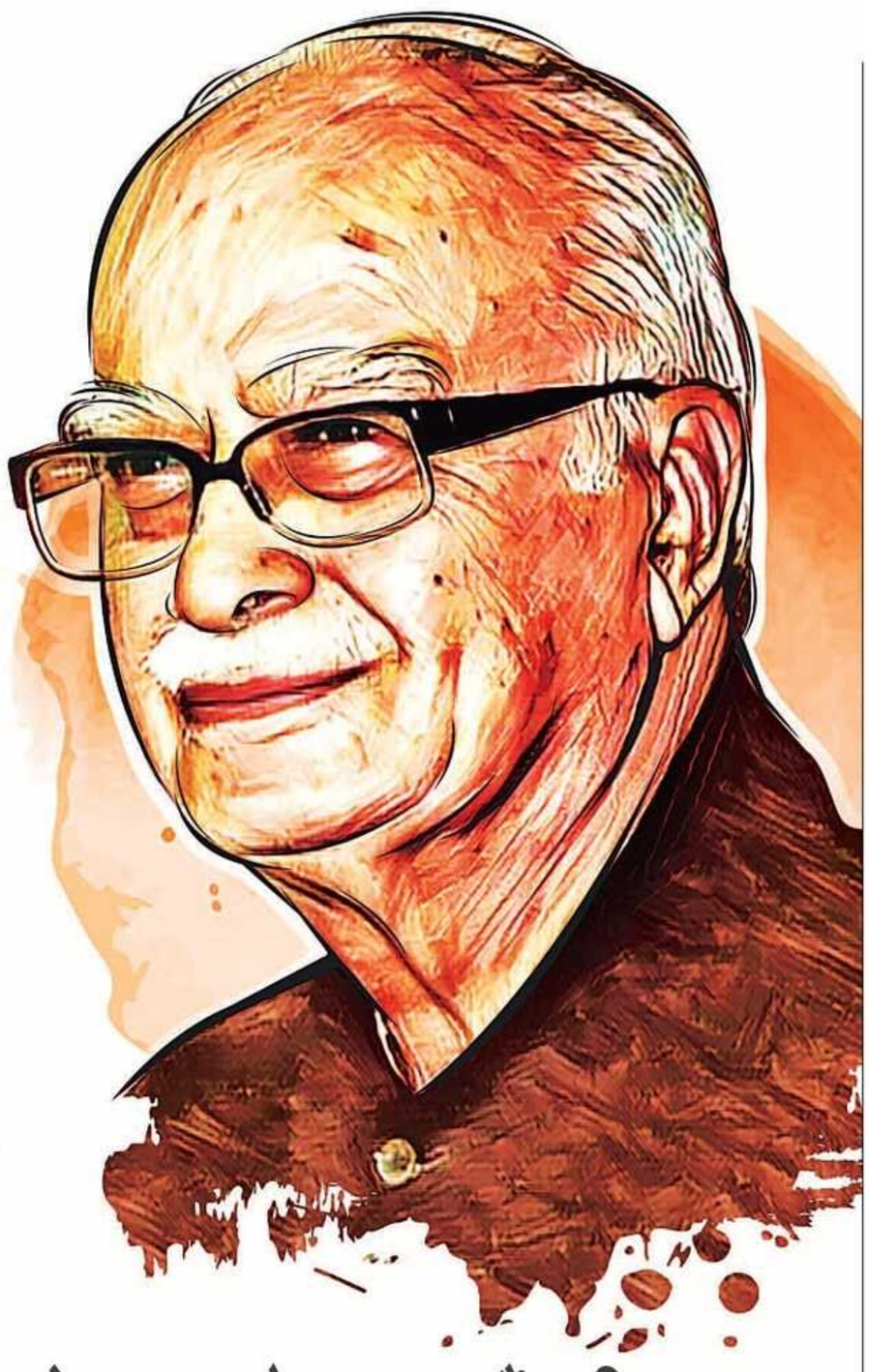

लालकृष्ण आडवाणी अपने स्पष्ट और दृढ़ रुख के लिए जाने जाते हैं। 1980 में जनता पार्टी में दोहरी सदस्यता का मुद्दा उठने पर जनसंघ धड़े से अलग होकर भाजपा का गठन करने और 2001 में आगरा में पाकिस्तान के राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ के साथ शिखर वार्ता से मुशर्रफ को खाली हाथ भेजने में आडवाणी की अहम भूमिका रही थी। वह अपने से ज्यादा पार्टी एवं देश की सोच को आगे रखते थे। हवाला मामले में नाम आने पर चुनाव न लड़ने और संसद में कदम न रखने का बड़ा फैसला उन्होंने लिया था।

प्रचारक से प्रारंभ : लालकृष्ण आडवाणी संघ के प्रचारक बनकर निकले, जनसंघ में विचारक की भूमिका में रहे। नब्बे के दशक के आखिरी वर्षों में सोमनाथ से अयोध्या की रथयात्रा के इस यात्री की पूरे देश में धूम रही। 1970 के आडवाणी और 1990 के आडवाणी में जमीन आसमान का फर्क था। 1970 में वह कोई जनसभा नहीं करते थे और 1990 में उनकी सभाओं में तालियों की गड़गड़ाहट होती थी। वैसे तो आडवाणी 1951 में जनसंघ के संस्थापकों में रहे और 1957 में अटल बिहारी वाजपेयी के साथ संसदीय सहयोगी के रूप में रहे, लेकिन एक दशक बाद फिल्म समीक्षक और नगर निगम की सियासत से ऊपर उनकी राजनीति ने नई करवट ली।

राजनीतिक उभार : 1968 में जब दीनदयाल उपाध्याय का निधन हो गया, तो पूरे जनसंघ के केंद्र में अटल बिहारी वाजपेयी आ गए। लालकृष्ण आडवाणी का मुख्य राजनीतिक उभार यहीं से शुरू हुआ। वाजपेयी एवं अन्य नेता चाहते थे कि राजमाता विजयाराजे सिंधिया अध्यक्ष पद संभालें, लेकिन उन्होंने साफ इनकार कर दिया। ऐसे में वाजपेयी ने आडवाणी को तैयार किया। आडवाणी की झिझक थी कि उनको सार्वजनिक रूप से भाषण देना नहीं आता, लेकिन जब वाजपेयी ने कहा कि वह तो पंडित दीनदयाल उपाध्याय को भी नहीं आता था, तो वह तैयार हो गए।

सियासी स्वर्णकाल : आडवाणी का राजनीतिक स्वर्णकाल 1990 में अयोध्या से सोमनाथ की राम मंदिर को लेकर निकाली गई रथयात्रा से शुरू हुआ। इसमें उनके सारथी मौजूदा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी थे। इस यात्रा ने देश की राजनीति की दिशा और दशा बदल दी। किस तरह से राजनीतिक दल यात्रा के जरिए लोगों तक व्यापक पहुंच बना सकता है, इससे साबित हुआ। हालांकि, यह यात्रा आडवाणी की समस्तीपुर में गिरफ्तारी से पूरी नहीं हो सकी, लेकिन आडवाणी के हाथ में जनता से संवाद का 'यात्रा अस्त्र' लग चुका था। इसके बाद उन्होंने देश को मथने के लिए 1993 में जनादेश यात्रा (चार जगहों से चार नेताओं आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी, भैरों सिंह शेखावत और कल्याण सिंह) निकाली।

गंभीरता को सहजता से लेने की कला : गंभीरता को सहजता से लेना आडवाणी को आता था। सत्तर के दशक में जब एक उपचुनाव में जनसंघ की हार हो गई तो वाजपेयी काफी उदास थे। तब आडवाणी ने अचानक फिल्म देखने की बात कह चौंका दिया। बाद में वाजपेयी व आडवाणी दोनों दिल्ली के इंपीरियल सिनेमा हॉल में फिल्म देखने गए। दोनों ही फिल्म देखने के शौकीन थे।

(प्रस्तुति : रामनारायण श्रीवास्तव)

10 मार्च 1999 को दिल्ली में एक कार्यक्रम के दौरान अटल बिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी। ● मनीष स्वरूप/फाइल

पुरस्कार

1999 भारतीय संसदीय समूह द्वारा उत्कृष्ट सांसद पुरस्कार से सम्मानित किया गया

2015 भारत के दूसरे बड़े नागरिक सम्मान पद्म विभूषण से सम्मानित किया

किताबें

- मेरा देश मेरा जीवन (2008)
- एक कैदी की स्क्रैपबुक (1978)
- नजरबंद लोकतंत्र (2003)
- सुरक्षा और विकास के नए दृष्टिकोण (2003)

अटल के नाम का ऐलान कर चौंका दिया था

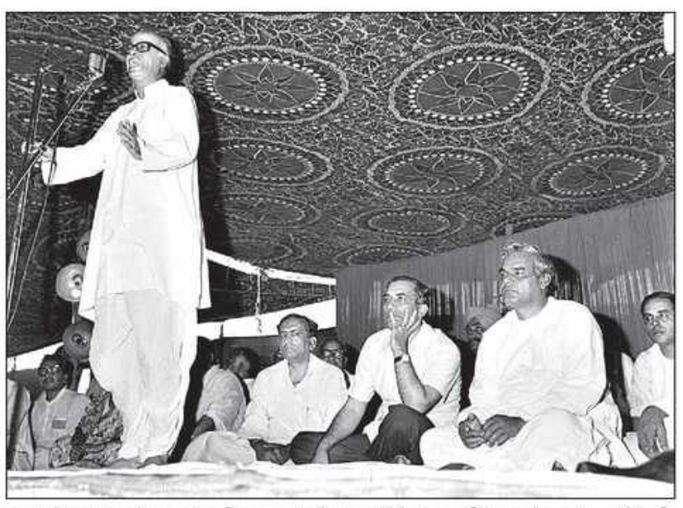

29 अप्रैल 1977 में जनसंघ की एक सभा में भाषण देते आडवाणी। इस दौरान अटल बिहारी वाजपेयी भी उनके साथ मंच पर आसीन थे। ● वीरेंद्र प्रभाकर/फाइल फोटो

मुंबई के शिवाजी पार्क में 11 नवंबर, 1995 को भाजपा की ओर से एक बहुत बड़ी रैली का आयोजन किया गया था। तत्कालीन पार्टी अध्यक्ष लाल कृष्ण आडवाणी ने रैली को संबोधित करते हुए एकाएक घोषणा की कि अगले चुनाव में अटल बिहारी वाजपेयी पार्टी के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार होंगे। न ही पार्टी के कार्यकर्ता और न ही आरएसएस का नेतृत्व आडवाणी से इसकी उम्मीद कर रहा था। इस बात का ऐलान उस समय हुआ था, जब हर जगह यही कयास लगाए जा रहे थे कि खुद लाल कृष्ण आडवाणी भाजपा की ओर से प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार होंगे।

जीवन परिचय

पिता किशनचंद आडवाणी, माता ज्ञानीदेवी आडवाणी और छोटी बहन शीला आडवाणी के साथ लालकृष्ण आडवाणी की बाल्यावस्था की तस्वीर। ● फाइल

- **जन्म :** 8 नवंबर 1927, कराची (वर्तमान पाकिस्तान)
- **1936-1942 :** सेंट पैट्रिक स्कूल, कराची से स्कूली शिक्षा (मैट्रिक तक हर कक्षा में प्रथम रहे)
- **1942 :** स्वयंसेवक के रूप में आरएसएस में शामिल हुए
- **1942 :** भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान दयाराम गिदुमल नेशनल कॉलेज, हैदराबाद में शामिल हुए
- डी.जी. नेशनल कॉलेज, हैदराबाद से स्नातक इसके बाद गवर्नमेंट लॉ कॉलेज, मुंबई से विधि स्नातक की पढ़ाई की
- **1944 :** कराची के मॉडल हाई स्कूल में शिक्षक के रूप में नौकरी की
- **12 सितंबर, 1947 :** सिंध से दिल्ली आए
- **1947-1951 :** आरएसएस सचिव के रूप में राजस्थान में काम किया
- **1960-1967 :** जनसंघ की राजनीतिक पत्रिका ऑर्गनाइजर में सहायक संपादक के रूप में काम किया

राजनीतिक करियर

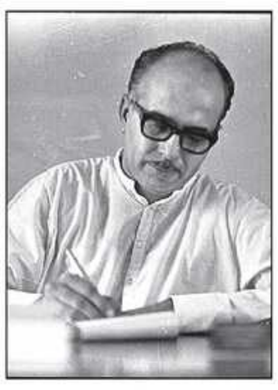

वर्ष 1970 में दिल्ली जनसंघ अध्यक्ष रहे थे आडवाणी। ● केके चावला/फाइल

- **अप्रैल 1970 :** पहली बार राज्य सभा सदस्य बने
- **दिसंबर 1972 :** भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष चुने गए
- **26 जून 1975 :** आपातकाल के दौरान बेंगलोर में गिरफ्तार
- **मार्च 1977 से जुलाई 1979 :** केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री के पद पर रहे
- **मई 1986 :** भाजपा अध्यक्ष बने
- **मार्च 1988 :** पुनः भाजपा के पार्टी अध्यक्ष चुने गए।
- **नवंबर 1989 :** पहली बार लोकसभा के लिए चुने गए
- **अक्तूबर 1999-मई 2004 :** कैबिनेट मंत्री, गृह मंत्रालय
- **जून 2002-मई 2004 :** उप प्रधानमंत्री रहे
- **2004 :** लोकसभा में विपक्ष के नेता के तौर पर काम किया

जनादेश यात्राएं

भारत सुरक्षा यात्रा | स्वर्ण जयंती रथ यात्रा | भारत उदय यात्रा

● प्रकाश सिंह/फाइल

राम रथ यात्रा

25 सितंबर 1990 को सोमनाथ से शुरू हुई। यह 10 हजार किलोमीटर चलने के बाद अयोध्या में समाप्त होनी थी। यात्रा जब दिल्ली पहुंची तो तत्कालीन मुख्यमंत्री साहिब सिंह वर्मा ने उन्हें मुकुट पहनाकर स्वागत किया।

टेनिस कोर्ट में पहली बार संघ का नाम सुना

ब्लॉग से बात

जब 1942 में मैं आरएसएस का सदस्य बना, और वह भी सिंध में, तो उस प्रांत में बहुत से लोगों ने इस संगठन का नाम भी नहीं सुना था। मेरी आत्मकथा माई कंट्री, माई लाइफ के चरण 1 के अध्याय 3 का शीर्षक है सिंध में मेरे पहले बीस वर्ष। आरएसएस में मेरे प्रवेश का संदर्भ देने वाला भाग इस प्रकार है:

बचपन में हमेशा एक पल ऐसा होता है, ऐसा कहा जाता है, जब दरवाजा खुलता है और भविष्य को अंदर आने देता है। मेरे मामले में, भविष्य में कदम रखने का वह क्षण तब आया जब मैं आरएसएस में शामिल हुआ, तब मैं केवल 14 साल व कुछ महीने का था। मेरे मैट्रिकुलेशन पूरा करने के बाद, मेरे पिता कराची से हैदराबाद (सिंध) चले गए। छुट्टियों के दौरान और कॉलेज में शामिल होने से पहले, मैंने टेनिस खेलना शुरू किया। टेनिस कोर्ट पर मेरे नियमित साझेदारों में से एक मित्र मुरली मुखी थे। एक दिन खेल के ठीक बीच में उन्होंने कहा कि 'मैं जा रहा हूं'। मैंने पूछा, 'आप सेट पूरा किए बिना कैसे जा सकते हैं?' उन्होंने जवाब दिया, 'मैं कुछ दिन पहले ही आरएसएस में शामिल हुआ हूं। मैं शाखा के लिए देर से नहीं जा सकता। जब मैं आठ दशकों से अधिक के अपने जीवन पर नजर डालता हूं, तो मैं खुद को याद दिलाता हूं कि मुझे अपने जीवन में प्रेरणा तब मिली, जब 1942 में हैदराबाद (सिंध) के एक टेनिस कोर्ट पर मैंने पहली बार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का नाम सुना और स्वयंसेवक बन गया।

(9 फरवरी 2014 को ब्लॉग में लाल कृष्ण आडवाणी)

हमें आध्यात्मिक गुरुओं से सीखना होगा

आडवाणी का पहला ब्लॉग स्वामी रंगनाथानंद के बारे में था। इसकी शुरुआत में उन्होंने लिखा, 15वीं लोकसभा के लिए चुनाव काफी नजदीक आ गए हैं। स्वाभाविक है कि मेरा अधिकांश संवाद राजनीतिक और चुनावी होगा। फिर भी मैं मानता हूं कि राजनीति हमारे राष्ट्रीय जीवन का अंतिम परिणाम नहीं है, बल्कि राजनीति सार्वजनिक जीवन में हर कहीं तभी सार्थक और परिपूर्ण होती है, जब वो भारत की आध्यात्मिक परंपरा में निहित मूल आदर्शों और उच्च मूल्यों द्वारा निर्देशित हो। ऐसा बहुत कुछ है, जिसे राजनीतिज्ञ और अन्य व्यवसायों से जुड़े लोगों को भारत के आध्यात्मिक गुरुओं से सीखना होगा। ब्लॉग में उन्होंने लिखा, कराची में अपने जीवन के अंतिम बरसों में एक और परिवर्तनकारी प्रभाव मेरे जीवन में आया। भगवतगीता पर स्वामी रंगनाथानंद का प्रवचन सुनने मैं हर रविवार की शाम को रामकृष्ण मिशन जाने लगा। स्वामीजी उस समय कराची में रामकृष्ण मिशन के प्रमुख थे। वो केरल के रहने वाले थे। कुछ ही दिनों में उन्हें मुझसे गहरा स्नेह हो गया। मैंने 1947 में कराची छोड़ दिया था, जबकि स्वामीजी कुछ महीने और वहां पर रहे, जब तक कि वहां पर रामकृष्ण मिशन की गतिविधियां चलाना असंभव नहीं हो गया। भरे मन से उन्होंने 1948 के शुरू में कराची छोड़ दिया। उनसे मेरी संबद्धता 98 वर्ष की आयु में फरवरी 2005 तक लगभग उनके निधन तक रही। मेरी उनसे आखिरी मुलाकात 2003 में हुई थी।

(09 जनवरी 2009 को लिखा पहला ब्लॉग)

रोचक

स्टेशन पर हुई अटल से पहली मुलाकात

अटल बिहारी वाजपेयी एक बार सहयोगी के तौर पर पंडित श्यामा प्रसाद मुखर्जी के साथ ट्रेन से मुंबई जा रहे थे। मुखर्जी कश्मीर के मुद्दे पर पूरे देश का दौरा कर रहे थे। तब लालकृष्ण आडवाणी कोटा में प्रचारक थे। उनको पता लगा कि मुखर्जी इस स्टेशन से गुजरने वाले हैं तो वह मिलने आ गए। वहीं मुखर्जी ने वाजपेयी से आडवाणी की पहली मुलाकात करवाई थी।

...जब पहली बार प्लेन में सफर किया

आडवाणी ने कराची छोड़ने के उस दौर को याद करते हुए कहा था कि 19 साल की उम्र में आरएसएस से जुड़े होने के कारण वह बिल्कुल भी भयभीत नहीं थे। 12 सितंबर 1947 को उन्होंने कराची छोड़ दिया। वह अकेले थे और उन्होंने पहली बार प्लेन का सफर किया था। आरएसएस से जुड़ा होने के कारण लोगों ने सलाह दी थी कि अकेले ही अभी निकल जाइए। इसके करीब एक महीने के बाद उनके परिवार ने कराची छोड़ा था।

रोजनामचा

साप्ताहिक भविष्यफल

(04 फरवरी से 10 फरवरी 2024)

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

मेष (21 मार्च-20 अप्रैल)
आत्मविश्वास से लबरेज रहेंगे, परंतु मन परेशान भी रहेगा। शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी। लेखन आदि बौद्धिक कार्यों में मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। खर्च बढ़ेंगे। सेहत का ध्यान रखें।

वृष (21 अप्रैल-20 मई)
मन तो प्रसन्न रहेगा, परंतु आत्मविश्वास में कमी रहेगी। घर-परिवार में धार्मिक कार्य हो सकते हैं। कारोबार में वृद्धि होगी। परिश्रम भी अधिक रहेगा। लाभ के अवसर मिलेंगे।

मिथुन (21 मई-21 जून)
मन अशांत हो सकता है। संयत रहें। शैक्षिक कार्यों में सफल रहेंगे। लेखनादि बौद्धिक कार्यों में व्यस्तता बढ़ सकती है। नौकरी में अफसरों से सद्भाव बनाकर रखें। परिश्रम अधिक रहेगा।

कर्क (22 जून-23 जुलाई)
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। माता-पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। कारोबार में परिवर्तन की संभावना बन रही है। भागदौड़ अधिक रहेगी। मानसिक अशांति हो सकती है।

सिंह (24 जुलाई-22 अगस्त)
आत्मसंयत रहें। परिवार का साथ मिलेगा। शैक्षिक कार्यों में सफल रहेंगे। कला या संगीत के प्रति रुझान बढ़ सकता है। आय में वृद्धि होगी। सेहत का ध्यान रखें।

कन्या (23 अगस्त-22 सितंबर)
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परंतु संयत रहें। सेहत के प्रति सचेत रहें। नौकरी में अफसरों से सद्भाव बनाकर रखें। नौकरी में तरक्की के अवसर मिल सकते हैं। भागदौड़ अधिक रहेगी।

तुला (23 सितंबर-23 अक्तूबर)
वाणी में मधुरता रहेगी। पठन-पाठन में रुचि रहेगी। शैक्षिक व शोधादि कार्यों में सफलता मिलेगी। किसी पुराने मित्र से भेंट हो सकती है। आय में वृद्धि होगी। कारोबार में भागदौड़ अधिक रहेगी।

वृश्चिक (24 अक्तूबर-21 नवंबर)
मन प्रसन्न रहेगा। परंतु बातचीत में संयत रहें। कारोबार में वृद्धि होगी। परिश्रम अधिक रहेगा। लाभ के अवसर मिलेंगे। किसी मित्र के सहयोग से धन की प्राप्ति हो सकती है।

धनु (22 नवंबर-21 दिसंबर)
आत्मविश्वास से लबरेज रहेंगे, परंतु मन कुछ अशांत हो सकता है। परिवार के साथ किसी धार्मिक स्थान पर जा सकते हैं। भागदौड़ अधिक रहेगी। किसी मित्र का आगमन हो सकता है।

मकर (22 दिसंबर-19 जनवरी)
मन प्रसन्न तो रहेगा, फिर भी संयत रहें। अपनी भावनाओं को वश में रखें। परिवार के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। कारोबार में परिवर्तन के अवसर मिल सकते हैं।

कुंभ (20 जनवरी-18 फरवरी)
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। परंतु संयत रहें। अति उत्साही होने से बचें। कारोबार में विस्तार के योग बन रहे हैं। माता-पिता से धन की प्राप्ति हो सकती है। आय में वृद्धि होगी।

मीन (19 फरवरी-20 मार्च)
मन अशांत रहेगा। धैर्यशीलता बनाए रखने के प्रयास करें। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। आय में वृद्धि होगी। कारोबार में वृद्धि होगी। लाभ में वृद्धि होगी। वाहन सुख में वृद्धि हो सकती है।

वर्ग पहेली : 7503

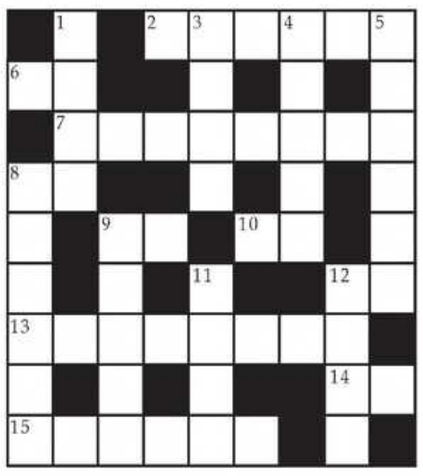

ऊपर से नीचे
1. स्थान जहां सिक्के ढाले जाते हैं (4)
3. भूकंप; प्रलय (4)
4. असर डालने वाला; प्रभावी; प्रभावशाली (5)
5. जुर्माना वसूल करना; रसीद लिख कर देना (3,3)
8. आदर-अनादर (2,4)
9. जो गति बढ़ाए; गति देने वाला; गति बढ़ाने वाला (5)
11. किसी से किया जाने वाला परामर्श; मंत्रणा; सलाह (4)
12. देखा-भाला; परखा हुआ; ज्ञात; प्रचलित; प्रसिद्ध (2,2)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली

बाएं से दाएं
2. जिसका क्षय न हो; अविनाशी; सदा एक-सा रहने वाला; परमेश्वर (3,3)
6. पतला सिरा; पैना किनारा; कोण; कोना; शिखर; सिरा (2)
7. धन जमा रखने पर बैंक से मिलने वाला दस्तावेज (3,2,3)
8. सामान; असबाब; बढ़िया वस्तु; धन-संपत्ति; क्षेत्र (2)
9. एक प्राचीन अस्त्र; भीम का अस्त्र (2)
10. जोर की आवाज; आर्तनाद; कोलाहल; धूम; हल्ला; ख्याति; प्रसिद्धि (2)
12. गमन करना; प्रस्थान करना; रवाना होना; रास्ता लेना; विदा होना; चलना; निकलना; बहना (2)
13. छिपी हुई बात खोलना; भेद प्रकट करना; रहस्य अनावृत्त करना (3,2,3)
14. फूलों का व्यवसाय करने वाली जाति; बगीचे का रखवाला (2)
15. पालक से छल करने वाला; स्वामी से द्रोह करने वाला; कृतघ्न; निष्ठाहीन; विश्वासघाती (6)

(उत्तर अगले अंक में)

वर्ग पहेली 7502 का उत्तर

1 द	2 न	द	3 ना	ना	■	4 रं	■	5 म
■	का	■	ट	■	6 सं	ग	ठ	न
7 ध	र	प	क	ड़	■	ज	■	ब
■	ना	■	क	■	8 सि	म	ट	ना
9 अ	■	10 घ	र	क	र	ना	■	ना
11 प	ह	न	ना	■	प	■	12 ल	■
ना	■	घ	■	13 पा	र	ल	गा	ना
14 प	द	ना	म	■	आ	■	ता	■
न	■	ना	■	15 का	ना	क	र	ना

सुडोकू : 7487

* मध्यम

				4				
	9				2	8	7	
	2		8	6	3			
	5	9				1		
4		8				7		6
		7				9	3	
			5	8	6		1	
	6	2	3				8	
				9				

खेलने का तरीका : दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। तर्क से इसे हल कर सकते हैं। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3x3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

हल : सुडोकू नं.7486

4	3	1	9	7	8	2	5	6
2	6	9	1	3	5	7	4	8
8	7	5	2	6	4	9	3	1
7	5	4	3	8	6	1	9	2
6	8	2	4	1	9	5	7	3
9	1	3	5	2	7	8	6	4
5	2	8	7	4	3	6	1	9
1	4	7	6	9	2	3	8	5
3	9	6	8	5	1	4	2	7

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋभुकांत गोस्वामी

04 फरवरी, रविवार,15 माघ (सौर) शक संवत् 1945, 22, माघ मास प्रविष्टे (पंजाब पंचांग)2080, 23, रज्जब सन् 1445, माघ कृष्ण नवमी (विक्रमी संवत्) सायं 05.50 मिनट तक पश्चात दशमी, अनुराधा नक्षत्र (दिन-रात), वृद्धि योग दोपहर 12.12 मिनट तक तदनंतर ध्रुव योग, गर करण, चंद्रमा वृश्चिक राशि में (दिन-रात)।

सूर्य उत्तरायण। सूर्य दक्षिण गोल। शरद् ऋतु। सायं 04.30 मिनट से सायं 06 बजे तक राहुकालम्। भद्रा रात्रि 05.38 मिनट (सूर्योदय पूर्व) से।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

आजकल हमारी शादीशुदा जिंदगी बहुत तनावपूर्ण होती जा रही है। कुछ समझ नहीं आ रहा है। कोई उपाय बताएं? – अकस्मात कुमार, मथुरा

- पति-पत्नी के संबंधों को यदि वास्तु की दृष्टि से देखें तो दो चीजें महत्वपूर्ण हैं– एक तो कमरे की दिशा तथा दूसरा कमरे के अंदर की दशा।
- कमरे की दिशा दक्षिण पश्चिम अथवा दक्षिण होनी चाहिए। इसके साथ ही कमरे की दशा पर भी ध्यान देना बहुत जरूरी है।
- लैपटॉप, टी वी बेडरूम से दूर होने चाहिए।
- कमरे में हल्के और सौम्य रंग होने चाहिए। गहरे रंग शांति के लिए हानिकारक होते हैं।
- बिस्तर पर भोजन करना हमारे जीवन एवं मानसिकता पर नकारात्मक प्रभाव डालता है।

बिना कष्ट के यह जीवन एक बिना नाविक के नाव जैसा है, जिसमें खुद का कोई विवेक नहीं। हल्की हवा के एक झोंके में भी चल देता है।

– ईश्वर चंद्र विद्यासागर

युद्ध, प्रेम और राजनीति के नियम

दूसरी नजर

पी चिदंबरम

प्यार के नियमों पर कई किताबें लिखी जा चुकी हैं। मुझे लगता है कि प्यार के उतने ही नियम हैं, जितने इस दुनिया में प्रेमी हैं और जितनी इस पर किताबें लिखी गई हैं। ऐसी किताबों का एक लोकप्रिय शीर्षक है 'प्यार के नियम'। प्यार के सरल नियमों से लेकर आठ नियम, चालीस नियम जैसे शीर्षकों वाली किताबों की एक लंबी फेहरिस्त है।

कुछ हफ्ते पहले एक स्तंभ में मैंने कानून के शासन और कानून द्वारा शासन के बीच अंतर समझाने की कोशिश की थी। पहले सिद्धांत के मुताबिक, कानून सर्वोच्च है और हर शासक को कानून का पालन करना चाहिए। दूसरे सिद्धांत के मुताबिक, शासक सर्वोच्च है और कानून उसके नौकर हैं और नौकरों को किसी भी समय बदला जा सकता है। जब मनुष्य में बस्तियां बसाने और समुदाय बनाने का विचार जड़ें जमाना शुरू किया, तभी से उसने नियम बनाने शुरू कर दिए।

युद्ध के नियम

युद्ध के कुछ नियम होते हैं। दो महायुद्धों के बाद, चार जेनेवा समझौतों और उनमें बने नियम-कायदों को सभी 196 देशों ने अपनाया और अनुमोदित किया। उनके तहत अंतरराष्ट्रीय मानवतावादी कानूनों का गठन हुआ। संक्षेप में, उनमें चार प्रमुख नियम हैं :

– संघर्ष के दौरान बीमार, घायल, चिकित्सा और धार्मिक कर्मियों की रक्षा करना।

– समुद्र में युद्ध के दौरान घायलों, बीमारों और टूटे हुए जहाजों की देखभाल करना।

– युद्धबंदियों के साथ मानवता का व्यवहार करना।

– कब्जे वाले क्षेत्रों सहित सभी नागरिकों की रक्षा करना।

हालांकि, विएतनाम, इराक और लीबिया के युद्धों में इन नियमों का खुलेआम उल्लंघन किया गया। रूस और यूक्रेन तथा इजराइल और हमास के बीच चल रहे युद्धों में उनका उल्लंघन किया जा रहा है। बलात्कार और लूटपाट आम बात है। रूस ने यूक्रेन के अस्पतालों, स्कूलों और नागरिक ठिकानों पर बमबारी और मिसाइल से हमले किए हैं। 24 जनवरी, 2024 को पैंसठ यूक्रेनी युद्धबंदियों को ले जा रहे एक रूसी परिवहन विमान को मार गिराया गया, जिसमें चालक दल के नौ लोगों समेत विमान में सवार सभी लोग मारे गए। रूस ने यूक्रेन पर आतंकवादी कृत्य का आरोप लगाया, जिसका यूक्रेन ने खंडन किया है। इजराइल-हमास युद्ध में, हमास ने 7 अक्तूबर, 2023 को वर्तमान संघर्ष शुरू किया। उसने गाजा से दक्षिणी इजराइल पर एक हैरतअंगेज हमला किया, जिसमें बारह सौ से अधिक लोग मारे गए और 240 को बंधक बना लिया गया। पिछले चार महीनों के दौरान इजराइल की प्रतिक्रिया बहुत क्रूर और असंगत रही है। फिलस्तीनियों को संकरी गाजा पट्टी में जबरन धकेल दिया गया है और पच्चीस हजार लोगों के मारे जाने की खबर है।

दोनों युद्धों में चारों पक्षों द्वारा हर नियम का उल्लंघन किया गया है। अगर युद्ध के नियमों का उल्लंघन किया जाता है, तो व्यक्तियों और देशों पर संयुक्त राष्ट्र न्यायालय में मुकदमा चलाया जा सकता है। गाजा में जनसंहार समझौतों के उल्लंघन के लिए दक्षिण अफ्रीका ने इजराइल को अंतरराष्ट्रीय न्यायालय में घसीटा है।

संगम साहित्य (300 ईसा पूर्व) में युद्ध के नियमों पर एक सुंदर कविता है:

गौएं, भद्र ब्राह्मण, स्त्रियां, रोगी, निस्संतान
सुरक्षित स्थानों के लिए प्रस्थान करें;
यहां युद्ध होगा
और मेरा तीर आगे बढ़ेगा:
इसके बाद राजा धर्म का मार्ग बताएंगे
वे युद्ध में शामिल होंगे

मैं तमिल कवि कंबन (1180 ई.) द्वारा (श्री) राम और रावण के बीच अंतिम युद्ध के दृश्य के वर्णन से चकित होता हूं। राम रावण को संबोधित करते हैं:

तुम अपने सारे हथियार गंवा चुके और असहाय खड़े हो
अगर मैं अब तुमसे युद्ध करूं तो यह अधर्म होगा
आज जाओ, कल आना युद्ध के लिए
फिर मैं लड़ूंगा तुमसे।

प्रेम के नियम

प्यार के नियमों पर कई किताबें लिखी जा चुकी हैं। मुझे लगता है कि प्यार के उतने ही नियम हैं, जितने इस दुनिया में प्रेमी हैं और जितनी इस पर किताबें लिखी गई हैं। ऐसी किताबों का एक लोकप्रिय शीर्षक है 'प्यार के नियम'। प्यार के सरल नियमों से लेकर आठ नियम, चालीस नियम जैसे शीर्षकों वाली किताबों की एक लंबी फेहरिस्त है। हालांकि सच कहूं तो, मैंने उनमें से कुछ भी नहीं पढ़ा है, लेकिन जाहिरा तौर पर ऐसी किताबों का एक विशाल पाठक वर्ग है।

जब मैं प्रेम के व्यावहारिक नियमों की तलाश कर रहा था, तो मुझे ये कुछ नियम मिले:

– किसी ऐसे व्यक्ति पर अपना प्यार बर्बाद मत करो, जो इसकी कद्र नहीं करता। – विलियम शेक्सपियर

– इंसान को हमेशा प्यार में रहना चाहिए। इसलिए किसी को कभी शादी नहीं करनी चाहिए। – आस्कर वाइल्ड

– जब हम प्रेम के लिए किए गए करारों को पढ़ते हैं, तो हमारी दिशा क्या होती है? हम हत्या की तरफ बढ़ रहे होते हैं। – जार्ज बर्नार्ड शा

– जब आप प्यार में ठोकर खाते हैं, तो फिर से उठ कर खड़ा होना आसान होता है। मगर जब आप प्यार में गिर पड़ते हैं तो ऐसा करना असंभव होता है। – अल्बर्ट आइंस्टीन

इन सारे कथनों के पीछे मजाकिया अंदाज भी हो सकता है और नहीं भी, लेकिन इनके जरिए प्यार के कुछ नियमों को समझा जा सकता है।

मेरे प्रिय कवि-दार्शनिक ने अपनी अमर कृति, तिरुक्कुरल (500 ईपू) में प्रेम पर एक पूरा खंड लिखा है। इस खंड में पच्चीस अध्याय और ढाई सौ दोहे हैं। निम्नलिखित में से कुछ नियमों को खोजने में मदद मिल सकती है:

– प्रेमियों के बीच जब नजर से नजर मिल जाए तो शब्द अपने अर्थ खो देते हैं।

– गाली से प्यार नहीं बुझता, जैसे तेल से आग नहीं बुझती।

राजनीति के नियम

राजनीति के मामले में, बेहतर है कि राजनीति के नियमों और राजनीति के कानूनों को लेकर भ्रमित न हों। कानून एक चीज है और नियम दूसरी- जैसे खेल के नियम और खेल खेलना दोनों अलग चीजें हैं। दरअसल, कुछ मैचों में खेल अघोषित नियमों के तहत खेला जाता है, जिसका मकसद स्थापित नियमों को तोड़ना होता है। मसलन, राजनीतिक दलों द्वारा दलबदल पर रोक लगाने वाले कानून को इस तरह से लागू किया गया है कि इससे और अधिक दलबदल को बढ़ावा मिले। राजनीति के नियमों के तहत 'अंपायर' किसी एक पक्ष में खेल भी सकता है। ऐसे कई मामले हैं, जहां सदन के अध्यक्ष ही दलबदल के खेल में खिलाड़ी बन गए। इसके अलावा, राजनीति का नियम है कि सामान्य बात को जटिल तरीके से समझाया जाना चाहिए। इस नियम पर अधिक स्पष्टता और राजनीति के अन्य नियमों के बारे में जानकारी के लिए, नीतीश कुमार के पास जाएं।

ताकि कोई बच्चा भूखा न सोए

वक्त की नब्ज

तवलीन सिंह

सच है कि लाभार्थियों के बैंक खातों में सीधा पैसा भेजने से भ्रष्टाचार के कुछ रास्ते बंद हो गए हैं। मगर यह भी सच है कि केंद्र सरकार आज भी अस्सी करोड़ भारतीयों को मुफ्त में राशन दे रही है। गरीबी अगर कम हुई होती तो इसकी कोई जरूरत नहीं होती और जो निवेश इन योजनाओं में हो रहा है, उसको बचा कर हम अपने बेहाल शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं पर कर सकते थे।

जिस दिन बजट पेश हुआ पिछले सप्ताह, दिल्ली में ठंड थी काफी और बारिश भी। इसलिए जब वह बच्ची अपनी पतली बाहों में बच्चा लिए मेरी गाड़ी की खिड़की से दिखी, तो बहुत बुरा लगा। उसको टोका मैंने यह कहकर कि इतने छोटे बच्चे को लेकर इस तरह ठंड और बारिश में नहीं घूमना चाहिए। उसने भिखारियों की ओर इशारा करते हुए अपना हाथ अपने मुंह की तरफ उठाया और कहा, 'खाने के लिए'। इत्तिफाक है कि यह हुआ उस समय जब वित्तमंत्री लोकसभा में आश्वासन दे रही थीं कि नए बजट का लक्ष्य है कि कोई भी नागरिक पीछे नहीं छोड़ा जाएगा।

अच्छा भाषण था वित्तमंत्री का और विशेषज्ञों का कहना है कि उनका यह अंतरिम बजट काफी ठीक लगा उनको। गर्व से हम भी कहते फिरते हैं इन दिनों कि भारत की अर्थव्यवस्था दुनिया में सबसे तेज गति से दौड़ रही है। हम देखते हैं कि कितनी तेजी से देश में सड़कें, हवाई अड्डे और बंदरगाह बने हैं मोदी के राज में। जिस छोटे समुद्रतटीय कोंकण गांव में मैं काफी समय से रहती हूं, वहां इतना परिवर्तन आया है पिछले दशक में कि मैं हैरान रह गई हूं। बजट पेश होने के कुछ दिन पहले मैं शाम को गांव में घूमने निकली और देखा कि पर्यटक इतने थे कि रोशनी से चमकते रेस्तरां सब भरे हुए थे। मैंने जब पूछा एक गांव वाले से कि पर्यटन की वजह से क्या लोगों की आमदनी दोगुनी हुई है, तो उसने हंस कर कहा, 'तीन गुनी से ज्यादा हुई है जी'।

इसलिए, ऐसा नहीं है कि मोदी के राज में भारत के लोगों ने तरक्की नहीं देखी है, लेकिन जब याद आता है मुझे कि मोदी की 'गारंटी' है कि 2047 तक भारत विकसित देश बन जाएगा, तो मुझे इस बात पर यकीन करना मुश्किल लगता है। बताती हूं क्यों। मेरे गांव में पर्यटन आने के बावजूद आज भी सड़ते कूड़े के ढेर दिखते हैं हर कोने में। भारत के तकरीबन हर गांव का यही हाल है। मेरे गांव में परिवर्तन यह जरूर आया है कि हर घर में शौचालय बन गए हैं। महिलाओं को खुले में शौच करने का दृश्य अब नहीं दिखता है। मगर स्वच्छ भारत शौचालयों के आगे क्यों नहीं बढ़ा है? विकसित देशों को छोड़िए, गंदगी और खुले में शौच करते लोग अर्ध-विकसित देशों में नहीं दिखते हैं।

स्वच्छता पर इन देशों में इसलिए खास ध्यान दिया जाता है कि वहां शासक जानते हैं कि बिना स्वच्छता के स्वास्थ्य असंभव है। गंदे पानी के कारण भारत के बच्चों में जानलेवा बीमारियां फैलती हैं और बड़े होने के बाद जब रोजगार खोजने निकलते हैं, तो मालूम पड़ता है कि अर्ध-शिक्षित होने के कारण रोजगार मिलना मुश्किल है। ऐसा नहीं है कि निजी उद्योग क्षेत्र में रोजगार के अवसर नहीं हैं, लेकिन जरूरत है शिक्षित, काबिल लोगों की, जिनका सख्त अभाव है अपने देश में। कारण एक ही है कि देश के ज्यादातर बच्चे सरकारी स्कूलों में पढ़ने पर मजबूर हैं या घटिया, ग्रामीण निजी स्कूलों में, जहां शिक्षा नहीं साक्षरता मिलती है। मोदी के राज में इस शर्मनाक स्थिति में कोई फर्क नहीं दिखा है।

वित्तमंत्री ने अपने भाषण में यह भी कहा कि उनकी सरकार सामाजिक न्याय पर ध्यान दे रही है, सो समाज कल्याण योजनाओं पर खास असर हुआ है। यह सच है कि लाभार्थियों के बैंक खातों में सीधा पैसा भेजने से भ्रष्टाचार के कुछ रास्ते बंद हो गए हैं। मगर यह भी सच है कि केंद्र सरकार आज भी अस्सी करोड़ भारतीयों को मुफ्त में राशन दे रही है। गरीबी अगर कम हुई होती, तो इसकी कोई जरूरत नहीं होती और जो निवेश इन योजनाओं में हो रहा है, उसको बचा कर हम अपने बेहाल शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं पर कर सकते थे। इतना पैसा बच जाता कि ग्रामीण भारत के हर स्कूल में आधुनिक शिक्षा कंप्यूटरों द्वारा हो सकती थी। आज की दुनिया में सच यह है कि जिनको कंप्यूटर का ज्ञान नहीं है, उनको शिक्षित नहीं माना जाता है।

आर्थिक चीजों की मैं कोई विशेषज्ञ नहीं हूं, तो बजट को विस्तार से समझने की मैं कभी कोशिश नहीं करती हूं, लेकिन इतना जानती हूं कि अपने देश की सबसे बड़ी आर्थिक समस्या आज भी गरीबी है। इतना भी जानती हूं कि हमारे करोड़ों नागरिक ऐसे हैं जिनको बारिश और ठंड में भी अपने बच्चों को दिल्ली और मुंबई की सड़कों पर भेजना पड़ता है भीख मांगने। मैंने मुंबई में कभी गरीब, लावारिस बच्चों के लिए 'नाश्ता' नाम की निजी योजना शुरू की थी, जिसके जरिए बच्चों को गरम नाश्ता दिया जाता था। इस योजना की वजह से मैंने इन बच्चों के जीवन को बहुत करीब से देखा है और कभी नहीं भूल पाती हूं एक बच्ची की यह बात।

उसकी उम्र कोई पंद्रह वर्ष की हो गई थी, जब यह बात हुई और उसने रोते हुए कहा कि जब वह छोटी थी तो उसके माता-पिता उसको रोज भेजते थे भीख मांगने और अगर खाली हाथ वापस आती थी तो उस रात को उसको खाली पेट सोना पड़ता था। इस तरह की गरीबी मैंने कभी किसी विकसित या अर्ध-विकसित देश में नहीं देखी है, इसलिए मेरे लिए यकीन करना मुश्किल है कि 2047 तक भारत विकसित देशों के श्रेणी में आ जाएगा।

इतना बड़ा सपना देखना मेरे लिए मुश्किल है। एक छोटा-सा सपना जरूर देखती हूं, जब भी बजट पेश होता है। यह सपना है कि एक दिन आएगा निकट भविष्य में, जब हर जनप्रतिनिधि तय करेगा कि उसके चुनाव क्षेत्र में कोई भी बच्चा भूखा नहीं सोएगा।

सेवा क्षेत्र की चुनौतियां

मुद्दा

अजय जोशी

हमारे देश में प्रतिभाओं की कमी नहीं है। सरकार, शिक्षण संस्थाएं और तकनीकी संस्थान मिलजुल कर प्रभावी प्रयास करें और आधारभूत संरचना का और तेजी से विकास किया जाए तो हमारी मानव शक्ति का सेवा क्षेत्र में अधिक प्रभावी ढंग से उपयोग किया सकता है।

देश की अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह अर्थव्यवस्था का तीसरा घटक माना जाता है। पहला घटक प्राथमिक क्षेत्र है, जिसमें कृषि, वानिकी, खनन और मछली पालन आदि जैसी गतिविधियां शामिल है। द्वितीयक क्षेत्र में विनिर्माण और निर्माण कार्य से जुड़ी क्रियाएं शामिल हैं। तीसरा घटक, सेवा क्षेत्र काफी व्यापक है। इसमें खुदरा और थोक व्यापार, आतिथ्य और पर्यटन सेवाएं, जिनमें होटल, रेस्तरां, ट्रेवल एजंसियों और पर्यटन स्थलों से संबंधित सेवाएं शामिल होती हैं। बैंकों, बीमा कंपनियों, निवेश फर्मों और अन्य वित्तीय संस्थानों द्वारा प्रदान की जाने वाली वित्तीय सेवाएं भी इसी क्षेत्र के अंतर्गत आती हैं। इसके अंतर्गत स्वास्थ्य सेवाएं, शैक्षणिक संस्थान, सूचना प्रौद्योगिकी, मनोरंजन और मीडिया भी काफी महत्त्वपूर्ण सेवाएं हैं। विभिन्न प्रकार की व्यक्तिगत पेशेवर सेवाएं जैसे कानूनी, लेखा, परामर्श और अन्य व्यावसायिक सेवाएं भी इसमें आती हैं। परिवहन के अंतर्गत माल ढुलाई और लोगों की आवाजाही से संबंधित सेवाएं भी आती हैं।

इस क्षेत्र में लगभग 2.6 करोड़ लोगों को रोजगार प्राप्त होता है। भारत के कुल वैश्विक निर्यात में सेवा क्षेत्र का लगभग 40 फीसद योगदान है। इस क्षेत्र में वर्ष 2000 और 2021 के बीच कुल विदेशी निवेश के प्रवाह का लगभग 53 फीसद निवेश प्राप्त हुआ। अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र की वृद्धि दर भी काफी संतोषजनक रही है। वित्तवर्ष 2022 में इसकी वृद्धि दर 8.4 फीसद और 2023 में 9.1 फीसद रही। देश की जीडीपी में सेवा क्षेत्र का योगदान पचास फीसद से अधिक है। भारत सेवा क्षेत्र में वैश्विक 'आउटसोर्सिंग' का केंद्र माना जाता है, विशेष रूप से आइटी, बीपीओ और ज्ञान-आधारित सेवाओं, जैसे साफ्टवेयर इंजीनियरों, डाक्टरों, तकनीकी इंजीनियरों और व्यापार विश्लेषकों सहित कई उच्च कुशल पेशेवरों की सेवाओं का बड़ा निर्यातक है। भारत के सकल मूल्य वर्धन (जीवीए) में सेवा क्षेत्र का योगदान चौवन फीसद है।

अर्थशास्त्रियों का कहना है कि किसी भी देश का विकास उसके सेवा क्षेत्र के प्रदर्शन पर निर्भर करता है। मगर आधुनिक अर्थव्यवस्था में राष्ट्रीय आय में प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा धीरे-धीरे कम होता जा रहा है, जबकि द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों की भागीदारी निरंतर बढ़ रही है। उद्योगों का विकास देश के परिवहन, संचार, बिजली, बैंकिंग आदि जैसी सेवाओं के प्रदर्शन और सुधार पर निर्भर करता है। परिवहन और संचार, बैंकिंग, बीमा, शिक्षा और स्वास्थ्य आदि के क्षेत्रों में बेहतर सेवाओं से देश के भीतर जीवन की गुणवत्ता और जीवन स्तर को ऊंचा उठाने में सहायता मिलती है। अच्छी तरह से विकसित सेवा क्षेत्र अंतरराष्ट्रीय व्यापार का विस्तार करके देश का विदेशी मुद्रा भंडार बढ़ाने में भी सहायक होता है।

मगर सेवा क्षेत्र की चुनौतियां कम नहीं हैं। इसमें नियामक जटिलता बड़ी समस्या मानी जाती है। इस क्षेत्र से जुड़े नियम बार-बार बदलते रहते हैं, इनसे सेवा क्षेत्र के कार्य संचालन में कठिनाइयां आती हैं। अपर्याप्त आधारभूत सरंचना जिसमें सड़क, संचार सुविधाएं, बिजली, पानी की कमी जैसी समस्याएं कई बार सेवाओं के कुशल संचालन में बाधा बन जाती है।

भारत के छोटे और मध्यम उद्यम अत्यधिक श्रमप्रधान होते हैं। इनमें उत्पादन के साथ बहुत-सी सहायक सेवाओं की आवश्यकता होती है। इन सेवाओं को प्रदान करने वाले श्रमिकों को पर्याप्त मजदूरी देना और उन्हें काम पर बनाए रखना जरूरी होता है। देश के कई कुशल श्रमिक दूसरे देशों में चले जाते हैं जहां उन्हें बेहतर मजदूरी और कार्य वातावरण मिल जाता है। इस कारण इनमें अप्रशिक्षित या अकुशल कर्मचारियों को काम पर रखना पड़ता है। इसे अक्सर इन उद्यमों के उत्पादों की गुणवत्ता में कमी आ जाती और वे घरेलू और अंतरराष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों को पूरा नहीं कर पाते।

आधारभूत ढांचागत सुविधाओं की कमी के कारण व्यावसायिक संगठनों की उत्पादन और वितरण लागत अधिक हो जाती है। विश्व व्यापार संगठन के भागीदार और गैर-भागीदार देशों के साथ व्यापार और सेवाओं के क्षेत्र में भारत का व्यापार कई प्रकार की बाजार प्रवेश बाधाओं से बाधित हुआ है।

देश की अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र से जुड़ी व्यापक संभावनाएं हैं। हमारा देश एक सौ बयालीस करोड़ की विशाल जनसंख्या के साथ विश्व का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है। यहां प्रतिभाओं की कमी नहीं है। सरकार, शिक्षण संस्थाएं और तकनीकी संस्थान मिलजुल कर प्रभावी प्रयास करें और आधारभूत सरंचना का और तेजी से विकास किया जाए तो हमारी मानव शक्ति का सेवा क्षेत्र में अधिक प्रभावी ढंग से उपयोग किया सकता है।

बर्बादियों का जश्न मनाता चला गया

बाखबर

सुधीश पचौरी

ईडी की कार्रवाइयों पर बहसें चलती रहीं और हर बहस में कोई न कोई विपक्षी प्रवक्ता कहता रहा कि 'ईडी' अक्सर विपक्षी नेताओं को ही क्यों निशाने पर लेती है और दबाव में आकर सत्ता पक्ष में जाते ही कई नेता दूध के धुले कैसे हो जाते हैं?

एक ट्वीट: 'कूड़ा था कूड़ेदानी में चला गया'! यानी फिर वही कि 'तुम अगर मुझको न चाहो तो कोई बात नहीं तुम किसी और को चाहोगे तो मुश्किल होगी'! फिर होता रहा 'पलटूराम', 'पलटराम', 'पलटदास', 'गिरगिटों के भी गिरगिट'..! क्या क्या नहीं कहा गया, लेकिन 'पलटराम' ऐसे 'पित्तमार' कि एक जवाब नहीं। उनके प्रवक्ता कहिन कि वे जब भी आते हैं, सही जगह आते हैं। कई निंदक कहते दिखे कि यह 'पलटी' भी अंतिम नहीं। एक प्रवक्ता ने पहले ही कह दिया था कि वे नहीं, दूसरे ही उनकी ओर पलटते हैं। फिर 'बिहार-हित' में यह सब करना पड़ता है।

एक वरिष्ठ प्रवक्ता ने साफ किया कि हमने कांग्रेस को 'लेजिटमेसी' दिलाई, लेकिन उसके 'गठजोड़' ने हमारे साथ दगा किया। कुछ एंकर मस्त कि 'इंडी' की तो अब 'पिंडी' बन गई। जो सबको एक करने चला था वही चला गया... अब बचा क्या? एक भक्त प्रवक्ता 'मंदिर' के 'मुहूर्त' पर सवाल उठाने वालों पर कटाक्ष करते रहे कि ऐसे लोगों को पहले राहुल की 'न्याय यात्रा' के मुहूर्त के बारे पता कर लेना चाहिए कि वे किस 'मुहूर्त' में निकले कि जहां गए वहीं बंटाढार। बंगाल गए, ममता गई। बिहार गए, नीतीश गए। पंजाब से 'आप' गई। यूपी से 'सपा' गई। बचा क्या? इसे कहते हैं 'बर्बादियों का शोक मनाना फिजूल था... बर्बादियों का जश्न मनाता चला गया'। बहस में शाश्वत आक्रामक कांग्रेसी प्रवक्ता ने गाने को 'सही' किया कि 'शोक' नहीं 'सोग' है, तो जवाब आया कि 'शोक' ही से तो 'सोग' बना है... क्या गाने को इस तरह सही करके 'कटाक्ष' को 'मंजूरी' दी जा रही थी? जरा-सी ढीली गेंद और लगा 'छक्का'! पूरे सप्ताह 'ईडी' खबरों में रही। इधर दो मुख्यमंत्रियों को समन पर समन, लेकिन वाह मुख्यमंत्री, कि समन ठेंगे से। एक को नौवां समन और वह इकतालीस घंटे गायब! इधर विपक्ष ने चिपकाया 'गुमशुदा की तलाश' वाला पोस्टर कि 'खबर देने वाले को ग्यारह हजार का इनाम' और उधर 'नौ समन वाले' मुख्यमंत्री के घर पर 'ईडी' के छापे। दो बीएमडब्लू और छत्तीस लाख नकद बरामद। इसके बाद मुख्यमंत्री अचानक पूछताछ के लिए हाजिर और गिरफ्तार।

फिर एक दिन लालू जी और एक दिन बेटा तेजस्वी 'ईडी' के सामने हाजिर और वही दृश्य कि आगे-आगे नेताजी पीछे-पीछे पीछे समर्थक जी नारे लगाते कि अपना नेता कैसा हो! इसे देख एक भक्त प्रवक्ता बोले 'एक तो चोरी ऊपर से सीना जोरी'! ईडी की कार्रवाइयों पर बहसें चलती रहीं और हर बहस में कोई न कोई विपक्षी प्रवक्ता कहता रहा कि 'ईडी' अक्सर विपक्षी नेताओं को ही क्यों निशाने पर लेती है और दबाव में आकर सत्ता पक्ष में जाते ही कई नेता दूध के धुले कैसे हो जाते हैं? विपक्ष इसे भाजपा की 'वाशिंग मशीन' कहता है और सत्ता के प्रवक्ताओं के पास इस आरोप का कोई तसल्लीबख्श जवाब अक्सर नहीं दिखता!

इसी बीच विपक्ष एक बड़े नेता ने देश को चेताया कि वोट देने का यह आखिरी मौका है... इसके बाद चुनाव नहीं होगा... डर के कोई दोस्ती छोड़ रहा है, कोई पार्टी छोड़ रहा है। इतने डरपोक लोग हैं तो ये क्या मुल्क को बचाएंगे..! डरा विपक्ष कहता है कि सत्ता हमसे डरी हुई है, इसीलिए हमें डराती रहती है, लेकिन हम डरने वाले नहीं! ऐसे 'डरे निडरे' वीरों को हमारा सादर नमन!

इसी बीच 'प्राण प्रतिष्ठा' में शामिल होने वाले इमाम इलियासी को फतवा दे दिया गया तो कई चैनल बहसने लगे कि इस देश में फतवा चलेगा या कानून? इलियासी बोले कि मुझसे माफी मांगने को कहा गया है, लेकिन सुन लो मेरी बात कि मैं न झुका हूं, न झुकूंगा... ये बदलता भारत है।

फिर दो-दो हिलाने वाली खबरें एक साथ आईं कि मंदिर तो हो गया अब समान नागरिक संहिता (यूसीसी) और नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) लाना है। एक अंग्रेजी एंकर आकुल दिखा कि इधर भाजपा अपना एजंडा लेकर आगे बढ़ रही है, उधर विपक्ष एकदम 'अचंभित और भ्रमित है। एक मंत्री कह दिए कि 'यूसीसी' पूरे देश में लागू करेंगे।

फिर एक खबर आई कि अब तक अयोध्या में दर्शनार्थियों का तांता लगा है, पहले पांच दिन में इक्कीस लाख श्रद्धालु 'रामलला' के दर्शन कर चुके है। पांच करोड़ रुपयों का चढ़ावा आ चुका है। बहुत-सा चढ़ावा 'आनलाइन' आ रहा है।

और फिर आया बजट सत्र! वित्तमंत्री ने अंतरिम बजट पेश किया, जिसमें लोकप्रियतावाद का तत्त्व न देख, विपक्ष बोला कि ये कैसा बजट, न रोजगार की बात न किसान की फिर भी संसद शांति से चलती रही।

और फिर आई प्रधानमंत्री की दो बार 'राम राम'! पहली 'राम राम' अभी के लिए, दूसरी 'राम राम' चौबीस के लिए अग्रिम में! आश्चर्य कि विपक्ष इस 'राम राम' से कतरा के निकल गया! चलते चलते: झारखंड में हेमंत सोरेन की 'पत्नी' की जगह नए मुख्यमंत्री के रूप में 'चंपई सोरेन' की शपथ! संविधान जिंदाबाद!

www.readwhere.com

खबर कोना

तेंदुए ने गाय को मार डाला, ग्रामीणों में दहशत

जनसत्ता संवाददाता
ग्रेटर नोएडा, 3 फरवरी।

थाना बादलपुर कोतवाली क्षेत्र के एक गांव में डेयरी में घुसकर तेंदुए ने गाय को मार डाला। घटना से ग्रामीणों में दहशत है। सूचना पर पहुंची वन विभाग की टीम ने जांच के बाद श्वान (कुत्ता) प्रजाति के जंगली जानवर की आशंका जताई है। कचैडा वारसाबाद गांव निवसी राज सिंह कप्तान का घर में पशुपालन करते हैं और दूध की डेयरी चलाते हैं। शुक्रवार रात में तेंदुआ उनके घर में घुस गया और गाय को मार डाला।

कर्मचारी के अपंग होने पर चार के खिलाफ मुकदमा

जनसत्ता संवाददाता
नोएडा, 3 फरवरी।

सेक्टर- 94 स्थित सुपरनोवा कंपनी के निदेशक, प्रबंधक और ठेकेदार समेत चार लोगों के खिलाफ थाना सेक्टर-126 में मुकदमा कराया गया है। इस कंपनी में लोहे की सीढ़ी गिरने से सुपरवाइजर के घायल हो गया था। सुपरवाइजर की पत्नी ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उसके पति सुभाष कंपनी में सुपरवाइजर थे। कुछ समय पहले काम के दौरान लोहे की सीढ़ी से नीचे गिरने के कारण सुभाष की रीढ़ की हड्डी, चार पस्ली और एक बाजू टूट गई।

बकाएदारों के खिलाफ विशेष अभियान कल से

जनसत्ता संवाददाता
नोएडा, 3 फरवरी।

विद्युत निगम के बकाएदारों के खिलाफ सोमवार से विशेष अभियान चलाया जाएगा। इसके तहत भुगतान नहीं करने वाले उपभोक्ताओं का कनेक्शन काटा जाएगा। विद्युत निगम के अधिकारियों के अनुसार 75 हजार उपभोक्ताओं पर 210 करोड़ रुपए से अधिक का बिल बकाया था। तीन फरवरी तक करीब 15 हजार लोगों ने करीब दस करोड़ रुपए जमा करा दिए। शेष उपभोक्ताओं के खिलाफ अभियान चलाया जाएगा।

भ्रष्टाचार के आरोपों पर जानकारी देने की अनुमति

आरटीआइ के तहत सीबीआइ को पूरी तरह छूट नहीं : हाई कोर्ट

नई दिल्ली, 3 फरवरी (भाषा)

दिल्ली उच्च न्यायालय ने कहा है कि केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआइ) सूचना का अधिकार (आरटीआइ) अधिनियम के दायरे से पूरी तरह बाहर नहीं है तथा यह कानून जांच एजेंसी को भ्रष्टाचार और मानवाधिकार उल्लंघन से संबंधित जानकारी प्रदान करने की अनुमति देता है। आरटीआई अधिनियम की धारा 24 (कुछ संस्थाओं पर लागू नहीं होने वाला प्रावधान) पर गौर करते हुए उच्च न्यायालय ने कहा कि इससे पता चलता है कि भले ही सीबीआइ का नाम इस कानून की दूसरी अनुसूची में दर्ज है, फिर भी इसका मतलब यह नहीं है कि संपूर्ण कानून ऐसी संस्थाओं पर लागू नहीं होता है।

न्यायमूर्ति सुब्रमण्यम प्रसाद ने 30 जनवरी को पारित एक आदेश में कहा कि धारा 24 का प्रावधान भ्रष्टाचार और मानवाधिकार उल्लंघन के आरोपों से संबंधित जानकारी आवेदक को उपलब्ध कराने की अनुमति देता है और इसे आरटीआइ अधिनियम की दूसरी अनुसूची में उल्लेखित संस्थाओं को प्रदान किए गए अपवाद में शामिल नहीं किया जा सकता है। यह आदेश शुक्रवार देर शाम उपलब्ध हो पाया।

केंद्रीय सूचना आयोग के नवंबर 2019 के फैसले को अदालत में दी गई थी चुनौती।

उच्च न्यायालय ने सीबीआई की उस याचिका पर यह आदेश पारित किया, जिसमें केंद्रीय सूचना आयोग (सीआईसी) के नवंबर 2019 के फैसले को चुनौती दी गई थी। फैसले में जांच एजेंसी को भारतीय वन सेवा (आईएफएस) के अधिकारी संजीव चतुर्वेदी को कुछ जानकारी प्रदान करने का निर्देश दिया गया था। चतुर्वेदी ने अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के जय प्रकाश नारायण एपेक्स ट्रॉमा सेंटर के मेडिकल स्टोर के लिए कीटाणुनाशक और घोल सामग्री की खरीद में कथित भ्रष्टाचार के बारे में जानकारी मांगी थी। चतुर्वेदी उस समय एम्स के मुख्य सतर्कता अधिकारी थे, जब उन्होंने ट्रॉमा सेंटर के लिए की जा रही खरीद में कथित भ्रष्टाचार के संबंध में एक रिपोर्ट भेजी थी। इसके अलावा, चतुर्वेदी ने मामले में सीबीआई द्वारा की गई जांच से संबंधित फाइल नोटिंग या दस्तावेजों या पत्राचार की प्रमाणित प्रति भी मांगी थी।

अधिकारी के मुताबिक, चूंकि सीबीआइ ने उनके द्वारा दी गई जानकारी पर कोई कार्रवाई नहीं की, इसलिए उन्होंने जांच एजेंसी के केंद्रीय लोक सूचना अधिकारी (सीपीआईओ) से संपर्क किया। सीबीआई द्वारा जानकारी देने से इनकार करने के बाद, चतुर्वेदी ने सीआईसी का रुख किया, जिसने केंद्रीय एजेंसी को उन्हें विवरण प्रदान करने का आदेश दिया। इसके बाद सीबीआइ ने सीआईसी के 2019 के आदेश को चुनौती देते हुए उच्च न्यायालय का रुख किया। सीबीआइ ने दलील दी थी कि आरटीआई कानून की धारा 24 पूर्ण प्रतिबंध के रूप में कार्य करती है और एजेंसी को अधिनियम के प्रावधानों से छूट दी गई है। इसने तर्क दिया कि धारा 24 का प्रावधान सीबीआइ पर लागू नहीं होता है और एजेंसी अपनी जांच के विवरण का खुलासा नहीं कर सकती है।

अंदाज

नई दिल्ली में शनिवार को न्याय संकल्प कार्यकर्ता सम्मेलन के दौरान बीन बजाते कांग्रेस समर्थक।

नोएडा में भूखंड दिलाने के नाम पर 90 लाख रुपए ठगे, मुकदमा

जनसत्ता संवाददाता
नोएडा, 3 फरवरी।

सेक्टर-44 में रहने वाले एक व्यक्ति ने दो लोगों पर कंपनी के लिए भूखंड दिलाने का झांसा देकर 90 लाख रुपए की धोखाधड़ी करने का आरोप लगाया है। न्यायालय के आदेश पर मुकदमा दर्ज किया गया है।

न्यायालय में दिए प्रार्थना पत्र में आलोक कुमार ने बताया कि वह इंडक्टस लिमिटेड कंपनी के निदेशक हैं। 2018 में उन्हें कंपनी का कार्यालय बनाने के लिए जमीन खरीदनी थी। इस दौरान राकेश चौधरी और अमन चौधरी से मुलाकात हुई। दोनों ने उनकी पत्नी अनुराधा सिन्हा को बताया कि वह सेक्टर-162 गुलावली स्थित भूखंड संख्या- एक, 487 वर्ग गज क्षेत्रफल के मालिक हैं। 15 जून 2018 को उनके सेक्टर 2 स्थित उनके आफिस में भूखंड का इकरारनामा हुआ। आरोपियों ने इस सौदे के नाम पर 60 लाख रुपए खाते में स्थानांतरित करा लिए और 30 लाख गनगद लिए। प्राधिकरण में जांच कराने पर पता चला कि जिस भूखंड को आरोपियों ने बेचा है, वह उनके नाम पर नहीं है।

कबाड़ माफिया रवि काना और उसका साथी भगोड़ा घोषित

नोएडा, 3 फरवरी (भाषा) ।

गौतमबुद्ध नगर जिले स्थित एक मॉल की पार्किंग में युवती से कथित सामूहिक बलात्कार मामले में मुख्य आरोपी और कबाड़ माफिया रवि काना और उसके साथ महकी को भगोड़ा घोषित कर दिया गया है। पुलिस ने शनिवार को यह जानकारी दी।

युवती से कथित बलात्कार के मामले में मुख्य आरोपी है काना।

पुलिस ने बताया कि लंबे समय से फरार चल रहे दोनों आरोपियों के घर के बाहर शनिवार को नोटिस चस्पा किया और मुनादी कराई। जल्द ही आरोपियों की संपत्ति कुर्क करने की कार्रवाई की जाएगी और दोनों की संपत्तियों को चिह्नित किया जा रहा है। सूत्रों ने बताया कि दोनों आरोपियों के नेपाल के रास्ते विदेश भागने के कयास लगाए जा रहे हैं। पुलिस काना के तीन साथियों को पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है। पुलिस ने बताया कि रवि काना के खिलाफ नोएडा सेक्टर-39 थाने में एक युवती से सामूहिक दुष्कर्म का मामला दर्ज है।

आरोप है कि रवि और उसके साथियों ने नौकरी देने के नाम पर युवती को मॉल में बुलाया और पार्किंग में बंदूक की नोक पर उसके साथ बलात्कार किया एवं जान से मारने की धमकी दी।

एम्स ने बीमारी के कारण दिव्यांग हुए युवाओं के लिए रोजगार के रास्ते खोले

रोजगार महानिदेशालय और श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के साथ किया समझौता

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली , 3 फरवरी।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) ने 'रुमेटोलॉजिकल' दिव्यांगता से जूझ रहे रोगियों की रोजगार क्षमता बढ़ाने, कौशल प्रमाणन की सुविधा प्रदान करने और उनके लिए नये व्यावसायिक रास्ते खोलने के लिए रोजगार महानिदेशालय और श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। एम्स ने एक बयान में कहा कि श्रम शक्ति भवन में एक फरवरी को एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर कार्यक्रम के जरिए होने वाला यह सहयोग 'रुमेटोलाजिकल' बीमारियों से पीड़ित व्यक्तियों के जीवन को बेहतर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। 'रुमेटोलाजी' विभाग के तहत गठिया, अस्थियों के जोड़ में सूजन आदि का इलाज किया जाता है।

एम्स में 'रुमेटोलाजी' विभाग की अध्यक्ष डा उमा कुमार ने इस योजना के लिए लंबी कवायद की। उन्होने खास कर युवा आबादी को प्रभावित करने वाली इस बीमारी से लाचार हुए युवाओं की पीड़ा रोज ओपीडी में देखने के साथ ही इसकी कोशिश शुरू कर दी थी। उन्होने कहा कि यह समझौता ज्ञापन उन लोगों के लिए आशा की एक किरण है जो रुमेटिक स्थितियों के कारण दिव्यांगता से जूझ रहे हैं। यह कौशल प्रमाणन और सार्थक रोजगार का मार्ग प्रदान करता है।

इस पहल का उद्देश्य देखभाल करने वालों के बोझ को कम करना और इन रोगियों के लिए जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है। कुमार ने दिव्यांगों को कार्यबल में एकीकृत करने की दिशा में रोजगार महानिदेशालय के प्रयासों की सराहना की।

बैंक ऑफ़ बड़ौदा Bank of Baroda

विभव खण्ड शाखा
4/765, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ- 226010
फोनः 0522-2306768, फोनः vibhav@bankofbaroda.com

अधिग्रहण सूचना (नियम 8(1) अचल/चल सम्पत्ति हेतु)

प्रतिभूतिकरण व वित्तीय आस्तियों का पुनर्निर्माण और प्रतिभूति हित का प्रवर्तन अधिनियम 2002 के अन्तर्गत अधोहस्ताक्षरी **बैंक ऑफ बड़ौदा** का प्राधिकृत अधिकारी है और प्रतिभूति हित प्रवर्तन नियम 2002 की उपधारा 13(12) नियम 3 के साथ पठनीय के अन्तर्गत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए अधोहस्ताक्षरी द्वारा निम्नलिखित खाते के सम्मुख उल्लिखित धनराशि के सम्बन्ध में (जिसका सम्पूर्ण विवरण नीचे उल्लिखित है) सम्बन्धित उधारकर्ताओं से मांग की गयी थी कि वे उक्त नोटिस प्राप्त होने की दिनांक से 60 दिन के अन्दर ऋण राशि चुकता कर दें। चूँकि सम्बन्धित ऋणी/जमानतदार के द्वारा ऋण राशि चुकता नहीं की गयी है, इसलिए ऋणी/जमानतदार व आम जनता को एतद्द्वारा सूचित किया जाता है कि अधोहस्ताक्षरी ने उक्त अधिनियम की धारा 13(4) नियम 8 के साथ पठनीय के अन्तर्गत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए नीचे लिखी सम्पत्तियों को कब्जे में लिया है। विशेष तौर पर ऋणी/जमानतदार/बंधककर्ता और सामान्य तौर पर आम जनता को एतद्द्वारा सूचित किया जाता है कि उक्त सम्पत्तियों के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की खरीद-फरोख्त न करें। इन सम्पत्तियो के सम्बन्ध में किसी भी खरीद-फरोख्त हेतु बैंक ऑफ बड़ौदा को देय राशि व उस पर देय ब्याज के अनुक्रम में प्रभार नोट किया जाएगा। उधारकर्ता का ध्यान प्रतिभूतिकृत आस्तियों को विमुक्त करने के लए उपलब्ध समय-सीमा के संदर्भ में, उक्त अधिनियम की धारा 13(8) के प्रावधानों की ओर आकृष्ट किया जाता है।

अचल/चल सम्पत्ति का विवरण

क्र. सं.	ऋणीयों/ जमानतदारों/प्रोपराइटर/ कानूनी उत्तराधिकारी का नाम व पता	अचल/चल सम्पत्ति का विवरण	मांग सूचना की तिथि/ अधिग्रहण की तिथि/ बकाया धनराशि
1	ऋणकर्ता के कानूनी उत्तराधिकारी (ऋणकर्ता मृतक) श्रीमती सीमा यादव (विधिक उत्तराधिकारी) पत्नी स्व0 आकाश यादव, न्यू रामा ऑटोमोबाइल्स और मशीनरी स्टोर के प्रोपराइटर और मास्टर दिव्यांश यादव (नाबालिक विधिक उत्तराधिकारी) अपने वास्तविक संरक्षक के माध्यम से श्रीमती सीमा यादव पत्नी स्व0 आकाश यादव, न्यू रामा ऑटोमोबाइल्स और मशीनरी स्टोर के प्रोपराइटर और जमानतकर्ता (जमानतकर्ता मृतक) के विधिक उत्तराधिकारी श्री सुरेश यादव (विधिक उत्तराधिकारी) पुत्र स्व0 भेष नारायण यादव	सम्पत्ति के सभी भाग व हिस्सों सहित मकान सं. 18/30, विनय खण्ड – 5, बेल्हा, मौजा- उजरियांवा, लखनऊ – 226010, क्षेत्रफलः 130.11 वर्ग मी., मालिकः स्व0 श्री भेष नारायण यादव पुत्र स्व0 महादीर यादव, चौहद्दीः उत्तरः भेष नारायण मुस्तारी का मकान, दक्षिणः सड़क, पूर्वः मनोहर सिंह का मकान, पश्चिमः नन्हे का मकान	27.09.2023 01.02.2024 रू. 7,15,627.65/- एवं उस पर ब्याज

स्थान : लखनऊ दिनांक : 04.02.2024 प्राधिकृत अधिकारी, बैंक ऑफ बड़ौदा

बहन पर कूटरचित हस्ताक्षर कर दो फ्लैट बेचने का आरोप, रपट दर्ज

नोएडा, 3 फरवरी (संवाददाता)।

बहन ने भाइयों के कूटरचित हस्ताक्षर कर दो फ्लैट अपने नाम कराने के बाद बेच दिए। जालसाजी के शिकार हुए सेवानिवृत कर्नल और उनके भाई ने बहन समेत चार के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है।

सेक्टर-50 स्थित अंतरिक्ष ग्रीन सोसाइटी में रहने वाले सेना से सेवानिवृत रिटायर्ड कर्नल भानु प्रीत सिंह सैनी व उनके भाई हरप्रीत सिंह सैनी ने बताया कि उनके पिता के नोएडा में दो फ्लैट थे। जिनमें से एक उनकी माता और पिता के नाम पर पंजीकृत था। जबकि दूसरा फ्लैट उनके पिता और तालाकशुदा बहन ज्योति सैनी के नाम पर पंजीकृत था। ज्योति ने कूटरचित दस्तावेज बनाकर एक फ्लैट का उत्परिवर्तन (म्यूटेशन) अपने नाम करा सितंबर 2022 में इसे मानिक वाधवा को बेच दिया।

'व्यभिचारी जीवनसाथी अक्षम अभिभावक के समान नहीं'

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली , 3 फरवरी।

दिल्ली उच्च न्यायालय ने एक मामले में फैसला सुनाया है कि व्यभिचारी जीवनसाथी एक अक्षम अभिभावक के समान नहीं है और किसी व्यक्ति का विवाहेतर संबंध उसे बच्चे की अभिरक्षा से वंचित करने संबंधी निर्णय लेने का एकमात्र आधार नहीं हो सकता। उच्च न्यायालय ने कहा कि तलाक की कार्रवाई और बच्चों की अभिरक्षा के मामले आपस में जुड़े हो सकते हैं, लेकिन वे हमेशा 'परस्पर असंबद्ध' होते हैं।

न्यायमूर्ति सुरेश कुमार कैत और न्यायमूर्ति नीना बंसल कृष्णा की पीठ ने कहा कि भले ही माता-पिता में किसी के विवाहेतर संबंध साबित हुए हैं तो भी उसे बच्चों की अभिरक्षा प्राप्त करने से तबतक वंचित नहीं कर सकते जब तक कि यह साबित करने के लिए कुछ और न हो कि इस तरह के व्यभिचारी कृत्य से बच्चे का कल्याण प्रभावित हुआ है। अदालत एक व्यक्ति और उसकी पत्नी द्वारा उनकी 12 और 10 साल की दो नाबालिग बेटियों की संयुक्त अभिरक्षा देने के पारिवारिक अदालत के आदेश के खिलाफ दायर अपीलों पर सुनवाई कर रही थी। महिला ने आरोप लगाया कि उसका पति लापरवाह, गैर-जिम्मेदार था और लगभग ढाई साल तक उसे और दो बच्चों को छोड़कर किसी आश्रम व अज्ञात स्थान पर चला गया था। पुरुष ने दावा किया कि पत्नी की ओर से बच्चों की अभिरक्षा के लिए दायर याचिका तलाक की याचिका के जवाब में थी, जो उसने क्रूरता और व्यभिचार के आधार पर मांगी थी।

उच्च न्यायालय ने कहा, किसी व्यक्ति का विवाहेतर संबंध उसे बच्चे की अभिरक्षा से वंचित करने संबंधी निर्णय लेने का एकमात्र आधार नहीं हो सकता।

बैंक ऑफ़ इंडिया Bank of India **BOI**

अधिग्रहण सूचना

यद्यपि प्राधिकृत अधिकारी बैंक ऑफ इण्डिया द्वारा वित्तीय अस्तियों का प्रतिभूतिकरण एवं पुर्नगठन और प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम 2002 की धारा 13(12) और प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियम 2002 की सपठित नियम 3 के तहत प्रदत्त शक्तियों के अनुप्रयोग में मांग सूचना जारी की गई थी तथा ऋणी को मांग सूचना में उल्लिखित धनराशि जिसका विवरण नीचे दिया गया है, का भुगतान सूचना प्राप्ति के 60 दिनों के भीतर करने को कहा गया था। ऋणगृहिता के द्वारा यह राशि लौटाने में विफल होने पर ऋणगृहिता और सर्वसाधारण को एतद्द्वारा सूचना दी जाती है कि अधोहस्ताक्षरकर्ता ने उक्त एक्ट की धारा 13 (4) सपठित उप नियम 8 के तहत प्रदत्त शक्तियों के अनुप्रयोग में एतस्मिन नीचे वर्णित सम्पत्तियों का आधिपत्य ग्रहण कर लिया गया है। ऋणगृहिता को विशिष्ट रूप से और सर्वसाधारण को सामान्य रूप से एतद्द्वारा सम्पत्ति के साथ व्यवहार (क्रय-विक्रय) नहीं करने की चेतावनी दी जाती है और निम्नलिखित सम्पत्ति का किसी प्रकार से कोई क्रय-विक्रय बैंक ऑफ इण्डिया के पक्ष में देय बकाया राशि, ब्याज एवं अन्य व्यय के भार के अधीन होगा। **ऋणी को सुरक्षित परिसम्पत्ति के आधार पर धारा 13 के उपधारा (8) के प्रावधान के अन्तर्गत दिये गये समय में आमंत्रित कर रहे हैं।**

क्र. सं.	उधारकर्ता/जमानतकर्ता का नाम व पता	बंधक सम्पत्ति का विवरण / सम्पत्ति मालिक का नाम	बकाया धनराशि (₹) धारा 13(2) के अनुसार मांग सूचना/अधिग्रहण की तिथि
शाखाः धरौली			
1	**ऋणीः मेसर्स अमन राइस उद्योग**, पताः रेवाधा पोस्ट ऑफिस मंझेला तहसील रामसनेही घाट,बाराबंकी। **पार्टनरः 1. श्री सपन कुमार जैन** पुत्र श्री अरूण कुमार, **2. श्री नितिन कुमार** जैन पुत्र श्री प्रदीप कुमार जैन, दोनों निवासी मोहल्ला सरौंगी टिकैतनगर, तहसील सिरौलीगौसपुर, जिला बाराबंकी। **जमानतकर्ता/बंधककर्ताः 1. श्री प्रदीप कुमार जैन** पुत्र स्व0 साहब लाल जैन, **2. श्री वीर कुमार जैन** पुत्र कस्तूरमल जैन, दोनों निवासी सरौली करबा टिकैत नगर, तहसील सिरौलीगौसपुर, जिला बाराबंकी।	सम्पत्ति के सभी भाग एवं खण्ड प्लॉट खसरा सं0 125, 126, 127, 128, 129 स्थित ग्राम रेवढ़ा परगना-दरियाबाद, तहसील राम सनेही घाट, पंजीकरण के अंतर्गत उप-जिला राम सनेही घाट एवं जिला बाराबंकी, **क्षेत्रफलः** 1.012 हेक्टेयर, **स्वामीः 1. श्री प्रदीप कुमार जैन** पुत्र स्व0 साहब लाल जैन, **2. श्री वीर कुमार जैन** पुत्र कस्तूरमल जैन, **चौहद्दीः पूर्वः** चक मार्ग बाद में खेत, **पश्चिमः** चक मार्ग बाद में खेत, **उत्तरः** खसरा प्लॉट सं0 140, **दक्षिणः** भेलसर-टिकैतनगर रोड।	₹ 7,46,236.03 + ब्याज एवं खर्च मांग सूचना की तिथि 22.11.2023 कब्जा सूचना की तिथि 03.02.2024

दिनांकः 04.02.2024, स्थानः लखनऊ प्राधिकृत अधिकारी, बैंक ऑफ इण्डिया

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक (भारत सरकार का उपक्रम) **INDIAN OVERSEAS BANK** (A GOVERNMENT OF INDIA UNDERTAKING)

क्षेत्रीय कार्यालय-लखनऊ | केन्द्रीय कार्यालय-चेन्नई

कब्ज़ा नोटिस [नियम 8(1)]

वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण एवं पुनर्गठन और प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम 2002, (अचल सम्पत्ति हेतु)

अधोहस्ताक्षरकर्ता ने इण्डियन ओवरसीज़ बैंक का प्राधिकृत अधिकारी होते हुए वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण एवं पुनर्गठन और प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम 2002 की धारा 13 (12) के सपठित नियम 3 के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए मांग सूचनापत्र से यहाँ विस्तृत रूप से नीचे दी गयी राशि 60 दिनों के भीतर लौटाने के लिए निर्गमित किया।

ऋणी के यह राशि लौटाने में विफल होने पर **ऋणी/बंधककर्ता/जमानतकर्ता** और सर्वसाधारण को एतद्वारा सूचना दी जाती है की अधोहस्ताक्षरकर्ता ने उक्त अधिनियम की धारा 13 (4) सपठित उक्त नियम के नियम 8 के तहत उसको प्रदत्त शक्तियों के अनुप्रयोग में निम्नलिखित सम्पत्तियों का प्रतीकात्मक आधिपत्य ग्रहण कर लिया गया है।

ऋणी/बंधककर्ता/जमानतकर्ता को विशिष्ट रूप से और सर्व-साधारण को सामान्य रूप से एतद्वारा संपत्ति के साथ व्यवहार (क्रय-विक्रय) नहीं करने की चेतावनी दी जाती है और उक्त संपत्ति का किसी भी प्रकार से क्रय-विक्रय **इण्डियन ओवरसीज़ बैंक**, के प्रभारों के अधीन होगा, जैसा कि बकाया राशि व ब्याज खातों के सामने उल्लिखित है।

ऋणी/बंधककर्ता/जमानतकर्ता का ध्यान प्रतिभूति आस्तियों के मोचन के लिए उपलब्ध समय के संदर्भ में अधिनियम की धारा 13 की उपधारा (8) के उपबंधों की ओर आकृष्ट किया जाता है।

विवरण निम्नुसार हैं:-

क्र. सं.	ऋणी/बंधककर्ता का नाम एवं पता	अचल सम्पत्ति का विवरण	डिमाण्ड नोटिस की तिथि कब्जा की तिथि बकाया धनराशि
	शाखा-अमीनाबाद शाखा(0382), गंगा प्रसाद वर्मा मेम सोसायटी बिल्डिंग, अमीनुद्दौला पार्क, लखनऊ-226016, फोन 8233276450, ई-मेलः iob0382@iob.in		
1.	**(1) स्व. जफर अली पुत्र स्व. मोहम्मद अली के कानूनी उत्तराधिकारी- (i) फरजाना जफर पत्नी स्व. जफर अली, (ii) मो. सऊद जफर पुत्र स्व. जफर अली, (iii) मो. समीर जफर पुत्र स्व. जफर अली, (iv) अनमत जफर पुत्री स्व. जफर अली,** सभी निवासी 39 लक्ष्मण प्रसाद रोड, (अली ब्रदर शॉप), वजीरगंज लखनऊ – 226018 **(2) फरजाना जफर पत्नी स्व. जफर** निवासीः 39 लक्ष्मण प्रसाद रोड, (अली ब्रदर शॉप), वजीरगंज लखनऊ – 226018	**(1)** मकान नंबर 194/39, स्थित लक्ष्मण प्रसाद रोड, वार्ड-वजीरगंज, जिला-लखनऊ-226018, **क्षेत्रफल-26.765 वर्ग मीटर, फरजाना जफर पत्नी स्व. जफर अली के स्वामित्व में, चौहद्दीः-उत्तर-** विनोद कुमार का मकान, **दक्षिण**-मकान का बाकी हिस्सा उसके बाद लक्ष्मण प्रसाद रोड, **पूर्व**-4 फीट गली, **पश्चिम**-हाजी मोहम्मद जाकिर का मकान **(2)** कामर्शियल शॉप मकान नंबर 194/39 के हिस्से में निर्मित भूतल पर, स्थित लक्ष्मण प्रसाद रोड, वार्ड-वजीरगंज, जिला-लखनऊ-226018, **क्षेत्रफल-13.382 वर्ग मीटर, फरजाना जफर पत्नी स्व. जफर अली के स्वामित्व में, चौहद्दीः-उत्तर-** आराजी विक्रेता, **दक्षिण**-20 फीट चौड़ी सड़क, **पूर्व**-अराजी विक्रेता, **पश्चिम**- हाजी मोहम्मद जाकिर का मकान	16.11.2023 01.02.2024 रू. 20,66,647.18 + भविष्य का ब्याज संविदात्मक दर पर एवं अन्य खर्चे आदि
	शाखा लखनऊ मुख्य शाखा, (0207) 3, विधान सभा मार्ग, लखनऊ, फोन 0522-493 31151/153, ई-मेलः iob0207@iob.in		
2.	**(1) श्री अशोक कुमार गुप्ता (ऋणी/बंधककर्ता), (2) श्रीमती निहारिका पटेल (ऋणी/बंधककर्ता)** दोनों का स्थायी पताः प्लॉट नंबर 15, खसरा नंबर 26स, मकान नंबर 616/पी-015 (के-266)), सेमरा गौरी, वार्ड फजुल्लाह गंज, लखनऊ। दोनों का पत्राचार का पताः 495/65 माया नगर, शंकर नगर चौराहा, डालीगंज, लखनऊ	प्लॉट नंबर 15, खसरा नंबर 26स, मकान नंबर 616/पी-015 (के-266), सेमरा गौरी, वार्ड फैजुल्लाह गंज, लखनऊ, **श्री अशोक कुमार गुप्ता और श्रीमती निहारिका पटेल के स्वामित्व में, क्षेत्रफल-3200 वर्ग फीट (297.397 वर्ग मीटर), चौहद्दीः-पूर्व**-27 फीट चौड़ा रास्ता, **पश्चिम**-आरजी दीगर, **उत्तरः** प्लॉट नंबर 14, **दक्षिणः** प्लॉट नंबर 16	18.10.2023 न्यूज़ पेपर प्रकाशन दिनांक-19.11.2023 02.02.2024 रू. 27,98,202.09 + भविष्य का ब्याज संविदात्मक दर पर एवं अन्य खर्चे आदि

दिनांकः 04.02.2024 स्थानः लखनऊ प्राधिकृत अधिकारी, इण्डियन ओवरसीज़ बैंक

ADITYA BIRLA CAPITAL

आदित्य बिड़ला हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड
पंजीकृत कार्यालयः इंडियन रेयॉन कंपाउंड, वेरावल, गुजरात- 362266
शाखा कार्यालयः तीसरी मंजिल, कैपिटल हाउस, 2-तिलक मार्ग, लखनऊ-226001

परिशिष्ट IV [सुरक्षा हित (प्रवर्तन) नियम, 2002 का नियम 8(1) देखें]
कब्जा सूचना (अचल संपत्ति के लिए)

जबकि, अधोहस्ताक्षरी वित्तीय संपत्तियों के प्रतिभूतिकरण और पुनर्निर्माण और सुरक्षा हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 (2002 का 54) के तहत और नियम 3 के साथ पठित धारा 13(12) के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए आदित्य बिड़ला हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड का अधिकृत अधिकारी के रूप मे सुरक्षा हित (प्रवर्तन) नियम, 2002 ने दिनांक 24-11-2022 को एक मांग सूचना जारी किया था, जिसमें उधारकर्ताओं शशांक सिंह, मेसर्स जय ट्रेडर्स, बीना देवी और बीना शर्मा को नोटिस में उल्लिखित राशि रुपये 44,14,365.62/- (चवालीस लाख चौदह हजार तीन सौ रुपये पैंसठ और बासठ पैसे मात्र) उक्त नोटिस की प्राप्ति की तारीख से 60 दिनों के भीतर का पुनर्भुगतान करने के लिए कहा गया था।.

उधारकर्ताओं द्वारा राशि चुकाने में विफल रहने पर, उधारकर्ताओं और आम जनता को नोटिस दिया जाता है कि अधोहस्ताक्षरी ने उक्त अधिनियम की धारा 13(4) के तहत सुरक्षा हित (प्रवर्तन) नियम, 2002 के नियम 8 के साथ प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए नीचे वर्णित संपत्ति पर 31 जनवरी 2024 कब्जा कर लिया है।

विशेष रूप से उधारकर्ताओं और सामान्य रूप से जनता को आगाह किया जाता है कि वे संपत्ति का सौदा न करें और संपत्ति के साथ कोई भी लेनदेन रुपये की राशि के लिए आदित्य बिड़ला हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड के शुल्क रूपये 44,14,365.62/- (चवालीस लाख चौदह हजार तीन सौ रुपये पैंसठ और बासठ पैसे मात्र) और उस पर ब्याज के अधीन होगा। सुरक्षित संपत्तियों को भुनाने के लिए उपलब्ध समय के संबंध में, उधारकर्ताओं का ध्यान अधिनियम की धारा 13 की उप-धारा 8 के प्रावधानों की ओर आकर्षित किया जाता है।

अचल संपत्ति का विवरण

प्लॉट नंबर-140, 141, 142, 149 और 151 और 152 का वह सारा टुकड़ा और पार्सल 1200 वर्ग फुट, यानि 111.524 वर्ग. मीटर ग्राम खरिका तहसील और जिले लखनऊ में स्थित है। और इसकी सीमाः पूर्वः 20 फीट चौडी पश्चिम : बुधई का प्लॉटः उत्तरः 15 फीट चौडी सडक दक्षिणः विजय अवस्थी का प्लॉट।

दिनांकः 31.01.2024 प्राधिकृत अधिकारी
स्थानः लखनऊ आदित्य बिड़ला हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड

पुलिस अधिकारियों पर दर्ज हो मामला

नोएडा, 3 फरवरी।

किसानों पर बर्बरतापूर्ण कार्रवाई करने वाले पुलिस अधिकारियों के खिलाफ आजाद अधिकार सेना पार्टी एफआइआर दर्ज कराएगी। यह ऐलान आइपीएस अधिकारी रहे अमिताभ ठाकुर की पत्नी और आजाद अधिकार सेना पार्टी की राष्ट्रीय महासचिव डा. नूतन ठाकुर ने किया। उन्होंने कहा कि नोएडा के गांवों के किसान गत 51 दिनों से अपने हक के लिए आंदोलन कर रहे हैं। (जसं)

www.readwhere.com

रसिका की साइकिल

कहानी

अपर्णा चौधरी रचना

लगभग बारह वर्षों बाद रसिका अपने गांव वापस लौटी थी। दिल्ली में स्नातक कि पढ़ाई करने के बाद वह सीधे अमेरिका चली गई थी परास्नातक और शोध की शिक्षा के लिए। उसके मन मे अपने पुराने गांव की तस्वीर थी। कार से गांव की ओर जाते हुए रसिका ने ड्राइवर से पूछा कि गांव में क्या-क्या बदल गया है! ड्राइवर ने बताया कि अब गांव में बिजली और पानी की सुविधा आ गई है। लड़के-लड़कियां सब स्कूल के बाद कोचिंग में पढ़ने जाते हैं। गांव के तालाब पक्के बन गए हैं। कुओं के ऊपर छाया कर दी गई है।

रसिका ने गाड़ी से मुंह निकालकर देखा कि अब भी मड़नी चलती है या नहीं। तभी साइकिल से एक महिला को जाते देखकर उसके चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई। उसके बचपन में यह भी अपने आप में एक विशिष्ट उपलब्धि की श्रेणी में गिना जाता था। गांव की सड़क से गुजरते हुए उसे याद आया कि कैसे मोहल्ले के कई लड़के साइकिल दौड़ाते हुए निकलते थे।

शाम को महाभारत का एक अध्याय सुनाने के बाद रसिका के बाबा का निर्देश मिला कि जीवन में चिड़िया की आंख भेदने का लक्ष्य होना चाहिए और उसके लिए वह आंख साइकिल है। यह भी बताया गया कि दो दिन से ज्यादा नहीं लगेंगे, इसमे अगर मन लगा कर सीखा गया तो। तय हुआ कि जहां बाबा ताश खेलते हैं, वहां से साइकिल चलाते हुए गुजरना है, ताकि लोग जान लें कि उनकी पोती अब साइकिल चला लेती है।

रसिका पुराने दिनों में खो गई। एक पूरी रात उसके सपने में साइकिल आई। एक पांव डंडे के इस पार, दूसरा उस पार और पैडल मारना है, हैंडल संभाले रखना है। उसने सोच लिया था कि स्कूल साइकिल से जाएंगे। गाड़ी के किराए का जो पैसा बचेगा, उससे ट्यूशन फीस दी जाएगी. आखिर बड़ी बेटी थी घर की, उसे हाथ बंटाना चाहिए खर्चों में। पूरी सड़क पर साइकिल दौड़ाई जाएगी, मुहल्ले के लड़कों से भी तेज। सुबह स्कूल में सबको बता दिया कि दो दिनों बाद साइकिल से वह आएगी। रवि, सूरज, इलियास, रेखा, बिंदु... सब अचरज वाली नजरों से देख रहे थे। दोपहर के अवकाश में सबने उसे घेर लिया जानकारी के लिए। साइकिल में हवा कितनी हो, चैन कैसे चढ़ाई जाए, ग्रीस कहां-कहां लगती है. हैंडल तिरछा हो जाए तो क्या किया जाए आदि। सारे सवाल सुने गए और उनका उत्तर बहुत जल्दी देने की बात कही गई।

अगले ही दिन रसिका निकल चली साइकिल लेकर। पहली कोशिश में साइकिल में दोनों तरफ पांव करने की कोशिश की, पर ठीक दो मिनट बाद वह जमीन पर ताजा गोबर के ऊपर थी और साइकिल उसके ऊपर। रेहू की अम्मा कुआं पर कपड़े धो रही थी, फूलदुलारी आजी अपनी बहुरिया को गरियाए जा रही थी कि उसने सबेरे बिना नहाए ही रोटी सेंक दी थी, राकेश की भौजाई अपनी देवरानी के मायके से आई पेड़ियां में सिक्का न मिलने की बात से तमतमाई थी। इन सबका ध्यान रसिका पर गया। सब ठठा कर हंस पड़ीं। इसी बीच चिंटू साइकिल से 'आधी कैंची' चलाते हुए निकला। चिंटू की अम्मा अपने घर के मुहार पर खड़ी हो गई और कुएं वाली औरतों को बताने लगी कि उनके चिंटू ने कितनी जीतोड़ मेहनत की है साइकिल सीखने में। यह सबके बस की बात नहीं... जनानियों को तो बिल्कुल नहीं आएगा। अरे लड़के, लड़के होते हैं।

इस बात पर सबने हामी भरी। फाइव-जी की गति से शुकुल के लड़के ने बात पहुंचाई रसिका के बाबा को। शाम को हवेली के कठघरे में पहले तो अर्जुन ने कैसे तपस्या करके शिवजी से अस्त्र-शस्त्र प्राप्त किए, ये सुनाया गया। फिर दिन की घटना पूरे विस्तार से सुनी गई। रसिका ने अस्त्र डाल दिए और कहा कि यह साइकिल बड़ी है... पांव नहीं पहुंचते और उसे नहीं करनी ये चिंटू, पिंटू से प्रतिस्पर्धा। आखिर ये लोग भी तो खानदान के ही हैं, जरूरत पड़ी तो इन्हीं के साथ साइकिल पर बैठ लिया जाएगा। बदले में गीता का सार सुनाया गया कि कोई अपना नहीं है, प्रतिस्पर्धा में प्रतियोगी पर कोई दया नहीं। कुल मिलाकर एक ही विकल्प दिया गया जो साइकिल सीखना था, कैसे भी।

रसिका के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई कि कैसे उसने साइकिल एक पूरी प्रक्रिया से सीखी थी। पहले केवल सड़क पर यों ही साइकिल थामे घूमा करती थी। फिर आधी कैंची, फिर पूरी, इसके बाद डंडा, फिर गद्दी, फिर 'केरियल'। सब नहर किनारे उड़ती धूल में गाय-भैंसों के झुंड से बचते-बचाते सीखा था। पूरी सीख लेने के बाद साइकिल से उतरना नहीं आता था। उतरने के लिए ऊंचा स्थान देखना पड़ता था, सहारा लेने के लिए। खैर... सात-आठ दिन बाद वह भी सीख लिया था।

रसिका को आश्चर्य हुआ कि अब उसकी साइकिल वाला गांव बहुत बदल चुका था। पांच से सात मिनट के अंतर पर एक लड़की और दो महिलाएं, जो बहुएं थीं, स्कूटी चलाते हुए दिखी थीं। ड्राइवर बताने लगा कि अब गांव के लोग अपने बच्चों को साइकिल नहीं, स्कूटी दिला रहे हैं स्कूल जाने के लिए। रसिका ने ड्राइवर से कहा कि साइकिल की बात ही दूसरी थी। कितनी खुशी मिलती थी। शायद स्कूटी ने साइकिल को अप्रासंगिक बना दिया है। न बच्चों में वह उत्साह दिखता है और न ही सड़कें साइकिल चलाने वालों को कोई जगह देती हैं। इस तरह तो हमारा समाज भी मानवीय मूल्यों से दूर हो जाएगा जैसा कि अमेरिका में है और लोग प्रकृति के बजाय मशीनों पर आश्रित हो जाएंगे।

> *चिंटू* की अम्मा अपने घर के मुहार पर खड़ी हो गई और कुएं वाली औरतों को बताने लगी कि उनके चिंटू ने कितनी जीतोड़ मेहनत की है साइकिल सीखने में। यह सबके बस की बात नहीं... जनानियों को तो बिल्कुल नहीं आएगा। अरे लड़के, लड़के होते हैं। इस बात पर सबने हामी भरी।

ड्राइवर मुस्कुराया और बोला, 'दीदी अगर आपको अमेरिकी समाज से इतनी शिकायतें है तो आप खुद वहां क्यों गई?' रसिका ने सोचने की कोशिश की कि इस बात का जवाब क्या दिया जाए। शायद इसका कोई उपयुक्त जवाब उसके पास नहीं था। ड्राइवर ने आगे कहा- 'विदेश में रहने वाले लोग खुद तो अच्छा जीवन जीते हैं, पर हम लोगों से उनकी उम्मीद यह रहती है कि हम गोबर-मिट्टी में ही सने रहें।'

रसिका सोचने लगी कि शायद जीवन कि लय और गति यही है। चीजें बदलती रहनी चाहिए। इस बीच ड्राइवर ने कहा, 'जैसा आप आज के दस बरस पहले सोचती थी या करती थीं, क्या आज वैसा सोचती हैं या करती हैं?'

रसिका ने उसकी ओर ध्यान से देखा, मानो जीवन का सारा दर्शन उसे इसी ड्राइवर से मिलने वाला हो। रसिका ने पूछा, 'तो क्या तुम अपने बचपन को विस्मृत कर चुके हो?' ड्राइवर भी रसिका की उम्र का ही था और पास के गांव मे रहता था। उसने जवाब में कहा, 'जो पिछड़ापन हमारी पीढ़ी में रहा, वह आगे की पीढ़ी में न रहे। यही अच्छा है कि हम आगे बढ़ें, न कि पीछे लौटें।' रसिका को यह बात जंची और उसने सोचा कि विकल्पों में विस्तार होते रहना चाहिए। जब वह गांव में थी, तब किसी लड़की का साइकिल चलाना सीखना ही बड़ी बात थी, पर अब लड़कियां स्कूटी चला रही हैं। उसी गांव में यह देखकर सुकून मिलता है। कुछ परिवर्तन प्रगतिशील होते हैं, यह शायद वैसा ही कुछ है। यही सोचते-सोचते वह कार से नीचे उतरी और अपने घर की ओर मुड़ गई।

अच्छी सेहत के लिए अच्छी नींद लें

नुस्खे

अच्छी सेहत के लिए अच्छी नींद लेना बहुत जरूरी होता है। जो बच्चे बोर्ड परीक्षा की तैयारी में जुटे हैं, उन्हें इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए। गहरी नींद लेने से मन और शरीर में फुर्ती बनी रहती है। अच्छी नींद के लिए अपनी कुछ आदतों में बदलाव करने की जरूरत होती है।

समय पर सोने जाएं

प्रति दिन एक ही समय पर सोने जाएं और सुबह उठें। सप्ताहांत और छुट्टियों के दिन भी स्कूल या कार्य दिवस की तरह सोना और उठना चाहिए। अपनी सामान्य दिनचर्या के एक घंटे में स्थिर रहने की कोशिश करें।

सोते समय सुकून की आदतें

बिस्तर पर सोने से आधा घंटा पहले कुछ न करें। टीवी, इलेक्ट्रानिक उपकरणों, फोन, टैबलेट आदि को दूर रखें। सोने के समय पर व्यायाम करने और खेलने से बचें। दिमाग को सुकून देने वाले काम करें, जैसे कोई किताब पढ़ना या सुकून भरा संगीत सुनना। इससे अच्छी नींद लेने में मदद मिल सकती है।

सोने की जगह

जितना संभव हो सके, सोने के लिए एक आरामदायक, अंधेरी और शांत जगह बनाने की कोशिश करें। कमरे से इलेक्ट्रानिक उपकरणों को हटा दें। नींद में खलल डालने वाली संभावित बाधाओं को कम करने की कोशिश करें, जैसे कि शोर या कमरे में लोगों का आना-जाना।

हल्का-फुल्का भोजन लें

सोने से पहले कुछ हल्का-फुल्का खाने से नींद लेने में मदद मिल सकती है। रात का भोजन हल्का-फुल्का ही होना चाहिए। भोजन करते समय ध्यान रखें कि उसमें कैफीन या शक्कर की अधिक मात्रा न हो। सोने से पहले बहुत ज्यादा खा लेने से सीने में जलन होती है, नींद लेने में मुश्किल होती है। सोडा, काफी, चाय और एनर्जी ड्रिंक में अक्सर कैफीन होता है। कुछ जूस, चुइंग गम और कैंडी बार में भी कैफीन हो सकता है।

व्यायाम की आदत डालें

दिन में शारीरिक गतिविधियां करने से रात में अच्छी नींद आती है। सुबह व्यायाम करने की कोशिश करें। रात में कोई भारी शारीरिक गतिविधि न करें, खासकर सोने से तुरंत पहले।

दिन में धूप लें

धूप लेने या दिन के समय प्रकाश में टहलने से अच्छी नींद मिलती है। सुबह नींद जल्दी खुलती है। खासकर सुबह के समय, धूप में ज्यादा देर रहें। रात में हल्की रोशनी रखें।

दिन में झपकी लें

कई लोगों मानते हैं कि 20-30 मिनट की झपकी लेने से वे आराम और अधिक ऊर्जावान महसूस करते हैं। झपकी लेना खासकर उन छोटे बच्चों और किशोरों के लिए जरूरी है, जिन्हें नींद की ज्यादा जरूरत होती है।

जबरदस्ती सोने का न करें प्रयास

जब सोने के लिए बिस्तर पर जाते हैं और आधे घंटे के भीतर नींद नहीं आ पा रही है, तो जबरदस्ती सोने का प्रयास न करें। ऐसे में उठ कर कुछ आराम देने वाली गतिविधि करना उपयोगी हो सकता है। कोई किताब पढ़ें, सुकून देने वाला संगीत सुनें।

सर्दी में आंखों का रखें ध्यान

सेहत

हालांकि आंखों की देखभाल को लेकर लोग गर्मी के दौरान खुद ही सक्रिय रहते हैं, ताकि आंखों का संक्रमण या आइ-फ्लू न हो। मगर सर्दियों में तेज ठंड, शुष्क हवा आंखों को नुकसान पहुंचा सकती है और आपकी दृष्टि को प्रभावित कर सकती है। यों भी सर्दी सेहत के लिहाज से एक संवेदनशील मौसम होता है और सभी तरह से ध्यान रखना सेहत को संभाल कर रखने की प्रक्रिया है। इस सावधानी का तहत ही इस सर्दी में अपनी आंखों की सुरक्षा के पांच तरीके ध्यान रख सकते हैं।

1 - बादलों से भरे आसमान वाले दिनों में धूप का चश्मा पहनें

हानिकारक उच्च-ऊर्जा पराबैंगनी (यूवी) किरणें बादलों के माध्यम से प्रवेश कर सकती हैं, यहां तक कि सर्दियों के सबसे छोटे, बादल वाले दिनों में भी। इसके अलावा, बर्फ से परावर्तित होने वाली रोशनी पानी से परावर्तित होने वाली रोशनी की तुलना में काफी तेज हो सकती है। वास्तव में, बर्फ अपने ऊपर पड़ने वाले प्रकाश का लगभग अस्सी फीसद परावर्तित करती है, जबकि पानी केवल पैंसठ फीसद सूर्य के प्रकाश को परावर्तित करता है।

सबसे बुरी स्थिति में, बर्फ से सूरज की चमक वास्तव में असुरक्षित आंखों को जला सकती है, जिससे बर्फ अंधापन हो सकता है, एक दर्दनाक स्थिति जिसके परिणामस्वरूप प्रकाश के प्रति संवेदनशीलता हो सकती है। सूरज की चमक के संपर्क में आने से ऐसा भी महसूस हो सकता है जैसे आपकी आंखों में रेत है।

2-आंखों की सुरक्षा करें

सर्दी के मौसम में भी आंखों में चोट लग जाती है। बर्फ हटाते समय, अपने घर पर मौसमी सजावट करते समय या सर्दियों के यार्ड में काम करते समय अपनी आंखों को चोट लगने से बचाएं।

3-'आइ ड्राप' से आंखें रखें नम

शुष्क बाहरी हवा, भट्टी या आग से निकलने वाली गर्मी, हवा और घर के अंदर प्रसारित होने वाली हवा किसी के आंसुओं को वाष्पित कर-के सूखी, खुजली वाली आंखों का कारण बन सकती है। अगर कोई व्यक्ति पहले से ही सूखी आंख से पीड़ित है तो यह ज्यादा असुविधाजनक हो सकता है। एक पुरानी स्थिति जिसमें आपका शरीर आपकी आंखों को चिकनाई देने के लिए पर्याप्त प्राकृतिक आंसू पैदा नहीं करता है, ऐसे में अपनी आंखों को नम रखने के लिए कृत्रिम आंसू या अन्य आइ ड्राप का उपयोग करें। भट्टी के छिद्रों से बहने वाली हवा को विक्षेपित करें; कमरे की हवा में नमी डालने के लिए 'ह्यूमिडिफायर' का उपयोग करें।

4-स्वच्छता का अभ्यास करें

सर्दियों में पिंक आइ, जिसे कंजंक्टिवाइटिस भी कहा जाता है। यह एक संक्रामक बीमारी है। यह स्थिति संपर्क से फैलती है, इसलिए लिफ्ट के बटन और दरवाजे के हैंडल जैसी जगहों पर बैक्टीरिया या वायरस हो सकते हैं। कंजंक्टिवाइटिस आपकी एक आंख से दूसरी आंख तक भी फैल सकता है। सर्दियों में अपनी आंखों को 'पिंकआइ' के बढ़ते खतरे से बचाने के लिए अपने हाथ बार-बार धोएं और अपनी आंखों को छूने से बचें। अगर आपकी आंख गुलाबी हो जाती है, तो नेत्रश्लेष्मलाशोथ के इलाज के लिए अपने नेत्र चिकित्सक से संपर्क करें।

5-टोपी पहनें

यूवी किरणों को अपनी आंखों से दूर रखने के लिए चौड़ी किनारी वाली टोपी पहनें।

(यह लेख सिर्फ सामान्य जानकारी और जागरूकता के लिए है। उपचार या स्वास्थ्य संबंधी सलाह के लिए विशेषज्ञ की मदद लें।)

खेलने की उम्र नहीं होती

जीवन शैली

आमतौर पर सेवानिवृत्ति के बाद बहुत सारे लोगों के सामने समस्या आती है कि वे कैसे अपना समय बिताएं। अपनी सेहत का कैसे ध्यान रखें। ऐसे में बच्चों के साथ खेलना सबसे उत्तम गतिविध है। जिनके परिवार में पोते-पोतियां हैं, उनके लिए समय बिताने और स्वस्थ रहने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि उनके साथ खेलना शुरू कर दें।

'अमेरिकन एकेडमी आफ पीडियाट्रिक्स' की 'द पावर आफ प्ले' शीर्षक एक रपट में कहा गया है कि बच्चों के साथ खेलना न केवल बच्चों के लिए, बल्कि वयस्कों के लिए भी बहुत लाभदायक होता है। वयस्क अपने बचपन के आनंद को दुबारा अनुभव और खुद को तरोताजा कर सकते हैं। आज के महानगरीय जीवन में प्रायः अवकाश प्राप्त लोगों और बुजुर्गों के सामने सबसे बड़ी समस्या देखी जाती है कि वे अपना समय कैसे व्यतीत करें। ऐसे ज्यादातर लोग अक्सर घर में अकेला पड़ जाते हैं। इस तरह उनकी सेहत पर प्रतिकूल असर नजर आने लगता है।

सक्रिय पारिवारिक संस्कृति

बच्चों का अपने दादा-दादी से सहज लगाव होता है, इसलिए वे भी अपने माता-पिता की अपेक्षा दादा-दादी के साथ समय बिताना अधिक पसंद करते हैं। जिन परिवारों में पोते-पोतियां नहीं हैं, वे दादा-दादी से दूर रहते हैं, उन बुजुर्गों के भी आस-पड़ोस में ऐसे परिवार अवश्य मिल जाते हैं, जिनके छोटे बच्चे हों। वे उनके साथ घुल-मिल सकते हैं। इस तरह आस-पड़ोस में एक तरह की सक्रिय पारिवारिक संस्कृति का विकास होता है। बुजुर्गों की शारीरिक और मानसिक सेहत भी अच्छी रहती है।

कई ऐसे लोगों पर अध्ययन हो चुके हैं, जिसमें पाया गया है कि जो लोग बच्चों के साथ खेलने में अपना समय व्यतीत करते हैं, उनकी सेहत अन्य गतिविधियों में शामिल लोगों की अपेक्षा बेहतर होती है। इसलिए परिवार के साथ-साथ अगर मुहल्ले के बच्चों को शामिल करके ऐसी गतिविधियां चलाई जाएं, जिनमें खेल का आनंद लिया जाए, तो इससे सेहत और सौहार्द दोनों बढ़ते हैं।

> *बच्चों के साथ खेलना न केवल बच्चों के लिए, बल्कि वयस्कों के लिए भी लाभदायक होता है। वयस्क अपने बचपन के आनंद को दुबारा अनुभव और खुद को तरोताजा कर सकते हैं।*

संवेदनात्मक लाभ

पोते-पोतियों के साथ खेलने, समय बिताने से न केवल पारिवारिक संस्कृति मजबूत होती है, बल्कि इससे बच्चों और बुजुर्ग दोनों के संवेदनात्मक और संज्ञानात्मक विकास में भी मदद मिलती है। बच्चों को बुजुर्गों के अनुभव प्रेरक लगते हैं, जिससे वे अपने जीवन के मूल्य तय करने में सक्षम हो पाते हैं। इसी तरह बुजुर्गों को अपने बचपन के अनुभवों की स्मृतियों में लौटने से मानसिक ऊर्जा बढ़ती है।

साझेदारी का भाव

भारत में परिवार व्यवस्था पश्चिमी देशों की तुलना में अधिक मजबूत है, इसलिए यहां छोटे-बच्चों के साथ बुजुर्गों के लिए समय बिताना कोई मुश्किल काम नहीं है। सामाजिक व्यवस्था भी ऐसी है कि मुहल्ले के बच्चों को जोड़ कर गतिविधियां चलाई जा सकती हैं। इस तरह परिवार और समाज में साझेदारी का भाव बनता है। बच्चे बुजुर्गों के अनुभवों का लाभ उठाते हैं।

खस्ता दानेदार, स्वाद मजेदार

नारियल बिस्कुट

रसोई

आमतौर पर घरों में बाजार का बना बिस्कुट ही इस्तेमाल होता है। मगर घर में बने बिस्कुट का स्वाद ही अलग होता है। घर में बिस्कुट बनाना कोई मुश्किल काम नहीं।

सामग्री

1 कप सूखे नारियल का चूरा। (नारियल को ग्राइंड करके घर में ही बना लें), आधा कप गेहूं का आटा, आधा कप महीन सूजी, 1 कप चीनी, चौथाई कप देसी घी, 1 चम्मच सौंफ, अगर तलना हो, तो भरपूर तेल।

विधि

आटा, सूजी और नारियल का चूरा एक साथ मिला लें। इसी में सौंफ को भी पीस का डाल दें। अगर चाहें तो सौंफ के साथ एक छोटा टुकड़ा दालचीनी का भी पीस कर डाल सकते हैं। चीनी को पीस लें और उसमें घी डाल कर सात-आठ मिनट तक चम्मच से फेटें, जब तक कि दोनों चीजें आपस में मिल कर नरम फाहेदर न हो जाएं। इससे बिस्कुट खस्ता और नरम बनता है। चीनी और घी के मिश्रण को आटे-सूजी-नारियल के मिश्रण में मिलाएं और हाथों से रगड़ कर अच्छी तरह मिलाएं। मुट्ठी में बंद करके देखें, अगर सामग्री बंध रही है, तो समझिए मिश्रण तैयार है। अब गुनगुने दूध का छींटा देते हुए कड़ा गूंथ लीजिए।

इस मिश्रण को ढंक कर दस मिनट के लिए आराम करने को रख दें। फिर मिश्रण को एक बार और हल्के हाथों से दबा कर एक सार कर लें। फिर छोटा-छोटा हिस्सा लेकर चकला-बेलन की मदद से आधा इंच मोटा बेल लें। फिर काट कर बिस्कुट बना लें। 180 डिग्री पर अवन को गर्म करें और ट्रे में नीचे घी चुपड़ कर बिस्कुटों को 12 से 15मिनट के लिए सिंकने को रख दें। अगरअवन नहीं है, तो कड़ाही में तेल गरम करें और उसमें तल लें। हां तलने से पहले उनमें फोर्क की मदद से दो-तीन जगह छेद कर दें। इस तरह बिस्कुट फटेंगे नहीं। घर में बने बिस्कुट का आनंद लें।

मटर दलिया

हरे मटर का मौसम है, इसका जितने तरह से व्यंजन बना कर आनंद ले सकें लेना चाहिए। दलिया के साथ मटर का मेल बहुत अच्छा बनता। इसे खिचड़ी की तरह पतला नहीं, बल्कि पोहे की तरह दाना-दाना अलग बनाएं और खाएं, तो आनंद और बढ़ जाता है।

सामग्री

1 कप दलिया, 1 कप मटर के दाने, चौथाई कप कटा हुआ गाजर, तड़के के लिए दो से तीन चम्मच घी, सजावट के लिए: कटा हरा धनिया, अदरक और हरी मिर्च।

विधि

पहले मटर के दाने और कटे हुए गाजर को धोकर अलग रख लें। दलिया को छन्नी से छान लें ताकि अगर उसमें गर्द हो तो निकल जाए। कड़ाही में घी गरम करें। दलिया डाल कर मध्यम आंच पर चलाते हुए सुनहरा रंग आने तक तलें। फिर उसमें कटी हुई सब्जियां डालें और दो मिनट तक चलाते हुए पकाएं। अब जरूरत भर का नमक डालें और दो कप पानी डाल दें। ध्यान रखें कि पानी की मात्रा इतनी हो कि सारी सामग्री उसमें ढंक जाए। अधिक पानी होने से दलिया दानेदार नहीं बनेगा। अब कड़ाही पर ढक्कन लगा कर आंच धीमी कर दें। करीब दस मिनट तक पकने दें। बीच-बीच में खोल कर चलाने की जरूरत नहीं। इस तरह दलिया के दाने पानी को सोख कर अच्छी तरह फूल जाएंगे और हर दाना अलग-अलग होगा। दस मिनट बाद आंच बंद कर दें, मगर कड़ाही पर ढक्कन लगा रहने दें। तब तक हरा धनिया, मिर्च और अदरक के लच्छे काट कर सजावट की तैयारी कर लें। दस मिनट बाद ढक्कन खोलें और उसमें धनिया-अदरक-मिर्च डाल कर चला लें। दही, छाछ या रायते के साथ परोसें।

उस्तरा

गोपालप्रसाद व्यास

सरकार कहते हैं

बुढ़ापे में जो हो जाए उसे हम प्यार कहते हैं,
जवानी की मुहब्बत को फकत व्यापार कहते हैं।
जो सस्ती है, मिले हर ओर,
उसका नाम महंगाई,
न महंगाई मिटा पाए, उसे सरकार कहते हैं।
जो पहुंचे बाद 'चिट्ठी' के
उसे हम तार कहते हैं,
जो मारे डाक्टर को हम उसे बीमार कहते हैं।
जो धक्का खाकर चलती है
उसे हम कार मानेंगे,
न धक्के से भी जो चलती
उसे सरकार कहते हैं।

चूरण

शिक्षक : तुम पढ़ाई पर ध्यान क्यों नहीं देते?
छात्र : क्योंकि पढ़ाई सिर्फ दो वजहों से की जाती है!
शिक्षक : अच्छा जनाब, कौन-सी हैं वे दो वजहें, जरा बताओ?
छात्र : या तो डर से या शौक से. मैं बिना वजह कोई शौक रखता नहीं और डरता तो मैं किसी से भी नहीं!

पत्नी : अजी सुनते हो, क्या दो किलो मटर ले लूं?
पति : हां-हां, ले लो!
पत्नी : मैं तुम्हारी राय नहीं मांग रही, तुमसे पूछ रही हूं कि इतनी मटर छील लोगे या कम लूं!

टीटू : मैं सुबह जल्दी उठकर रोज घूमने आता हूं!
मिंटू : पर मैं तो सुबह उठकर कभी घूमने नहीं जाता?
टीटू : अच्छा, क्यों?
मिंटू : जब धरती स्वयं घूम रही है तो फिर मैं क्यों कष्ट करूं!

मास्टर जी : गप्पू, अंग्रेजी में उस फूल का नाम बताओ, जो सबसे ज्यादा बात करता हो?
गप्पू ने झट से जवाब दिया - Tulips
मास्टर जी : वह कैसे?
गप्पू : क्योंकि उसके टू लिप्स हैं!

"घर भरने का मतलब है, एक न एक दिन समाज भी संपन्न होगा। घर सेवा ही हमारे लिए समाजसेवा है। हम लोग खानदानी समाजसेवक हैं।"

हम खानदानी समाजसेवी हैं!

अभी-अभी कुछ दिन पहले ही हमने देखा कि वे बेचारे समाजसेवा के लिए चुनाव लड़ रहे थे। उनके बापू भी इसी उद्देश्य को लेकर चुनाव लड़ते थे और उनके बापू भी। यानी कि समाजसेवा उनके यहां एक खानदानी परंपरा है। वे अपने बेटे को भी समाजसेवा के लिए तैयार कर रहे हैं।

छदामीराम से मैंने पूछा, "आप समाजसेवा के लिए चुनाव लड़ रहे थे? क्या यह अफवाह सही है?"

गिरीश पंकज

छदामीराम बोले, "यह अफवाह नहीं, हकीकत है। मैं समाजसेवा के लिए जन्मा हूं और मरूंगा भी समाजसेवा करते।"

मैंने पूछा, "समाज से आशय क्या है?"

इस प्रश्न पर छदामीराम चुप हो गए। इधर-उधर देखने के बाद धीरे से बोले, "किसी से मत कहिएगा। समाजसेवा से मेरा आशय अपने घर से ही होता है।"

इतना बोलकर वे जोर से हंसे। इस हंसी के सहारे वह बता रहे थे कि कैसे अब तक लोगों को मूर्ख बनाता रहा और भावनाओं का शोषण करके अपने टेढ़े-मेढ़े उल्लू को सीधा करता रहा। वे भोले-भाले मतदाताओं पर हंसते रहे। फिर बोले, "देखिए पंकज जी, महापुरुष कह गए हैं कि आदमी को अच्छे काम की शुरुआत अपने घर से करनी चाहिए। घर सुखी मतलब समाज सुखी। इसलिए हम घर को सुखी करने की कोशिश करते हैं। घर भरने का मतलब है, एक न एक दिन समाज भी संपन्न होगा। घर सेवा ही हमारे लिए समाजसेवा है। हम लोग खानदानी समाजसेवक हैं।"

"वाह, क्या समाजसेवा है। प्रणाम करता हूं आपकी इस महान खानदानी भावना को।" मैंने कहा, "अच्छा यह तो बताइए, समाजसेवा के लिए आप शुरुआत किस तरह करते हैं?"

छदामीराम बोले, "भई, बड़ा खर्चीला मामला है। लाखों खर्च करो, तब कहीं जाकर समाजसेवा का पावन उद्देश्य सार्थक हो पाता है।"

"जैसे?" मैंने पूछा।

"जैसे कि पहले तो टिकट का जुगाड़ करना।" छदामीराम ने कहा, "पैसे पानी की तरह बहाओ, तब कहीं जाकर टिकट मिलता है। कई बार तो चूना ही लग जाता है। अरे भई, कितना खुलासा करूं? समझदार को इशारा काफी होता है। कश्ती को किनारा काफी होता है। लाखों रुपइया पानी की तरह बहाता हूं तो उसे वापस भी तो लाना होगा कि नहीं। धंधे का 'वसूल' क्या है, एक लगाओ, दस पाओ। जैसे गरीबों की सुनो, वह तुम्हारी सुनेगा, तुम एक पैसा दोगे, वह दस लाख देगा। तो भैया, एक लगाते हैं और दस वसूलते हैं।"

बात-बेबात

मैंने पूछा, "अच्छी समाजसेवा कर रहे हैं आप। लेकिन यह तो बताइए, ऐसा करते हुए आपकी आत्मा आपको कचोटती नहीं?"

वे चौंके, "आत्मा? यह आत्मा क्या है?"

मैंने कहा, "आपका अंतर्मन!"

"अंतर्मन?" वे फिर चौंके। मैं भी चौंका। यह आदमी आत्मा को, अंतर्मन को नहीं जानता, आश्चर्य! मुझे अचरज में पड़ा देखकर छदामीराम बोले, "बंधु, मैं आत्मा को जानता हूं और परमात्मा को भी, लेकिन घोड़ा घास से यारी करेगा तो खाएगा क्या? मैं राजनीति में आत्मा का ख्याल करूंगा तो सत्ता रूपी परमात्मा तक कैसे पहुंचूंगा। इसलिए हम इसे अपने शब्दकोश से निकाल फेंकते हैं। हां, मुखौटे के रूप में इस्तेमाल जरूर करते हैं।" छदामीराम और भी कुछ कहना चाहते थे, लेकिन 'जिंदाबाद-जिंदाबाद' करती भीड़ आई और वे उसके साथ आगे बढ़ गए। मैं खानदानी समाजसेवक को जाता हुआ देखता रह गया।

कहानी एक अप्रतिबद्ध बोर्ड की

मैं तो बच्चे को पढ़ाई के चक्कर में डालना ही नहीं चाहता था। मैंने उससे कहा, तुम इस चक्कर में क्यों पड़ते हो।

प्रातः जब हाईस्कूल का नतीजा घोषित हुआ तो पूरी राजधानी में यह खबर आग की तरह फैल गई कि बाबू रामबहादुर सिंह जी का बेटा विद्याभूषण फेल हो गया है। खबर के फैलते ही बाबूजी की कोठी की ओर कारें दौड़ गईं, स्कूटर भाग चले, रिक्शों की भीड़ उमड़ पड़ी। छोटे भक्त पैरों पर ही दौड़ चले।

शंकर पुणतांबेकर

कोठी पर मातम छाया हुआ था। बाबू जी सिर लटकाए बैठे हुए थे। कारें तो ठेट अंदर तक पहुंच गईं, हां पैर बाहर सड़क पर ही पार्क होकर धमे रहे। बाबू जी ने कई बार सोचा था कि कोठी के दरवाजे कुछ छोटे करवा लें, जिससे कि पैर भी अंदर प्रवेश कर सकें, पर बस सोचते ही रह गए थे। उधर स्कूटर और रिक्शे बेचारे कारों और पैरों के बीच ही फंस रहे।

कारें अंदर आठ-आठ आंसू बहा रही थीं। बाहर पैर बाबू जी की संवेदना में नारे दे रहे थे- हाईस्कूल बोर्ड मुरदाबाद!

हम समाजवादी समाज की व्यवस्था के लिए मर-खप रहे हैं और यह बोर्ड स्वायत्तता के नाम पर हमारे इस कार्य में बाधा बना हुआ है।

विद्याभूषण पास होकर रहेगा!

नारे जब बाबू जी तक पहुंचे तो उन्होंने कहा, "भाई लोगो, ये नारे बंद कराओ।" और भाई लोगों ने जब इस तरह का प्रयत्न किया तो पैरों को विश्वास हो गया कि हम जो कुछ कर रहे हैं, ठीक कर रहे हैं। नारे और बुलंद हो उठे। "अब ये नारे बढ़ेंगे तो बच्चा पास हो जाएगा! और मैं यह नहीं चाहता।" बाबू जी ने पीड़ा-भरे शब्दों में कहा।

इधर-उधर से

"बच्चे को तो पास होना ही है। यदि ऐसा नहीं होगा तो हम पूरे प्रांत में नहीं, पूरे देश में आंदोलन छेड़ देंगे। बच्चा आपका थोड़े ही है, पूरे देश का बच्चा है और बोर्ड की यह हिम्मत कि बच्चे को फेल कर दे!"

"मैं तो बच्चे को इस पढ़ाई के चक्कर में डालना ही नहीं चाहता था। मैंने उससे कहा था, तुम इस चक्कर में क्यों पड़ते हो। घर का अच्छा-खासा धंधा है देशभक्ति का। उसी को पकड़ लो। इस पढ़ाई में क्यों वक्त जाया करते हो?"

"हां, देश को उस जैसे होनहार जवान की जरूरत है। उसे तो आप इसी वक्त, इसी क्षण देशभक्ति में उतार दीजिए।"

('विजिट यमराज की' से)

आड़े-तिरछे

रेखांकन : दुर्गादत्त पांडेय

JobAlert

Real-time job alerts
amarujala.com/jobs

चंडीगढ़ शिक्षा विभाग ने जारी किया विज्ञापन

प्राइमरी टीचर के पदों पर रिक्तियां

396 पद

आवेदन की अंतिम तिथि : 19 फरवरी, 2024
पात्रताएं : ग्रेजुएशन डिग्री/डिप्लोमा व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें : https://chdeducation.gov.in

ICMR-NIRT में अभ्यर्थी करें आवेदन ■ 35 पद

प्रोजेक्ट रिसर्च साइंटिस्ट-II, प्रोजेक्ट एमटीएस आदि पद रिक्त
वॉक-इन-इंटरव्यू तिथि 12/13 फरवरी, 2024
पात्रताएं 12वीं/एमबीबीएस व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें
https://nirt.res.in

MPRL में रोजगार के मौके ■ 11 पद

असिस्टेंट एग्जीक्यूटिव के पद खाली
आवेदन की अंतिम तिथि 24 फरवरी, 2024
पात्रताएं ग्रेजुएशन, पोस्ट-ग्रेजुएशन व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें
www.mrpl.co.in

EDCIL में रोजगार के अवसर ■ 100 पद

अनुबंध के आधार पर पीजीटी टीचर के पद खाली
आवेदन की अंतिम तिथि : 15 फरवरी, 2024
पात्रताएं : पोस्ट-ग्रेजुएशन/बीएड आदि निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें : https://www.edcilindia.co.in

IRCON इंटरनेशनल लिमिटेड ■ 28 पद

असिस्टेंट मैनेजर व अन्य पदों पर आवेदन आमंत्रित
आवेदन की अंतिम तिथि 09 फरवरी, 2024
पात्रताएं सिविल इंजीनियरिंग में ग्रेजुएशन डिग्री
यहां आवेदन करें
https://www.ircon.org

PMBI में रोजगार के अवसर ■ 10 पद

एग्जीक्यूटिव, असिस्टेंट मैनेजर व अन्य पद रिक्त
इंटरव्यू की तिथि 7/8/9/12 फरवरी, 2024
पात्रताएं बीएससी/बीसीए/एमबीए व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें
janaushadhi.gov.in

योग्य अभ्यर्थी करें अप्लाई...

- उत्तर प्रदेश चिकित्सा आपूर्ति निगम लिमिटेड : महाप्रबंधक का पद खाली।
  आवेदन की अंतिम तिथि : 23 फरवरी, 2024 तक आवेदन करें ■www.upmsc.in
- टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड : सहायक मुख्य चिकित्सा अधिकारी के पदों पर मौके।
  आवेदन की अंतिम तिथि : 20 फरवरी, 2024 तक आवेदन करें ■www.thdc.co.in

अपनी प्रतिक्रियाओं और सुझावों के लिए हमें udaan@amarujala.com पर ई-मेल करें।

SCHOLARSHIP ALERT

छात्रों के लिए स्कॉलरशिप पाने का अवसर

चार्ल्स वालेस इंडिया ट्रस्ट शॉर्ट रिसर्च ग्रांट्स 2024-25 के तहत कला या धरोहर संरक्षण के क्षेत्र में काम करने वाले पेशेवरों के लिए स्कॉलरशिप की शुरुआत की गई है। छात्रों की आयु 24 से 45 वर्ष के बीच होनी चाहिए। छात्रों ने स्नातकोत्तर उत्तीर्ण की हो और संबंधित क्षेत्र में चार या अधिक वर्षों का रिसर्च का अनुभव प्राप्त किया हो। स्कॉलरशिप प्रोग्राम में आवेदन के लिए आवेदक डॉक्टरेट अध्ययन के अंतिम चरण में हो, साथ ही अंग्रेजी भाषा का ज्ञान रखता हो। चार्ल्स वालेस इंडिया ट्रस्ट शॉर्ट रिसर्च ग्रांट्स के लिए उम्मीदवारों का चयन पात्रता मानदंड के आधार पर किया जाएगा। स्कॉलरशिप प्रोग्राम के तहत चयनित 15 से 20 छात्रों को यूके में रहने के लिए 1,59,028 रुपये प्रदान किए जाएंगे। चार्ल्स वालेस इंडिया ट्रस्ट शॉर्ट रिसर्च ग्रांट्स 2024-25 के तहत मिलने वाली इस स्कॉलरशिप के लिए आवेदक ऑनलाइन माध्यम से आवेदन कर सकते हैं।

आवेदन की अंतिम तिथि : 28 फरवरी, 2024
आवेदन लिंक : http://tinyurl.com/d5x6w4zu

ग्रेट स्कॉलरशिप प्रोग्राम-2024-25

ग्रेट स्कॉलरशिप के लिए उम्मीदवारों से आवेदन आमंत्रित किए जा रहे हैं। ग्रेट स्कॉलरशिप प्रोग्राम अन्य देशों सहित भारतीय छात्रों के लिए आरंभ की गई है। इस स्कॉलरशिप प्रोग्राम के तहत छात्रों को यूके के लगभग सभी विश्वविद्यालयों में एक साल के अंतर्गत पढ़ाए जाने वाले स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों व उनकी ट्यूशन फीस के लिए £10,000 की स्कॉलरशिप प्रदान की जाएगी। ग्रेट स्कॉलरशिप शैक्षणिक वर्ष 2024-25 में अध्ययनरत छात्रों के लिए आरंभ की गई है। इस स्कॉलरशिप प्रोग्राम के तहत आवेदन करने के लिए छात्रों के पास स्नातक की डिग्री होनी चाहिए, ताकि वह परास्नातक प्रोग्राम के लिए आवेदन कर सकें। इसके अतिरिक्त छात्रों की संबंधित क्षेत्र में रुचि व कौशल होना चाहिए। साथ ही छात्रों की अंग्रेजी भाषा पर अच्छी पकड़ होनी चाहिए। इस स्कॉलरशिप प्रोग्राम के तहत छात्रों को ब्रिटिश काउंसिल और उनके एचईआई के साथ संपर्क बनाने और ग्रेट स्कॉलरशिप के लिए एक राजदूत के रूप में कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। स्कॉलरशिप के लिए आवेदन ऑनलाइन माध्यम से स्वीकार किए जाएंगे।

अंतिम तिथि : 30 जून, 2024
आवेदन लिंक : http://tinyurl.com/ycxzk3rh

तुर्किये ने शुरु की युवाओं के लिए छात्रवृत्ति

तुर्किये दुनिया भर के अंतरराष्ट्रीय छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान कर अपने प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में अध्ययन करने का मौका दे रहा है, जिसके अंतर्गत युवाओं को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा के अवसर के साथ-साथ ज्ञान और अनुभव भी मिलेगा। यह एक सरकारी वित्त पोषित छात्रवृत्ति कार्यक्रम है, जो तुर्किये के शीर्ष विश्वविद्यालयों में पूर्णकालिक या अल्पकालिक कार्यक्रम को आगे बढ़ाने के लिए उत्कृष्ट छात्रों और शोधकर्ताओं को दिया जाता है। इस छात्रवृत्ति का उद्देश्य अन्य देशों के बीच सहयोग और समाजों के बीच आपसी समझ को मजबूत करना व भविष्य के नेताओं का एक नेटवर्क बनाना है। यह स्कॉलरशिप प्रोग्राम स्नातक व परास्नातक में दाखिल छात्रों के लिए आरंभ की गई है।

अंतिम तिथि : 20 फरवरी, 2024
आवेदन लिंक : http://tinyurl.com/mamp44tx

4 फरवरी, 1948 आज का दिन

सीलोन (श्रीलंका) ने ब्रिटिश शासन से अपनी आंतरिक राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त की थी। इस दिन पूरे देश में ध्वजारोहण समारोह, परेड और उत्सवों के माध्यम से अलग-अलग आयोजन होते हैं।

- 1789 : जॉर्ज वॉशिंगटन अमेरिका के पहले राष्ट्रपति चुने गए थे।
- 1920 : लंदन से दक्षिण अफ्रीका के बीच विमान सेवा शुरू हुई थी।
- 2000 : पहली बार 'विश्व कैंसर दिवस' मनाया गया था। इसका उद्देश्य जागरूकता फैलाना था।
- 2012 : प्रथम विश्व युद्ध की अंतिम जीवित सैनिक फ्लोरेंस ग्रीन का निधन हुआ था।

व्रत त्योहार

आज : माघ कृष्ण पक्ष नवमी।
कल : शिशिर ऋतु, सूर्य उत्तरायणे, दक्षिण गोले।
राहुकाल : प्रातः 07.30 से 09.00 तक।

कल का पंचांग

सूर्योदय : 07.11
सूर्यास्त : 17.59
(भारतीय मानक समयानुसार)

विक्रमी संवत 2080, 16 माघ मास शाके 1945, माघ मास 23 प्रविष्टे, 23 रज्जब हिजरी 1445, माघ कृष्ण पक्ष दशमी 17.24 तक उपरांत एकादशी, अनुराधा नक्षत्र 07.53 तक उपरांत ज्येष्ठा नक्षत्र, ध्रुव योग 10.51 तक उपरांत व्याघात योग, विष्टि (भद्रा) करण 17.24 तक उपरांत बव करण, चंद्रमा वृश्चिक राशि में दिन-रात।

amarujala.com/astrology

राशिफल

■ पं. विनोद त्यागी

मेष : सहोदरों से परेशानी होगी। आर्थिक क्षेत्र में सावधानी बरतें। व्यवसाय में लाभ होगा। स्वास्थ्य प्रतिकूल रहेगा।	**सिंह** : कार्य सिद्धि से उत्साहित रहेंगे। विरोधी परास्त होंगे। किसी परेशानी से मुक्ति मिलेगी। व्यवसाय में लाभ होगा।	**धनु** : मन प्रसन्न रहेगा। नई नौकरी का प्रस्ताव आ सकता है। संतान से सुख मिलेगा। व्यवसाय में लाभ होगा।
वृष : स्वजन सहयोग मिलेगा। मकान-प्लॉट का सौदा पट सकता है। व्यवसाय में लाभ होगा। परिवार में खुशी होगी।	**कन्या** : योजना में निराशा होगी। संतान से मतभेद संभव है। व्यापार में लाभ होगा। घर में शांति बनाए रखें।	**मकर** : मानसिक तनाव बना रहेगा। आर्थिक क्षेत्र में सावधानी बरतें। मित्र सहयोग मिलेगा। व्यवसाय में लाभ कम होगा।
मिथुन : योजना में सफलता मिलेगी। विरोधी परास्त होंगे। अर्थ प्राप्ति हो सकती है। व्यवसाय में धन लाभ होगा।	**तुला** : आत्मबल बनाए रखें। अटके कार्य पूर्ण होंगे। अर्थ प्राप्ति हो सकती है। व्यवसाय में विस्तार होगा। यात्रा संभव है।	**कुंभ** : पूर्व नियोजित कार्य में व्यस्त रहेंगे। संतान संबंधी चिंता रहेगी। व्यवसाय में लाभ होगा। नेत्र कष्ट संभव है।
कर्क : अतिउत्साह से बचें। साझेदारी में सावधानी बरतें। व्यवसाय में लाभ होगा। उदर विकार से कष्ट संभव है।	**वृश्चिक** : योजना में अल्प सफलता मिलेगी। स्वजनों से निराशा होगी। व्यवसाय में लाभ होगा। सेहत नरम रहेगी।	**मीन** : मन अशांत रहेगा। प्रभावी व्यक्ति का सहयोग मिलेगा। व्यवसाय में लाभ होगा। देव-दर्शन का मन बनेगा।

सुडोकू

3		6		4				
		2						
5	8		6		3			4
8	1				5		2	3
9	3		2				6	1
4			5		7		9	2
						1		
				2		3		5

सुडोकू 81 वर्गों का ग्रिड है, जो 9 वर्गों के ब्लॉक में बंटा हुआ होता है। कुछ वर्गों के अंक लिखे हैं और खाली वर्गों में 1 से लेकर 9 तक के अंक लिखने होते हैं। कोई नंबर 1 पंक्ति, कॉलम या 9 वर्ग वाले छोटे ब्लॉक में दोबारा नहीं आ सकता है।

उत्तर

3	7	6	1	4	2	5	8	9
1	4	2	9	5	8	6	3	7
5	8	9	6	7	3	2	1	4
8	1	4	7	6	5	9	2	3
6	2	7	3	9	1	4	5	8
9	3	5	2	8	4	7	6	1
4	6	3	5	1	7	8	9	2
2	5	8	4	3	9	1	7	6
7	9	1	8	2	6	3	4	5

डेली हेल्थ कैप्सूल

बैकवर्ड वॉकिंग क्यों है जरूरी?

बैकवर्ड वॉकिंग वृद्ध, वयस्क या चोटों से उबरने वाले व्यक्ति के लिए फायदेमंद हो सकती है, क्योंकि यह गिरने के जोखिम को कम करती है।

बैकवर्ड वॉकिंग (पीछे की ओर चलना) से कई प्रकार के स्वास्थ्य लाभ होते हैं। इससे विभिन्न मांसपेशियां सक्रिय होती हैं और शारीरिक एवं मानसिक लाभ मिलता है। इससे शरीर के संतुलन और समन्वय में सुधार होता है। बैकवर्ड वॉकिंग वृद्ध, वयस्कों या चोटों से उबरने वाले

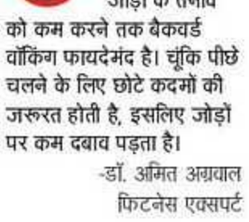

व्यक्ति के लिए विशेष रूप से फायदेमंद हो सकती है, क्योंकि यह गिरने के जोखिम को कम करने में मदद करती है। पीछे की ओर चलने से घुटनों और पीठ के निचले हिस्से पर तनाव कम हो सकता है। चूंकि चलने के लिए छोटे कदमों की लंबाई की आवश्यकता होती है, इसलिए आगे चलने या दौड़ने की तुलना में जोड़ों पर कम प्रभाव पड़ता है। बैकवर्ड वॉकिंग मानसिक स्वास्थ्य, जैसे - दिमाग तेज होना, एकाग्रता और यहां तक कि मूड सुधार में भी योगदान कर सकती है। पीछे की ओर चलने के अभ्यास को फिटनेस दिनचर्या में शामिल करना सरल है और इसे घर के अंदर या बाहर किया जा सकता है। यह गति में बदलाव और वर्कआउट में विविधता लाती है, जिससे रोजाना व्यायाम करना दिलचस्प और प्रेरक बना रहता है। इस संबंध में फिटनेस एक्सपर्ट से सलाह ले सकते हैं।

क्या कहते हैं विशेषज्ञ

मांसपेशियों की मजबूती से लेकर जोड़ों के तनाव को कम करने तक बैकवर्ड वॉकिंग फायदेमंद है। चूंकि पीछे चलने के लिए छोटे कदमों की जरूरत होती है, इसलिए जोड़ों पर कम दबाव पड़ता है।

-डॉ. अमित अग्रवाल
फिटनेस एक्सपर्ट

पूरी दुनिया में कोई भी ऐसा मुल्क नहीं है, जो व्यापार से बर्बाद हुआ हो।

-बेंजामिन फ्रैंकलिन

यूं तो यह दौर चरम शीत युद्ध का था, मगर अमेरिका और रूस के बीच कारोबारी रिश्तों की गर्मी देखते ही बनती थी। 1970 के दशक में रूस में गेहूं की फसल बुरी तरह चौपट हो चुकी थी। अमेरिका जानता था कि रूस को अनाज चाहिए, मगर इसी मुकाम से शुरू होती है अमेरिकी कृषि व्यापार नीति की सबसे बड़ी चूक, जिससे रूस को वह करने का मौका मिला, जिसने दुनिया में अनाज कारोबार के रिवाज ही बदल दिए।

For More Newspapers And Magazines Join Paid Group Whatsapp To 8969469464

द ग्रेट रशियन रॉबरी

दूसरी बड़ी जंग के दौरान अमेरिका में सेना के लिए सेहतमंद लोग मिलना मुश्किल थे। प्रत्येक पांच में दो पुरुष फौज में भर्ती से नकार दिए जाते थे, क्योंकि वे कुपोषित थे।

1930 के दशक का अमेरिका

न्यूयॉर्क सिटी में रोटी के लिए सड़कों पर प्रदर्शन हो रहे थे...मुफ्त के सूप और ब्रेड के लिए जगह-जगह लाइन लग रही थीं।

अंशुमान तिवारी

वरिष्ठ लेखक-पत्रकार

ऑस्ट्रेलिया में इस साल किसान सूखी जमीन में गेहूं बोएंगे। दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा गेहूं निर्यातक अपनी सबसे बड़ी फसल पर अल -नीनो वाले सूखे के असर के लिए तैयार हो रहा है। भारत में चुनाव के कारण मुफ्त अनाज बांटने का ऐलान किए बैठी सरकार को पता नहीं है कि इस साल किसान उसे पर्याप्त अनाज बेचेंगे या नहीं। रबी पर अल-नीनो की काली छाया पड़ चुकी है। उपज कम होने का खतरा है। भारत में गेहूं का सरकारी भंडार सात साल के न्यूनतम स्तर पर है। एक साल से ज्यादा हो गया, मगर भारत में अनाज की महंगाई कम नहीं हुई। भारत ने गेहूं और चावल का निर्यात रोक दिया, मगर खौलती कीमतें ठंडी नहीं पड़ी हैं। दुनिया के खाद्य बाजार में अफरा-तफरी मची है। बाजार को लगता है कि भारत को गेहूं का आयात शुरू करना पड़ सकता है।

1803 से लेकर 1972 तक गेहूं की कीमतों में इतिहास में कहीं किसी भी बड़ी तेजी का जिक्र नहीं है। बीसवीं सदी के सातवें दशक की शुरुआत तक महंगाई में गेहूं का योगदान नगण्य था, पर 1970 के दशक में अचानक पूरी दुनिया में अफरा-तफरी मच गई।

आइए टाइम मशीन तैयार है...पकड़िए अपनी सीट।

मनी हेइस्ट यानी बैंक लूट तो सुनी होगी, आइए गेहूं की एक अनोखी लूट से मिलते हैं, जो रूस ने की थी। उसके बाद गेहूं का बाजार ही बदल गया।

हम 1970 के दशक में है।

दूसरे विश्व युद्ध को तीस साल बीत चुके थे। अमेरिका अब दुनिया में कृषि उत्पादन की बड़ी ताकत बन गया था। गरीबों को फूड स्टांप कार्यक्रमों के जरिये सस्ता अनाज दिया जा रहा है। दूसरी बड़ी लड़ाई में अपना दबदबा स्थापित करने के बाद अमेरिका उदारता और मदद के सहारे कूटनीतिक प्रभाव बना रहा था। 1954 में फूड फॉर पीस कार्यक्रम आया, जिसके तहत जरूरतमंद देशों को खाद्य सहायता दी जा रही थी।

यह वही अमेरिका था, जो दूसरे विश्वयुद्ध की शुरुआत तक कुपोषण और अनाज की कमी से जूझ रहा था। लिजी कॉलिंघम अपनी मूल्यवान किताब 'द टेस्ट ऑफ वार – वर्ल्ड वार टू एंड बैटल फॉर फूड' में लिखती हैं कि दूसरी बड़ी जंग के दौरान अमेरिका में सेना के लिए सेहतमंद लोग मिलना मुश्किल थे। प्रत्येक पांच में दो पुरुष फौज में भर्ती से नकार दिए जाते थे, क्योंकि वे कुपोषित थे।

1930 की महामंदी के बाद हुए कृषि सुधारों ने अमेरिका की खेती को संकट से समृद्धि में बदल दिया था। किसानों को मूल्य समर्थन और सब्सिडी दी गई थी, जिसका फायदा भरपूर फसलों के तौर पर पककर सामने आने लगा था। दूसरे विश्व युद्ध के बाद नई तकनीकों से खेती के उत्पादन में और तेजी आई और अनाज के कोठार भरने लगे।

यूं तो यह दौर चरम शीत युद्ध था, मगर अमेरिका और रूस के बीच कारोबारी रिश्तों की गर्मी देखते ही बनती थी।

1971 में अमेरिका रूस को गेहूं का निर्यात करता था। यह सौदे बहुराष्ट्रीय अनाज कंपनियों के जरिये किए जाते थे। 70 के दशक की शुरुआत में डॉलर कमजोर हो रहा था। गोल्ड स्टैंडर्ड समाप्त हो गया था। अमेरिकी राष्ट्रपति निक्सन बुरी तरह परेशान थे। अमेरिका का निर्यात यूरोप और जापान से मात खा रहा था। अमेरिका की सरकार विदेश व्यापार का चेहरा ठीक करने के लिए गेहूं का निर्यात बढ़ाना चाहती थी। भारी उत्पादन के कारण भंडार भरे थे, जिन्हें खाली करना जरूरी था। इधर सोवियत संघ में 1971-72 में गेहूं की फसल बुरी तरह मारी गई। अमेरिका को पता था, सोवियत रूस को अनाज चाहिए। अर्ल बट्ज अमेरिकी राष्ट्रपति निक्सन की सरकार में कृषि मंत्री थे। तेज-तर्रार, मुंहफट और विवादित बट्ज को अमेरिका में खेती की नीतियां बदलने के लिए जाना जाता है। उस वक्त तक अमेरिका में भारत जैसी समर्थन मूल्य प्रणाली लागू थी। किसानों का अतिरिक्त उत्पादन सरकार खरीदती थी। यह नीति महामंदी के दौर में आई थी। बट्ज ने कृषि उपज के निर्यात का बड़ा कार्यक्रम बनाया।

टाइम मशीन सफर करते हुए आपको अमेरिका के अखबारों में ऐसी सुर्खियां दिख जाएंगी, जिनमें देश के कृषि मंत्री खूब पैदावार का आह्वान कर रहे हैं और अमेरिका गेहूं निर्यात की ताकत बनाने का दावा कर रहा है।

मगर इसी मुकाम से शुरू होती है अमेरिकी कृषि व्यापार नीति की सबसे बड़ी चूक, जिसे इतिहास में ग्रेट रशियन रॉबरी के नाम से दर्ज किया गया।

कृषि मंत्री अर्ल बट्ज ने सोवियत रूस के साथ अनाज निर्यात का समझौता किया। उन्होंने सोवियत संघ को 50 करोड़ डॉलर की क्रेडिट लाइन जारी की। यह कर्ज अमेरिकी गेहूं खरीदने के लिए था। इसके बदले सोवियत रूस को अगले तीन साल में करीब 75 करोड़ डॉलर का गेहूं खरीदना था।

टाइम मशीन

अतीत से सुनें वर्तमान की धड़कन ■ हर पखवाड़े

बट्ज ने सपने में भी नहीं सोचा था कि सोवियत वाले यह अनाज एक साल में ही खरीद लेंगे। सोवियत की कमान लिओनिद ब्रेझनेव के हाथ थी। ब्रेझनेव की कूटनीतिक चतुरता का कोई सानी नहीं था। जोसेफ स्टालिन के बाद वह सबसे लंबे समय तक रूस की कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव रहे। भारत और रूस के बीच की मशहूर संधि उनके कार्यकाल में ही हुई थी। भारत का नेतृत्व तब इंदिरा गांधी कर रही थीं। अमेरिका से क्रेडिट लाइन मिलते ही रूस ने गुपचुप ढंग से दुनिया के अनाज व्यापारियों से सौदे शुरू कर दिए। यह क्रेडिट लाइन अमेरिकी गारंटी थी, सो सौदे करने में देर नहीं लगी। अमेरिकी सरकार को यह पता ही नहीं था कि रूस कई निर्यातकों से एक साथ गेहूं खरीद के सौदे कर रहा है। अनाज निर्यातकों को भी जानकारी नहीं थी कि ब्रेझनेव की सरकार कहां, किससे और कितने गेहूं की खरीद करने जा रही है।

इस बीच ग्लोबल अनाज कंपनी कांटीनेंटल ने गेहूं के फ्यूचर्स यानी वायदा सौदों पर बड़ा दांव लगा दिया। उसे उम्मीद थी, सोवियत रूस तो तीन साल में अनाज खरीदेगा, तब तक नई फसल आ जाएगी, इसलिए कांटीनेंटल ने अनाज की वास्तविक खरीद किए बगैर आगे के सौदे कर लिए।

सोवियत रूस ने तीन सप्ताह में 75 करोड़ डॉलर का अनाज खरीद डाला। तीन साल की आपूर्ति एक साल में ही पूरी कर ली गई। अमेरिका की सरकार ठगी रह गई। ताकतवर निक्सन के लिए शर्मिंदगी का मौका था। उनका पूरा अमला जान ही नहीं सका कि दुनिया में अनाज की मांग और आपूर्ति का हाल क्या है। सोवियत रूस की अजीबो-गरीब लूट से 30 करोड़ डॉलर की सब्सिडी डूब गई। अमेरिका में गेहूं की कीमतें खौल उठीं। निक्सन ने अनाज और सोयाबीन के निर्यात पर पाबंदी लगा दी, जिससे सोयाबीन की भरमार हो गई। किसानों को बड़ा नुकसान हुआ। रूस की इस लूट से दुनिया का अनाज कारोबार ही बदल गया। इसके बाद कई देशों में अनाज के बफर स्टॉक बनने लगे।

1972 में पहली बार गेहूं की कीमत ने 1.5 डॉलर प्रति बुशल का स्तर पार किया था। उसके बाद गेहूं की कीमत कभी तीन डॉलर प्रति बुशल से नीचे नहीं पहुंची।

टाइम मशीन का यह सफर नासा के अंतरिक्ष केंद्र पर खत्म हो रहा है। नासा का गेहूं से क्या रिश्ता? दरअसल, इस लूट के बाद ही अमेरिका को लगा कि दुनिया के अनाज उत्पादन की सही जानकारी होनी चाहिए। 1970 के दशक में नासा ने लैंडसैट 1 को अंतरिक्ष में भेजा और अमेरिकी कृषि विभाग में पहली बार फसलों के उत्पादन की सटीक भविष्यवाणी शुरू हुई।

मिलते हैं अगले सफर पर...

जानना जरूरी है

संस्कृति के पन्नों से

आशुतोष गर्ग

लेखक एवं अनुवादक

गजेंद्र मोक्ष पाठ की रचना कैसे हुई?

राजा इंद्रद्युम्न, भगवान विष्णु के अनन्य भक्त थे। उनके मन में भगवद्भक्ति इतनी बढ़ी कि उन्होंने राज्य त्याग दिया और तपस्या में लीन हो गए। एक दिन इंद्रद्युम्न स्नानादि करके ध्यान में बैठे थे कि तभी महर्षि अगस्त्य वहां पहुंच गए। इंद्रद्युम्न ध्यान में लीन थे, इसलिए उन्होंने अगस्त्य को प्रणाम नहीं किया। महर्षि कुपित हो गए और उन्होंने इंद्रद्युम्न को शाप दिया - "ऋषि का अपमान करने वाला यह राजा, हाथी के समान जड़बुद्धि है, इसलिए यह हाथी के रूप में जन्म ले!"

इस बीच एक अन्य ऋषि देवल, सरोवर में स्नान कर रहे थे। वहीं हूहू नाम का गंधर्व भी जल-क्रीड़ा कर रहा था। उसने देवल को रोकने का प्रयास किया, तो ऋषि ने हूहू को ग्राह (मगरमच्छ) के रूप में जन्म लेने का शाप दे डाला। अगस्त्य के शाप से इंद्रद्युम्न, हाथियों का राजा (गजेंद्र) बन गया और देवल के शाप से हूहू, सरोवर में ग्राह बनकर रहने लगा।

धूप आने दो

संयोग से, एक दिन गजेंद्र, उसी सरोवर में पानी पीने पहुंच गया। पानी पीकर गजेंद्र ने जल-क्रीड़ा आरंभ कर दी। तभी गजेंद्र पीड़ा से चिंघाड़ा। जल में बैठे ग्राह (हूहू) ने गजेंद्र का पैर पकड़ लिया।

गजेंद्र ने पैर छुड़ाने का भरपूर प्रयास किया, परंतु उसे सफलता नहीं मिली। गजेंद्र छटपटाता रहा। उसके साथी गज असहाय खड़े देखते रहे। दोनों के बीच संघर्ष चलता रहा। गजेंद्र स्वयं को पानी से बाहर खींचता और ग्राह उसे भीतर खींचता। सरोवर का जल मैला हो गया। उसमें खिले कमल-दल क्षत-विक्षत हो गए।

गजेंद्र का शरीर शिथिल पड़ने लगा, परंतु ग्राह जलचर था, इसलिए उसकी शक्ति में कमी नहीं आई। गजेंद्र समझ गया कि उसके प्राण संकट में हैं और यदि जल्द कोई उपाय नहीं किया गया, तो उसका जीवित बचना कठिन हो जाएगा। गजेंद्र का साहस पस्त हो चुका था। उसे जब कोई अन्य उपाय नहीं सूझा तो उसने आंखें मूंद लीं।

वह आंख बंद किए चुपचाप खड़ा था कि तभी पूर्वजन्म में इंद्रद्युम्न के रूप में की गई भक्ति और आराधना के प्रभाव से गजेंद्र के मन में भगवान की स्मृति जाग गई। उसे विश्वास हो गया कि अंत समय में भगवान का स्मरण करने से उसे मुक्ति अवश्य मिल जाएगी। हूहू ग्राह अब भी गजेंद्र को पूरी शक्ति से पानी के भीतर खींचने का प्रयत्न कर रहा था।

उसने अपने इष्ट भगवान विष्णु की शरण में जाने का निश्चय किया। ग्राह द्वारा दी जा रही पीड़ा पर ध्यान न देकर गजेंद्र सोचने लगा - "काल बड़ा बली है। यह सांप के समान बड़े प्रचंड वेग से सबको निगल जाने के लिए दौड़ता रहता है । इससे भयभीत होकर जो कोई भगवान की शरण चला जाता है, उसे प्रभु अवश्य बचा लेते हैं। वही प्रभु सबके आश्रय हैं। मैं उन्हीं की शरण ग्रहण करता हूं।"

● गजेंद्र, एकाग्रचित्त से पूर्वजन्म में सीखे स्तोत्र के जप द्वारा भगवान की स्तुति करने लगा। स्तुति सुनकर भगवान विष्णु वहां प्रकट हो गए।

गजेंद्र ने गरुड़ पर आरूढ़ भगवान विष्णु को देखा तो कमल का एक सुंदर पुष्प अपनी सूंड़ में लेकर ऊपर उठाया और कष्टपूर्वक कहा - "नारायण! जगद्गुरो! भगवान! आपको नमस्कार है।"

गजेंद्र को इस तरह पीड़ित देखकर भगवान विष्णु, गरुड़ की पीठ से नीचे उतरे और गजेंद्र के साथ ग्राह को भी सरोवर से बाहर खींच लाए। फिर उन्होंने अपने सुदर्शन चक्र से ग्राह का मुंह फाड़कर गजेंद्र को मुक्त कर दिया। देवल के शाप से ग्रस्त हूहू गंधर्व भी ग्राह योनि से मुक्त हो गया। उसने भगवान विष्णु की परिक्रमा की और उनके चरणों में प्रणाम करके अपने लोक को लौट गया।

भगवान विष्णु ने गजेंद्र का उद्धार कर उसे अपना पार्षद बना लिया। उसकी स्तुति से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने कहा- "हे गजेंद्र! जो लोग ब्रह्म मुहूर्त में उठकर तुम्हारी की हुई स्तुति से मेरा स्तवन करेंगे, उन्हें मैं मृत्यु के समय निर्मल बुद्धि का दान करूंगा।"

गजेंद्र द्वारा की गई यही स्तुति 'गजेंद्र मोक्ष पाठ' कहलाती है। श्रीमद्भागवद पुराण के आठवें स्कंध में गजेंद्र मोक्ष की कथा का विस्तार से उल्लेख मिलता है। इस स्तोत्र में 28 श्लोक हैं। यह कथा शुकदेव जी ने राजा परीक्षित को सुनाई है।

आप कितनी भाषाओं के जानकार हैं

एक से ज्यादा भाषाएं बोलने/लिखने वाले मानसिक तौर पर ज्यादा स्वस्थ होते हैं और वृद्धावस्था में कई बीमारियों से भी बचे रहते हैं।

डाना जी स्मिथ

न्यूयॉर्क टाइम्स

मेरे पिता जी जब 57 साल के थे, तब उन्होंने फ्रेंच भाषा सीखने का फैसला किया। उन्होंने एक ट्यूटर तलाशा और पूरी लगन से पढ़ाई की। दरअसल, मेरे पिता की मां यानी मेरी दादी अपनी वृद्धावस्था में अल्जाइमर्स रोग की शिकार हुई थीं। मेरे पिता ने कहीं एक हालिया शोध के बारे में पढ़ा कि द्विभाषी लोगों में अल्जाइमर्स रोग से ग्रसित होने की आशंका कम होती है। यही वजह है कि मेरे पिता ने फ्रेंच भाषा सीखने का फैसला किया। भाषा सिखाने वाले एक अग्रणी ऐप द्वारा कराए गए सर्वे के अनुसार, 57 फीसदी लोग मानसिक तौर पर ज्यादा स्वस्थ होने की चाह के चलते दूसरी भाषा सीखना चाहते थे। लेकिन क्या इस तरह आकस्मिक ढंग से दूसरी भाषा सीखने के वही लाभ मिलते हैं, जो कम आयु से ही कई भाषाओं का ज्ञान रखने से होते हैं ? सिडनी यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर मार्क एंटोनियो के अनुसार, 'दैनिक जीवन में हम भाषा का उपयोग कई तरह से करते हैं। ऐसे में, एक द्विभाषी मस्तिष्क लगातार काम करता रहता है। यह उसके लिए कसरत की तरह होता है।' जाहिर है कि जो लोग युवावस्था से ही एक से ज्यादा भाषाएं बोलते हैं, वे वृद्धावस्था में भी मानसिक तौर पर ज्यादा स्वस्थ होते हैं। पेरिस के ब्रोका अस्पताल में मानसिक स्वास्थ्य के एक शोधार्थी कैटलिन वेयर के अनुसार, 'आप किस उम्र में दूसरी भाषा सीखते हैं, उससे ज्यादा महत्वपूर्ण यह है कि आप उसका अभ्यास कितना कर रहे हैं।' 2007 में इस विषय पर एक ऐतिहासिक शोध पत्र प्रकाशित हुआ था, जिसके अनुसार डाइमेंशिया से पीड़ित लोगों में, जो दो भाषाओं को बोलने वाले थे, उनमें रोग के लक्षण दूसरे मरीजों की तुलना में चार साल बाद विकसित हुए। डॉ. एंटोनियो के शोध में यह भी पाया गया कि 60 वर्ष से ज्यादा उम्र के चीनी वयस्कों द्वारा छह महीने तक दूसरी भाषा सीखने के बाद उनकी हालत में सुधार देखा गया। एक अन्य प्रयोग में इटली में वृद्ध लोगों के एक समूह ने चार महीने तक अंग्रेजी भाषा सीखी, लेकिन उनमें कोई सुधार तो नहीं आया, अलबत्ता उसी समूह के कुछ दूसरे वृद्धों, जिन्होंने कोई भाषा नहीं सीखी, उनकी स्थिति में गिरावट जरूर दिखी। जर्मनी की हीडलबर्ग यूनिवर्सिटी की प्रोफेसर जूडिथ ग्रॉसमैन कहती हैं, 'यह कोई नहीं कहता कि वृद्धावस्था में छह महीने तक दूसरी भाषा सीखने का वही प्रभाव होगा, जो जीवन भर दो भाषाएं बोलने का होता है। लेकिन देर से सही, दो भाषाएं सीखने का कुछ प्रभाव तो हर स्थिति में होता है।' दूसरी भाषा सीखने से आपको लगातार दूसरे समुदायों से जुड़ने का मौका मिलता है और आप मानसिक तौर पर भी सतर्क बने रहते हैं।

©The New York Times 2024

आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः सत्त्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः स्मृतिलम्भे सर्वग्रन्थीनां विप्रमोक्षः।

आहार की शुद्धि से सत्त्व की शुद्धि, सत्त्वशुद्धि से सुंदर व अटल स्मृति प्राप्त होती है। अटल स्मृति (वास्तविक ज्ञान) से सारे बंधन (जिनसे आत्मा बंधता है) कट जाते हैं।

-छान्दोग्योपनिषद्

प्रस्तुति : शास्त्री कोसलेंद्रदास

READ & WRITE

मालदीव की हकीकत कुछ और है

बॉस्ले की किताब मालदीव को एक ऐसा मुल्क बताती है, जहां के जादुई बीच और अकल्पनीय सुंदर छटाएं उन यातनाओं को छुपाए हुए हैं, जो यहां के आम लोग सदियों से झेलते आए हैं।

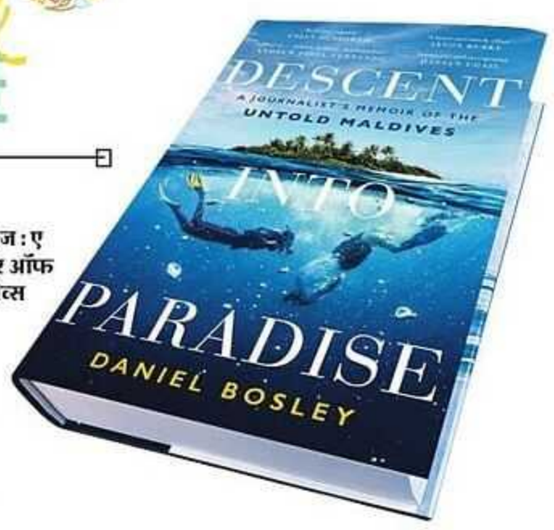

डिसेंट इनटू पैराडाइज : ए जर्नलिस्ट्स मेमॉयर ऑफ दि अनटोल्ड मालदीव्स

लेखक : डैनियल बॉस्ले

प्रकाशक : पैन मैकमिलन

मूल्य : 454 रुपये

डैनियल बॉस्ले एक अंग्रेज पोस्टमैन थे, लेकिन बाद में पत्रकार बन गए। वह सात वर्षों तक मालदीव में रहे, वहां काम किया और वहीं के अनुभवों के आधार पर उन्होंने यह किताब लिखी, जिसका नाम है, 'डिसेंट इनटू पैराडाइज'।

एक पत्रकार की नजरों से उन्होंने इस अनूठे देश और यहां की संस्कृति को देखा, जो न केवल जलवायु में परिवर्तन का, बल्कि एक रक्तरंजित भ्रष्टाचारी शासन व्यवस्था का दंश झेलने को भी अभिशप्त है। एक तरफ बड़ी संख्या में पर्यटक इसे सपनों का गंतव्य मानते हैं, तो दूसरी तरफ राजनीतिक तौर पर दुनिया से कटे हुए इस देश की अंतरराष्ट्रीय छवि है और इन दोनों के बीच ही इस द्वीपीय देश की पहचान झूल रही है। बॉस्ले की किताब पाठकों को एक नए संसार में ले जाती है, जो मालदीव की उस तस्वीर से अलग है, जो उन्होंने अपने जेहन में बना रखी है। बॉस्ले की रिसर्च महज एक पर्यटक की नहीं है, बल्कि वह वहां रहकर, लोगों से जुड़कर, उनके विचारों को समझते हुए एक गहन दृष्टि प्रदान करते हैं कि यह असामान्य देश वर्तमान में क्या है और क्या हो सकता है? बॉस्ले ने इस संकटग्रस्त देश के सबसे उथल-पुथल के दौर में वहां के राजनीतिक परिदृश्य की रिपोर्टिंग की और वहां के कल्पित स्वर्ग की सच्चाई सबके सामने लाए। वह मालदीव की कहानी को सुल्तानों और साम्राज्यवादियों के शासन वाले अतीत से शुरू करते हुए आधुनिक तानाशाही तक ले गए, जिसे आखिरकार लोकतंत्र ने पलट दिया। लेकिन लोकतंत्र भी कैसा ? असहमत और निडर पत्रकारों का अपहरण, कारावास या हत्या वहां आम है। इस्लामी कट्टरपंथियों ने देश की प्राचीन संस्कृति और पर्यावरण को तबाह करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। मालदीव में अंग्रेजी भाषा की समाचार वेबसाइट के संपादक के तौर पर बॉस्ले इन घटनाओं के प्रत्यक्षदर्शी बने, लेकिन वह वहां के स्थानीय समुदायों से मिले प्यार का भी जिक्र किताब में करते हैं, जिसमें वह कोई जटिलता नहीं पाते। वह लिखते हैं कि देश के रिसॉर्ट्स विलासिता को नई ऊंचाइयां दे रहे हैं, लेकिन वहां के सामान्य लोग जो यातना भोग रहे हैं, उनकी शायद ही कोई कल्पना कर सके। एक गहरी और सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि के साथ लिखी गई यह किताब 'डिसेंट इनटू पैराडाइज' मालदीव के बारे में हमारी समझ को एकदम बदल देती है। यह एक ऐसा मुल्क है, जहां के जादुई बीच और अकल्पनीय सुंदर छटाएं उन खतरों को छिपाए हैं, जिनमें न्याय के लिए संघर्ष करने वालों के डूबने का सबसे ज्यादा खतरा होता है।

मालदीव के अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर बॉस्ले एक संतुलित दृष्टिकोण रखते हैं। बड़ी शक्तियों के भू-राजनीतिक हित और शक्तियों की प्रतिद्वंद्विता से अलग वह मालदीव के प्रत्येक नेता की घरेलू राजनीतिक और आर्थिक मजबूरियों को ध्यान में रखते हुए उसकी विदेश नीति को समझने की कोशिश करते हैं। मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू के चीन की तरफ बढ़ते झुकाव और भारत से दूरी बनाने की नीति पर हो रही राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय चर्चाओं के बीच बॉस्ले की यह शानदार किताब पढ़ना आपको तरो-ताजा करता है, जिसमें मालदीव के नेता नहीं, बल्कि वहां के लोग ही सच्चे नायक हैं।

अभियान

अधिकांश महान लोगों को उनकी सबसे बड़ी सफलता, सबसे बड़ी असफलता से सिर्फ एक कदम आगे मिली है।
- नेपोलियन हिल, प्रसिद्ध लेखक

amarujala.com
अमर उजाला

गोल चबूतरा

Hindi@mithelesh

■ मिथिलेश बारिया

ताकि शाम को खरीद कर
कुछ घर ले जा सकूं,
मैं शाम तक अपना वक्त
दफ्तर में बेचता हूं...

भटकता रहा
फटे लिबासों में जिंदगी भर,
जो मरा है तो साबुत कफन
ओढ़कर जा रहा है...

तुम्हारी कहानी में किरदार बहुत थे,
मेरी दास्तां में हादसे...

हर क्लिक पर जुड़ते गए लोग

साल 2004 में आज ही के दिन मार्क जुकरबर्ग ने 'फेसबुक' लॉन्च किया था। इस सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को उन्होंने हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के छात्रों को एक-दूसरे से जोड़ने के लिए बनाया था। अगले दिन तक एक हजार से अधिक लोगों ने 'एफबी' पर पंजीकरण कराया था, लेकिन यह तो केवल एक शुरुआत थी। दुनिया को जोड़ने वाली यह साइट तेजी से इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण सोशल मीडिया साइट्स में से एक बन गई। लॉन्च होने के पहले 24 घंटों के भीतर लगभग 1,200-1,500 छात्रों ने इस साइट के लिए साइन-अप किया था। साल के अंत तक साइट पर 1 मिलियन उपयोगकर्ता थे। इसकी लोकप्रियता को देखते हुए अमेरिका के एक बड़े निवेशक पीटर थिएल ने इसमें करीब 5 लाख डॉलर का निवेश किया था। इसके बाद जुकरबर्ग ने कैलिफोर्निया में अपने नए मुख्यालय से फेसबुक चलाने के लिए हार्वर्ड छोड़ दिया था। वहां से फेसबुक दुनिया भर में फैल गया और न केवल एक अविश्वसनीय रूप से मूल्यवान कंपनी खड़ी हुई, बल्कि 21वीं सदी की शुरुआत के सबसे महत्वपूर्ण संस्थानों में अपनी जगह बनाई।

झरोखा
4 फरवरी

■ सोलन से जगमोहन सिंह

इन दिनों पहाड़ी इलाकों में बर्फबारी हो रही है। इस पल को यादगार बनाने के लिए लोग सेल्फी ले रहे हैं। अपनी ही तस्वीर खींचने का क्रेज जानलेवा साबित हो रहा है, क्योंकि हम खुद अपनी सुरक्षा भूलते जा रहे हैं।

जान पर भारी न पड़े सेल्फी !

बर्फबारी में जरा संभलकर

चिट्ठी 1

देश के कुछ पहाड़ी क्षेत्रों में बर्फबारी हो रही है। पहले दिसंबर और जनवरी में बर्फबारी होती थी, लेकिन इस बार देरी से हो रही है। पर्यटन क्षेत्रों में बर्फबारी का लुत्फ उठाते हुए हमें शासन-प्रशासन के नियमों का पालन करना चाहिए। पहाड़ों में ड्राइविंग सावधानी से करनी चाहिए। जो लोग अपने समय को यादगार बनाने के लिए सेल्फी लेते हैं, उन्हें खास सावधान रहने की जरूरत है। कुछ लोग सेल्फी लेते समय लापरवाही बरतते हैं, इस कारण उनकी जान पर बन आती है। देश में जिस तरह सेल्फी से जान गंवाने वालों का आंकड़ा बढ़ रहा है, उसमें ज्यादातर युवा शामिल हैं। यह एक चिंता का विषय है, लेकिन इस समस्या के समाधान के लिए दूसरों से उम्मीद रखना उचित नहीं है। सेल्फी का क्रेज इतना भी क्या कि आपनी जान की भी परवाह न की जाए? कुछ लोग तो वाहन चलाते हुए फेसबुक या अन्य सोशल साइट्स पर लाइव वीडियो शेयर करते हैं, ऐसे लोग अपनी जान के साथ दूसरों की जान के भी दुश्मन बन सकते हैं। शासन-प्रशासन को चाहिए कि वे खतरनाक जगहों पर सेल्फी लेने वालों पर भारी जुर्माने का प्रावधान करे। हालांकि, ऐसी जगहों पर चेतावनी नोटिस लगे होते हैं, लेकिन कोई इनकी परवाह नहीं करता। राज्य सरकारों को चाहिए कि वे राज्य की प्रवेश सीमा, होटल, ढाबों और धार्मिक स्थलों पर सेल्फी लेने से संबंधित नियमों और सावधानियों को प्रमुखता से हाइलाइट करें। सेल्फी जान पर भारी न पड़े, इसके लिए सबको एकजुट होकर प्रयास करने चाहिए। ज्यादा से ज्यादा लोगों को चाहिए कि इस संबंध में जागरूक हों, ताकि किसी की जान न जा पाए।

■ राजेश कुमार चौहान, जालंधर

गलती तुम्हारी, सजा उन्हें क्यों?

चिट्ठी 2

सड़क पर घूमने वाले आवारा जानवरों की वजह से दुर्घटनाएं तेजी से बढ़ रहीं हैं। कभी-कभार यह भी देखने में आता है कि लोग बिल्ली जैसे छोटे जानवरों के रास्ता काटने को अपशगुन मानते हैं। वे अपनी गाड़ी कुछ देर के लिए रोक देते हैं। सवाल यह उठता है कि ऐसी कितनी दुर्घटनाएं बिल्ली के रास्ता काटने से होती हैं? कई बार छोटे जीव-जंतुओं को लोग जबरदस्ती कुचल डालते हैं।

जानवरों के रास्ता काटने भर से अपनी गाड़ी खड़ी कर देना या उन्हें जबरदस्ती कुचल देना, कभी उचित नहीं हो सकता है। दरअसल, सड़क दुर्घटनाएं अक्सर तब होती हैं, जब हम यातायात नियमों का उल्लंघन करते हैं। तेज रफ्तार से वाहन चलाए जाने या इन दिनों मौसमी दशा के प्रतिकूल होने की वजह से भी कई दुर्घटनाएं हो रही हैं। हमारी सड़कें दिन-प्रतिदिन अच्छी हो रही हैं, इसमें कोई दो-राय नहीं है। खैर, अब तो ऊर्जा की बचत के लिहाज से ऐसे वाहन आने लगे हैं, जो स्वच्छ ऊर्जा से संचालित हैं, मगर ऐसे साधनों का इस्तेमाल करने वाले अंधविश्वासी बने रहें, क्या यह उचित है? हमें सड़क पर वाहन चलाने के नियमों का पालन करना होगा। तेज रफ्तार से वाहन चलाने से न केवल छोटे जीव-जंतुओं की जान को खतरा पहुंचता है, बल्कि हमारी जान पर भी बन आ सकती है। यह हमारी जिम्मेदारी बनती है कि हम सड़कों पर अपने वाहन को सुरक्षित रूप से चलाएं और जीव-जंतुओं की जान से खिलवाड़ न करें।

■ मुकेश कुमार मनन, पटना

पहले बेटों को सुधारें हम

चिट्ठी 3

बेटों का अपने माता-पिता के प्रति जो कर्तव्य बनता है, उसको पूरी ईमानदारी से निभाने की कोशिश करनी चाहिए। जब माता-पिता अपने बेटों को हर सुख-सुविधा हमेशा देने के लिए प्रयासरत रहते हैं तो बेटों को भी प्रयासरत रहना चाहिए कि वे बुढ़ापे में अपने माता-पिता का ध्यान रखें, उनकी हर जरूरत पूरी करें, लेकिन विडंबना यह है कि आज के दौर में बेटों द्वारा अपने माता-पिता की देखभाल करना आवश्यक नहीं समझा जाता है और वह भी विषम परिस्थितियों में। अपने मां-बाप की उपेक्षा करते समय बेटा यह भूल जाता है कि वह भी किसी का बाप है। माता-पिता दर-दर की ठोकर खाकर अपने बेटे की परवरिश करते हैं। आगे चलकर वो ही माता-पिता अपने बेटों के लिए पहाड़ जैसे भार बन जाते हैं, जिसका परिणाम होता है कि वो घुट-घुटकर जिंदगी जीने को मजबूर हो जाते हैं। एक बेटी ससुराल जाने के बाद भी अपने माता-पिता और भाइयों को याद करती है, तथा हर संभव प्रयास करती है कि किसी को कोई तकलीफ न होने पाए, लेकिन एक बेटे द्वारा पत्नी, बच्चों के अलावा माता-पिता की तनिक भी देखभाल नहीं की जाती है, इसका परिणाम यह होता है कि वे असहाय जिंदगी जीने को मजबूर हो जाते हैं। बेटों को अपनी पत्नी से ही शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए कि जब वो मायके तक की सोच रख सकती हैं तो हम अपने ही घर में माता-पिता की देखभाल क्यों नहीं कर सकते हैं?

■ शम्भू नाथ 'सार्थक', लखनऊ

इनकी चिट्ठियां भी सराहनीय रहीं

वड़ावली से डॉ. विकास पंडित, जालंधर से अमनदीप सिंह, शिवपुरी से प्रमोद भार्गव, बैनीताल से अमृता पांडे, आजमगढ़ से अवनीश कुमार गुप्ता, फिरोजाबाद से नितिन रावत, बरेली से दिलीप कुमार गुप्ता, अमरोहा से डॉ. महताब अमरोहवी, मिर्जापुर से सलिल पांडेय, सूरत से कांतिलाल मांडोत, मेरठ से डॉ. नरेन्द्र टोंक, हमीरपुर से प्रत्यूष शर्मा, गुरुग्राम से ऋषि प्रकाश कौशिक, पटना से सरिता प्रसाद।

हमें लिखें
abhiyan@amarujala.com

कुछ अलग

ढक्कन के साथ खुल गया इतिहास

साल 2003 में लंदन के रोमन मंदिर में एक डिब्बी मिली थी। जब उसकी जांच की गई तो पता चला कि वह फेस-क्रीम है, जो करीब 2000 साल पुरानी है।

चेहरे पर जब भी हम कोई फेस-क्रीम लगाते हैं तो सबसे पहले उसकी 'एक्सपायरी डेट' देखते हैं। अगर क्रीम कुछ दिन पहले ही एक्सपायर हुई है तो उसे इस्तेमाल नहीं करते। लेकिन क्या आपने 2000 साल पुरानी फेस-क्रीम के बारे में सुना है? लंदन में प्राचीन रोमन मंदिर के पास सालों पुरानी क्रीम की डिब्बी मिली थी। पुरातत्वविदों के अनुसार, यह क्रीम करीब 2000 साल पुरानी थी। शुरुआत में उनका मानना था कि यह एक मलहम था, जिसका उपयोग उपचार के लिए किया जाता था। इसकी (क्रीम) विस्तृत जांच से पता चला कि यह एक रोमन फेस-क्रीम थी।

यह फेस-क्रीम एक टीन की डिब्बी में रखी थी, जो 6/5 सेंटीमीटर की थी और इतनी उच्च गुणवत्ता वाली थी कि यह आज उत्पादित सौंदर्य प्रसाधनों के बराबर है। इस प्रकार की फेस क्रीम संभवतः किसी धनी महिला की ही रही होगी। जब पुरातत्वविदों ने फेस-क्रीम की डिब्बी को खोला तो उसमें से एक अजीब-सी गंध निकली। यह खोज इस तथ्य का समर्थन करती है कि उस समय लंदन में रोमन संस्कृति फल-फूल रही थी। रोमन फेस क्रीम पारंपरिक रूप से मनचाहा रंगत पाने के लिए सीसे से बनाई जाती थी। रोमन लोग अपनी त्वचा को महत्व देते थे, इसलिए सुझाव दिया गया कि इस फेस क्रीम की खोज यह संकेत दे सकती है कि लंदन की आबादी वास्तुकला के अलावा कई मायनों में रोम की संस्कृति को आत्मसात कर रही थी। संभवतः 2,000 साल पहले किसी से क्रीम खो गई होगी, जो सदियों बाद मिली है।

■ राम सक्सेना, हरिद्वार

वर्ष 1935 का 'डिलीवरी मैन'

कई दशक पहले भी जापान में ऑर्डर करने पर गरमा-गरम नूडल्स के बाउल घर तक पहुंचाए जाते थे। साल 1935 में खींची गई इस तस्वीर में आप नूडल्स 'डिलीवरी मैन' को साइकिल पर देख रहे हैं। ■ दिल्ली से यश वर्मा

छायानट

अमिताभ के लिए चिल्ला पड़े दिलीप कुमार

महान अभिनेता दिलीप कुमार हमेशा अपने साथी कलाकारों का सम्मान करते थे। वह सुनिश्चित करते थे कि जो भी कलाकार उनके साथ काम करे, उसे अपना काम करने में कोई परेशानी न आए। उनके काम करने के तरीके से जुड़ा एक किस्सा है दिलीप कुमार और अमिताभ बच्चन का। दरअसल, दोनों की फिल्म 'शक्ति' का एक सीन मुंबई एयरपोर्ट के अंदर फिल्माया जा रहा था। जब अमिताभ सीन की अकेले रिहर्सल कर रहे थे, तब प्रोडक्शन और क्रू की ओर से बहुत शोर हो रहा था। उस वक्त दिलीप कुमार रिहर्सल नहीं कर रहे थे, लेकिन शोर सुनकर वह अचानक चिल्लाए और जोर से सबको चुप रहने के लिए कहा। दिलीप साहब बोले, "जब कोई कलाकार रिहर्सल कर रहा हो तो उस पल की अहमियत समझनी चाहिए और उस स्पेस की इज्जत करनी चाहिए।" साल 1982 में आई फिल्म 'शक्ति' को रमेश सिप्पी ने निर्देशित किया था।

■ विनय उपाध्याय, रोहतक

युद्ध, प्रेम और राजनीति के नियम

युद्ध और प्रेम के कुछ नियम होते हैं, जिनका वर्तमान दौर में जघन्य उल्लंघन भले दिख रहा हो, लेकिन राजनीति का खेल जरूर उन अघोषित नियमों के आधार पर हो रहा है, जिनका उद्देश्य ही घोषित नियमों की धज्जियां उड़ाना है।

कुछ हफ्ते पहले अपने एक लेख में मैंने कानून के शासन (रूल ऑफ लॉ) और कानून द्वारा शासन (रूल बाइ लॉ) में फर्क बताने की कोशिश की थी। कानून के शासन के तहत कानून सर्वोच्च होता है और शासक चाहे जो हो, उसे कानून का पालन करना होता है। जबकि कानून द्वारा शासन में शासक सर्वोच्च होता है और कानून उसका सेवक होता है। जाहिर है कि सेवकों को किसी भी वक्त बदला जा सकता है। उल्लेखनीय है कि जब से बस्तियों और समुदायों के विचार ने जड़ें जमाई हैं, तभी से मनुष्यों ने कुछ नियमों से खुद को बांधा है।

युद्ध के नियम

युद्ध के कुछ नियम होते हैं। दो विश्वयुद्धों के बाद चार जेनेवा कन्वेंशन और उनके प्रोटोकॉल को सभी 196 देशों द्वारा अपनाया और अनुमोदित किया गया था। इनसे मिलकर ही अंतरराष्ट्रीय मानवतावादी कानून बनते हैं। संक्षेप में कहें, तो इनके चार बुनियादी नियम हैं –

- संघर्ष के दौरान बीमारों, घायलों, चिकित्सा और धर्म का काम करने वालों की रक्षा।
- समुद्र में युद्ध के दौरान घायलों, बीमारों और टूटे हुए जहाजों की देखभाल।
- युद्धबंदियों संग व्यवहार में मानवता का ख्याल।
- कब्जे वाले क्षेत्र के नागरिकों समेत सभी की रक्षा।

हालांकि वियतनाम, इराक और लीबिया के युद्धों में इन नियमों की खुलेआम धज्जियां उड़ाई गई थीं। रूस व यूक्रेन और इस्राइल व हमास के बीच चल रहे युद्धों में भी इन नियमों का ध्वस्त होना जारी है। बलात्कार और लूटपाट तो बिल्कुल सामान्य बात हो गई है। रूस की मिसाइलों ने यूक्रेन के अस्पतालों, स्कूलों और आवासीय इलाकों को भी नहीं बख्शा है। 24 जनवरी, 2024 को यूक्रेन के 65 युद्धबंदियों और चालक दल के नौ लोगों को ले जा रहे एक रूसी विमान पर हमला हुआ, जिससे विमान में सवाल सभी लोग मारे गए। रूस ने इस आतंकवादी कृत्य के लिए यूक्रेन पर इल्जाम लगाया है, जबकि यूक्रेन ने इसका खंडन किया है। इस्राइल-हमास के वर्तमान युद्ध की शुरुआत सात अक्तूबर, 2023 को दक्षिणी इस्राइल पर हमास के अप्रत्याशित हमले से हुई, जिसमें 1200 से ज्यादा लोग मारे गए और 240 लोगों को बंधक बना लिया गया। लेकिन पिछले चार महीनों में इस्राइल की प्रतिक्रिया बेहद क्रूर रही है। फलीस्तीनियों को संकरी गाजा पट्टी में धकेल दिया गया है और 25 हजार लोगों के मारे जाने की खबर है। सच तो यह है कि दोनों युद्धों में चारों पक्षों द्वारा युद्ध के हर नियम का उल्लंघन किया गया है। युद्ध के नियमों के उल्लंघन पर व्यक्ति और देश पर संयुक्त राष्ट्र न्यायालयों में मुकदमा चलाने का प्रावधान है। गाजा में नरसंहार कन्वेंशन के उल्लंघन के लिए दक्षिण अफ्रीका ने इस्राइल के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय न्यायालय में मामला दर्ज कराया है।

संगम साहित्य में (300 ईसा पूर्व) युद्ध के नियमों पर एक सुंदर कविता है :

'गौ, सज्जन ब्राह्मण, महिलाएं, रोगी और जिनके संतान न हो,/वे सुरक्षित स्थानों के लिए प्रस्थान करें,/यहां एक युद्ध होगा,/और मेरा तीर आगे बढ़ेगा,/राजा द्वारा धर्म का मार्ग बताने के बाद,/वह युद्ध में शामिल होगा।'

तमिल कवि कंबन (1180 ईस्वी) द्वारा राम और रावण के बीच युद्ध के अंतिम दृश्य के वर्णन से भी मैं आश्चर्यचकित हूं। राम, रावण से कहते हैं –

'तुम अपने सभी हथियार खो चुके हो और असहाय खड़े हो,/अगर मैं अब तुमसे युद्ध करूं, तो यह धर्म नहीं होगा,/आज लौट जाओ और कल युद्ध के लिए तैयार होकर आओ,/और मैं तुमसे लड़ूंगा।'

पी चिदंबरम
पूर्व केंद्रीय मंत्री

प्रेम के नियम

प्रेम के नियमों पर कई किताबें लिखी गई हैं। मेरा मानना है कि इसकी जितनी किताबें हैं, उतने ही इसके नियम और उतने ही प्रेमी भी हैं। 'प्रेम के नियम' ऐसी किताबों का एक लोकप्रिय शीर्षक भी लगता है। 'द सिंपल रूल्स ऑफ लव', '8 रूल्स ऑफ लव' से लेकर 'द फोर्टी रूल्स ऑफ लव' तक प्रेम पर किताबों का पूरा कैटलॉग है। हालांकि मैंने इनमें से कोई भी किताब नहीं पढ़ी है। लेकिन इनका अपना एक पाठक वर्ग जरूर है।

मैं प्रेम के कुछ गहरे नियमों की तलाश में था और मुझे ये मिले :

- 'किसी ऐसे व्यक्ति पर अपना प्रेम बर्बाद न करें, जो इसकी कद्र न करता हो।'
  – विलियम शेक्सपियर
- 'इंसान को हमेशा प्रेम में रहना चाहिए और यही वजह है कि उसे विवाह नहीं करना चाहिए।'
  – ऑस्कर वाइल्ड
- 'जब हम प्रेमवश होकर किए गए कार्यों पर कुछ पढ़ना चाहते हैं, तो हमें क्या मिलता है? हत्या की खबरें।' *– जॉर्ज बर्नार्ड शॉ*
- 'प्रेम में ठोकर खाने पर संभलना आसान होता है। लेकिन एक बार प्रेम में पड़ गए, तो फिर से खड़े होना नामुमकिन है।'
  – अल्बर्ट आइंस्टीन

ये टिप्पणियां मजाक में या शायद गंभीरता से लिखी गई हों, लेकिन इनसे प्रेम के कुछ नियम तो समझ जरूर आते हैं। मेरे पसंदीदा कवि-दार्शनिक ने 500 ईस्वी में अपनी अमर कृति 'तिरुक्कुरल' में प्रेम पर एक संपूर्ण अंश लिखा है, जिसमें 25 अध्याय और 250 दोहे हैं। इनमें कुछ ऐसी बातें हैं, जो प्रेम के सार्वभौमिक नियमों को खोजने में मदद कर सकती हैं, जैसे-

- प्रेमियों की जब नजर से नजर मिलती है, तो शब्द मायने नहीं रखते।
- झगड़ों व अपशब्दों से प्रेम कम नहीं होता। ये वैसा है, जैसे तेल से आग बुझाने की कोशिश हो रही हो।

राजनीति के नियम

राजनीति के मामले में तो बेहतर होगा कि 'राजनीति के नियमों' और 'राजनीति पर कानूनों' के बीच फर्क को समझ लिया जाए। जिस तरीके से किसी खेल को खेला जाता है, वह नियम कहलाता है। कानून अलग चीज है। कुछ खेल ऐसे खेले जाते हैं, जो अघोषित नियमों पर आधारित होते हैं, और जिनका उद्देश्य ही घोषित नियमों का उल्लंघन करना होता है। मसलन, राजनीतिक दलों में दल-बदल को हतोत्साहित करने वाले कानून को इस तरह से लागू किया गया है कि जिससे दल-बदल को ज्यादा बढ़ावा मिलेगा। राजनीति के नियमों के तहत अंपायर भी एक तरफ से खेल सकता है। ऐसे कई मामले हैं, जिनमें सदन के अध्यक्ष ही दल-बदल के खेल में खिलाड़ी बन गए। इसके अलावा, राजनीति का एक नियम यह भी है कि सामान्य बातों को जटिल तरह से समझाया जाना चाहिए। इस नियम को ज्यादा स्पष्ट ढंग से समझने और राजनीति के दूसरे नियमों की जानकारी के लिए नीतीश कुमार के पास जाया जा सकता है।

Licensed by
The Indian Express Limited

देखभाल के इस अंतर को दूर करें

बीते एक दशक में कैंसर की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं। भविष्य की रिपोर्ट से संकेत मिलता है कि इसमें वृद्धि जारी रहेगी। कैंसर से होने वाली मौतों का एक बड़ा कारण देर से पता चलना और इस बीमारी के प्रति अज्ञानता है। यह एक ऐसी बीमारी है, जिसमें शरीर की कोशिकाओं का एक हिस्सा नियंत्रण से बाहर हो जाता है और शरीर के अन्य क्षेत्रों में फैल जाता है। सबसे आम लक्षण, जिन्हें नजरअंदाज नहीं करना चाहिए वे हैं - वजन या भूख में कमी, थकान, रक्तस्राव, पेशाब करने में समस्या, खांसी में खून आना, मल त्यागने की आदत में बदलाव, मस्सों में बदलाव और गांठें आदि। अधिकांश रोगियों के पास सर्जरी के अलावा, विकिरण चिकित्सा (रेडियोथेरैपी) या कीमोथेरैपी सहित उपचारों का एक संयोजन होता है। इन दिनों, इम्यूनोथेरैपी, हार्मोन उपचार और लक्षित थेरैपी अतिरिक्त रूप से कैंसर के कुछ मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ऑन्कोलॉजी अभ्यास में व्यापक देखभाल (पैलिएटिव केयर) प्रदान करने की आवश्यकता तेजी से बढ़ रही है। आज पैलिएटिव केयर समय की मांग है। सर्जरी, रेडियोथेरैपी और कीमोथेरैपी के साथ-साथ कैंसर के उपचार के इस व्यापक मॉडल के लिए भी एक नया सहायक स्तंभ है।

डॉ. सनी मलिक
राजीव गांधी कैंसर अस्पताल, दिल्ली

खुला आकाश

आज 'विश्व कैंसर दिवस' है। इस साल का विषय है - 'देखभाल के अंतर को दूर करें', यानी निष्पक्ष स्वास्थ्य देखभाल प्राप्त कराना, जो भेदभाव से मुक्त हो।

अमेरिकन सोसायटी ऑफ क्लिनिकल ऑन्कोलॉजी, यूरोपियन सोसाइटी फॉर मेडिकल ऑन्कोलॉजी, राष्ट्रीय व्यापक कैंसर नेटवर्क और सोसायटी फॉर सर्जिकल ऑन्कोलॉजी द्वारा समर्थित पैलिएटिव केयर सर्वोत्तम अभ्यास का एक हिस्सा है। पैलिएटिव केयर टीम मनोवैज्ञानिक परामर्श के साथ-साथ परिवारों के साथ तालमेल बनाने में मदद करती है। उपचार में सबसे महत्वपूर्ण बात दर्द का नियंत्रण है। इसके लिए पैलिएटिव केयर विशेषज्ञ एनाल्जेसिक विकल्पों का उपयोग करता है। इसके अलावा कुछ अन्य मुद्दे भी हैं, जिन्हें कैंसर से जुड़े लक्षणों के रूप में जाना जाता है, जिनकी देखभाल पैलिएटिव केयर विशेषज्ञ भी कर रहे हैं। वे इन लक्षणों को नियंत्रित करने और इलाज करने में मदद करते हैं, जैसे - जी मिचलाना, उल्टी, कब्ज, दस्त, खांसी, सांस फूलना, वजन कम होना, भूख न लगना, सूजन, रक्तस्राव, पेट में पानी जमा होना और फेफड़ों या चेस्ट में पानी भरना आदि। विश्व कैंसर दिवस पर इस साल का विषय है - 'देखभाल के अंतर को दूर करें', यानी निष्पक्ष और न्यायसंगत स्वास्थ्य देखभाल प्राप्त कराना है, जो सुरक्षित और भेदभाव से मुक्त हो।

विधानसभा में दो वर्तमान व छह पूर्व दिवंगत सदस्यों को दी गई श्रद्धांजलि

● नेता सदन व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सहित सभी दलीय नेताओं ने दिवंगत सदस्यों के परिजनों के प्रति व्यक्त की संवेदनाएं

● सदन की कार्यवाही कल सुबह 11 बजे तक के लिए स्थगित

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

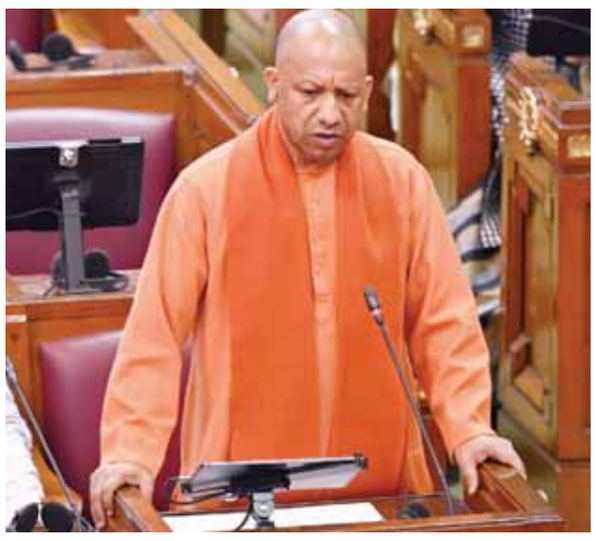

उत्तर प्रदेश विधानसभा सत्र के दूसरे दिन शनिवार को दो दिवंगत सदस्यों मानवेन्द्र सिंह और एसपी यादव और छह पूर्व दिवंगत सदस्यों को श्रद्धांजलि देने के बाद सदन की कार्यवाही सोमवार 11 बजे तक के लिए स्थगित कर गई। नेता सदन और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना व दलीय नेताओं ने इनके निधन को सदन की अपूर्णीय क्षति बताया। इसी के साथ नेता सदन योगी आदित्यनाथ और दलीय नेताओं ने भी सदन के छह पूर्व सदस्यों क्रमश: मोबिन अहमद आजमी, सतीश चन्द्र, जटाशंकर, इरशाद खां, डा सुरेश सिंघल, जगदीश गांधी के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलि दी।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उत्तर प्रदेश विधानसभा के पूर्व व वर्तमान सदस्यों के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए उनके परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त की है। उन्होंने कहा कि वर्तमान विधानसभा के सदस्य मानवेन्द्र सिंह का 5 जनवरी 2024 को लगभग 65 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वह लम्बे समय से अस्वस्थ चल रहे थे। हम सबके लिए उनका असमय निधन अत्यंत दुखद है। मानवेन्द्र सिंह इस सदन के दो बार निर्वाचित सदस्य थे। वह सर्वप्रथम वर्ष 2017 में तथा वर्ष 2022 में लगातार दूसरी बार भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर निर्वाचन क्षेत्र ददरौल, जिला शाहजहांपुर से विधानसभा सदस्य निर्वाचित हुए थे। वह विधानसभा की विभिन्न महत्वपूर्ण समितियां के भी सदस्य रहे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि मानवेन्द्र सिंह छात्र जीवन से ही राजनीति में सक्रिय रहे। उनका दीर्घ राजनैतिक जीवन रहा है। जनता में लोकप्रियता के साथ-साथ उनकी छवि सौम्य एवं विनम्र जनप्रतिनिधि की थी। वह वर्ष 1977-78 में एसएस कॉलेज शाहजहांपुर छात्र संघ के अध्यक्ष रहे। उन्होंने अपनी राजनीतिक यात्रा का प्रारम्भ छात्र जीवन से ही कर दिया था। वर्ष 1992 से 1995 तक जिला पंचायत, शाहजहांपुर के अध्यक्ष रहे। इसके अतिरिक्त वह जिला सहकारी बैंक, शाहजहांपुर के संचालक तथा स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय, शाहजहांपुर की प्रबन्ध समिति के उपाध्यक्ष भी रहे। मुख्यमंत्री ने कहा कि मानवेन्द्र सिंह ने किसानों तथा युवाओं सहित समाज के सभी वर्गों के उत्थान के लिए कार्य किया तथा अपने क्षेत्र के विकास कार्यों के प्रति समर्पित रहे। सदन के वरिष्ठ एवं अनुभवी सदस्यों का निधन इस सदन के लिए दुखद है, उनकी कमी इस सदन में सदैव बनी रहेगी। मानवेन्द्र सिंह के निधन से प्रदेश की अपूर्णीय क्षति हुई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राजनैतिक आन्दोलनों के अन्तर्गत गोंडा तथा बलरामपुर जिला कारागार में बन्दी रहे। समाज सेवा व राजनीतिक कार्यों के साथ.साथ उनकी अध्ययन व लेखन में रुचि थी। जनप्रतिनिधि के रूप में वह अपने क्षेत्र के विकास, समाज तथा पिछड़े व वंचित वर्ग के कल्याण के लिए भी सतत प्रयत्नशील रहे। उनके निधन से प्रदेश ने कुशल राजनीतिज्ञ खो दिया है। सपा विधानमंडल दल के उपनेता मनोज कुमार पांडेय ने विधानसभा सदस्य मानवेन्द्र सिंह तथा डॉ शिवप्रताप यादव के निधन पर शोक जताते हुए कहा कि इन दो सदस्यों के निधन से इस सदन को जो क्षति हुई उसकी भरपाई मुश्किल है। उन्होंने कहा कि मानवेन्द्र सिंह एक विनम्र और मिलनसार व्यक्ति थे। मानवेन्द्र सिंह विधायक होने से पूर्व वे जिला पंचायत अध्यक्ष और छात्रसंघ के अध्यक्ष भी रह चुके थे। सपा सदस्य ने कहा कि शिवप्रताप यादव जनप्रतिनिधि होने के नाते जनता से जुड़े मुद्दों को लेकर कई बार जेल भी गए। वे योग्य श्रेष्ठ और मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे। अपना दल एस के सदस्य रामविलास वर्मा ने दिवंगत सदस्यों को नेता सदन सहित दलीय नेताओं द्वारा व्यक्त किए गए शोकोदगार से अपने दल को संबद्ध करते हुए कहा कि वे अपने बीच के साथियों के निधन से शोकाकुल है। राष्ट्रीय लोकदल के राजपाल वालियान, जनसत्ता दल के रघुराज प्रताप सिंह राजा भैया, कांग्रेस विधानमंडल दल की नेता आराधना मिश्रा मोना सुभासपा के ओमप्रकाश राजभर ने भी दिवंगत सदस्यों को श्रद्धांजलि दी। नेता सदन और दलीय नेताओं के संबोधन के बाद विधानसभाध्यक्ष सतीश महाना ने कहा कि अपने वर्तमान और पूर्व सदस्यों के निधन से पूरा सदन शोकाकुल है। दिवंगत सदस्यों की स्मति में सदन के सभी सदस्यों ने दो मिनट का मौन रखा। इसी के साथ सदन की कार्यवाही सोमवार को ग्यारह बजे तक के लिए स्थगित कर दी गई।

राष्ट्रीय एकता के लिए किए गए आडवाणी के प्रयास सभी के लिए प्रेरणा: मुख्यमंत्री

● लाल कृष्ण आडवाणी को भारत रत्न दिए जाने के निर्णय पर मुख्यमंत्री ने जताई खुशी, दी बधाई

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

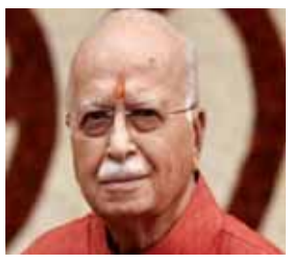

भारत सरकार ने शनिवार को एक महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए भाजपा के संस्थापक सदस्य और पूर्व उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी को भारत रत्न सम्मान देने की घोषणा की है। इस निर्णय पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हर्ष जताया है और इसको उनके अद्वितीय प्रयासों को सम्मान प्रदान करने वाला करार दिया है। सीएम योगी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स के माध्यम से लाल कृष्ण आडवाणी को बधाई दी और कहा कि राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए लाल कृष्ण आडवाणी द्वारा किए गए प्रयास सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। उन्होंने लाल कृष्ण आडवाणी को देश का सर्वोच्च पुरस्कार प्रदान किए जाने के निर्णय की प्रशंसा करते हुए कहा कि वह न सिर्फ भाजपा के संस्थापक सदस्य हैं बल्कि देश और दुनिया में भाजपा के असंख्य कार्यकर्ताओं के प्रेरणास्रोत भी हैं। उन्होंने कहा कि उनके सार्वजनिक जीवन में दशकों की सेवाए प्रतिबद्धता और राष्ट्र की अखंडता के प्रति अटूट प्रतिबद्धता झलकती है। साथ ही उन्होंने कहा कि आडवाणी जी ने अपने राजनैतिक जीवन में शुचिता व नैतिकता के उच्च मानक स्थापित किए हैं। यह पुरस्कार उनके अद्वितीय प्रयासों को सम्मानित करने वाला है।

उल्लेखनीय है कि लाल कृष्ण आडवाणी को भारत रत्न दिए जाने के निर्णय की जानकारी स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोशल मीडिया पोस्ट के माध्यम से दी। लाल कृष्ण आडवाणी भाजपा के सबसे पुराने और बड़े नेताओं में शामिल हैं।

दिव्यांगजन सरकार व समाज के प्रोत्साहन के हकदार: योगी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/गोरखपुर

● राज्य स्तरीय तीन दिवसीय दिव्य कला व कौशल प्रदर्शनी का मुख्यमंत्री ने किया उद्घाटन

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि दिव्यांगजन में असीमित अंतर्निहित प्रतिभा होती है। जरूरत उस प्रतिभा को तराशकर मंच देने की है। दिव्यांगजन सरकार और समाज के प्रोत्साहन के हकदार हैं और इसी प्रोत्साहन की अपेक्षा भी करते हैं। इसी भावना के साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में डबल इंजन की सरकार दिव्यांगजन का संबल बनकर उन्हें सम्मान और स्वावलंबन के मार्ग पर अग्रसर कर रही है।

सीएम योगी शनिवार शाम योगिराज बाबा गंभीरनाथ प्रेक्षागृह में दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग की तरफ से आयोजित राज्य स्तरीय तीन दिवसीय दिव्य कला एवं कौशल प्रदर्शनी के उद्घाटन समारोह को संबोधित कर रहे थे। दिव्यांगजन के आत्मविश्वास को बढ़ाने वाले इस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने कहा कि किसी व्यक्ति में कहीं से कोई कमी रहती है तो ईश्वर उसकी प्रतिपूर्ति कर देते हैं। उपनिषदों के जरिये समाज का मार्गदर्शन करने वाले महर्षि अष्टावक्रए मध्यकाल में भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का छंदीय चित्रण करने वाले महाकवि सूरदास और वर्तमान समय में जगद्गुरु रामभद्राचार्य और विख्यात वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंस इसके उदाहरण हैं। उन्होंने कहा कि आज इस प्रदर्शनी का उद्घाटन कर उन्हें दिव्यांगजन की प्रतिभा को और नजदीक से देखने का अवसर प्राप्त हुआ है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि उत्तर प्रदेश ईश्वर के अवतरण की भूमि है। संभवत: यह देश का पहला राज्य है जहां सरकार के स्तर पर दो विश्वविद्यालय संचालित हैं। एक डॉ शकुंतला मिश्र पुनर्वास विश्वविद्यालय लखनऊ में और दूसरा जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय चित्रकूट में। सरकार के स्तर पर अनेक ऐसे कार्य शुरू किए गए हैं जिनसे दिव्यांगजन का कल्याण होए वे समर्थ और सशक्त बनें। उन्होंने कहा कि वे प्राय: किसी न किसी दिव्यांगजन संस्थान का भ्रमण-निरीक्षण करते रहते हैं। गत दिनों उन्होंने गोरखपुर में मूक बधिर विद्यालय का निरीक्षण किया था। उसके पहले दृष्टिबाधित विद्यालय का जायजा लिया था। इन संस्थाओं में इंफ्रास्ट्रक्चर बेहतर करने, शिक्षकों की कमी दूर करने तथा दिव्यांगजन को तकनीक से जोड़कर उन्हें और सक्षम बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं। कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान में यूपी में 10.40 लाख दिव्यांगजन को प्रतिमाह एक हजार रुपये की पेंशन दी जा रही है। पहले यह धनराशि तीन सौ रुपये थी जिसे बढ़ाकर एक हजार किया गया। आने वाले समय में इसे और बढ़ाया जाएगा।

उन्होंने कहा कि कोई भी दिव्यांगजन राशन कार्ड, आवास, पेंशन और शिक्षा से वंचित न रहे, इसके लिए अभियान चलाने के निर्देश दिए गए हैं। इसके साथ स्कूल जाने वाले सभी दिव्यांगजन को मोटराइज्ड ट्राइसाइकिल उपलब्ध कराई जाएगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान में प्रदेश में 11 हजार से अधिक लोग प्रतिमाह तीन हजार रुपये कुष्ठावस्था पेंशन प्राप्त कर रहे हैं। ऐसे लोगों को मुख्यमंत्री आवास योजना के अंतर्गत अनिवार्य रूप से आवास की सुविधा उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया है। 15.53 लाख दिव्यांगजन आयुष्मान योजना में कवर किए गए हैं। सरकार कॉक्लियर इम्प्लांट के लिए छह लाख रुपये दे रही है। दिव्यांगजन के लिए प्रदेश में 21 विशेष विद्यालय, 18 बचपन डे केयर सेंटर, तीन मानसिक मंदित आश्रय गृह भी संचालित हैं। सीएम योगी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विकलांग शब्द की छुट्टी कर दिव्यांगजन शब्द दिया है क्योंकि इनके अंदर ईश्वर से विशिष्ट शक्ति निहित होती है। दिव्यांगजन की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए बल्कि उनके लिए सम्मान और स्वावलंबन का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए। दिव्यांगजन स्वावलंबी और सशक्त होंगे तो पूरा समाज समर्थ बनेगा। उन्होंने कहा कि डबल इंजन की सरकार दिव्यांगजन, निराश्रित और उपेक्षित लोगों के सम्मान और स्वावलंबन के लिए संकल्पित भाव से कार्य कर रही है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने सभी लोगों को अयोध्या में हुए भगवान श्रीरामलला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह की बधाई भी दी। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सांसद रविकिशन शुक्ल ने कहा कि पीएम मोदी और सीएम योगी की सरकार दिव्यांगजन को सशक्त बनाने के लिए पूरा प्रयास कर रही है। सरकार के प्रोत्साहन से दिव्यांग खिलाड़ी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शानदार प्रदर्शन करते हुए पैरा ओलंपिक में देश के लिए कई मेडल जीत चुके हैं। कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग के प्रमुख सचिव सुभाष चंद्र शर्मा ने विभाग की उपलब्धियों और योजनाओं की जानकारी दी।

इस अवसर पर प्रमुख रूप से जिला पंचायत अध्यक्ष साधना सिंह, महापौर डॉ मंगलेश श्रीवास्तव, विधायक विपिन सिंह, राजेश त्रिपाठी, भाजपा के जिलाध्यक्ष युधिष्ठिर सिंह, महानगर अध्यक्ष राजेश गुप्ता आदि भी उपस्थित रहे। मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम स्थल पर दिव्यांगजन को ट्राइसाइकिल और सहायक उपकरणों का वितरण भी किया। 100 दिव्यांगजन को ट्राइसाइकिल, 30 को मोटराइज्ड ट्राइसाइकिल प्रदान की गई। यह उपहार प्राप्त करने वाले दिव्यांगजन की रैली को सीएम योगी ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। कार्यक्रम में कई दिव्यांगजन को वैशाखी, हियरिंग एड, स्मार्ट केन वितरित की गई। कुछ को ये उपकरण मंच पर मुख्यमंत्री के हाथों प्राप्त हुआ।

विधान परिषद की कार्यवाही

उच्च सदन में जगजीवन प्रसाद के निधन पर व्यक्त किया गया शोक

● प्रश्न प्रहर न होने के विरोध में सपा ने किया वॉकआउट

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

विधान परिषद सदन की कार्यवाही पूर्वाह्न 11 बजे सभापति कुँवर मानवेन्द्र सिंह के सभापतित्व में प्रारम्भ हुई। तत्पश्चात् सभापति कुंवर मानवेन्द्र सिंह ने जगजीवन प्रसाद पूर्व सदस्य विधान परिषद् के निधन पर शोकोद्गार व्यक्त किया। सदन ने दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए कुछ क्षण खड़े होकर मौन धारण किया।

शनिवार के दिन सदन होने के कारण प्रश्न प्रहर नहीं हुआ परन्तु सपा के सभी सदस्य प्रश्न प्रहर कराने के जिद पर थे। परन्तु प्रश्न प्रहर नहीं हुआ जिस कारण सपा के सभी सदस्यों ने सदन का त्याग किया। नियम-59 (5) के अन्तर्गत डॉ. आकाश अग्रवाल, डॉ. जय पाल सिंह 'व्यस्त', अनूप कुमार गुप्ता एवं देवेन्द्र प्रताप सिंह ने राम लला की प्राण प्रतिष्ठा पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र भाई दामोदर दास मोदी एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ तथा प्राण-प्रतिष्ठा के कार्यक्रम में सम्मिलित होने आए देश-विदेश के प्रतिनिधियों के प्रति धन्यवाद एवं कृतज्ञता व्यक्त किए जाने के संबंध में प्रस्ताव दिया। सभापति कुंवर मानवेन्द्र सिंह ने बधाई संदेश को सरकार को प्रेषित किया। अनूप कुमार गुप्ता ने श्रद्धेय कर्पूरी ठाकुर को 23 जनवरी, 2024 को भारत सरकार ने मरणोपरान्त भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किए जाने पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं सम्पूर्ण केन्द्र सरकार को बधाई दिए जाने के संबंध में प्रस्ताव दिया। सभापति कुंवर मानवेन्द्र सिंह ने बधाई संदेश को सरकार को प्रेषित किया।

सपा ने प्रमुखता से उठाया बीएचयू की बीटेक छात्रा से गैंगरेप का मामला

● सरकार के जवाब से असंतुष्ट होकर किया सदन से वॉकआउट

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

बजट सत्र के दूसरे दिन शनिवार को समाजवादी पार्टी के सदस्यों ने वाराणसी में बीएचयू में आईआईटी की छात्रा के साथ हुई गैंगरेप की घटना को विधान परिषद में प्रमुखता से उठाया। सदस्यों ने तीनों आरोपियों के भाजपा आईटी सेल का कार्यकर्ता होने और सरकार द्वारा उन्हें संरक्षण देने का आरोप लगाते हुए हंगामा किया। इस मामले में नेता सदन केशव प्रसाद मौर्य की ओर से दिए गए जवाब से असंतुष्ट होकर सपा सदस्यों ने सदन से वॉकआउट किया।

शून्य काल के दौरान नियम 105 के अन्तर्गत सपा सदस्यों ने यह मामला उठाते हुए जानकारी दी कि आईआईटी बीएचयू में छात्रा के साथ एक नवंबर की मध्य रात को दरिंदगी की गई थी। भाजपा आईटी सेल से जुड़े पदाधिकारियों ने एक नवंबर को छात्रा के साथ गैंगरेप किया था। अपने दोस्त के साथ कैंपस में टहल रही छात्रा को झाड़ियों में ले जाकर उसके कपड़े उतारकर वीडियो भी बनाया गया था। चौतरफा दबाव के बाद पुलिस ने वारदात के दो महीने बाद तीनों आरोपियों को पकड़कर जेल भेजा था। मजिस्ट्रेट के बयान से पहले तक पुलिस ने गैंगरेप की धारा भी नहीं लगाई थी। सपा के सदस्य लाल बिहारी यादव, नरेश चंद्र उत्तम, स्वामी प्रसाद मौर्य व अन्य सदस्यों ने वाराणसी जिला प्रशासन की कार्यवाही पर असंतोष जाहिर करते हुए सदन की कार्यवाही रोककर चर्चा कराए जाने की मांग की। सपा सदस्य स्वामी प्रसाद मौर्य, मुकुल यादव और डॉक्टर मान सिंह यादव ने इस मांग पर जोर दिया। सपा सदस्यों ने आरोप लगाया कि आरोपी सत्ता पक्ष से जुड़े थे और उनके खिलाफ समय से कार्रवाई नहीं की गई। सदस्यों ने आरोप लगाया कि भाजपा का बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ नारा केवल दिखावा है और सत्तारूढ़ दल का असली चेहरा सामने आ गया है। विधान परिषद में नेता सदन व उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने मामले में अब तक हुई कार्रवाई से अवगत कराया लेकिन विपक्षी सदस्य उनके जवाब से संतुष्ट नहीं हुए। सपा सदस्यों ने सदन की कार्यवाही रोककर चर्चा कराये जाने की मांग पर जोर दिया।

विधान परिषद सभापति कुंवर मानवेंद्र सिंह ने कार्यस्थगन की सूचना को अस्वीकार कर दिया और मामले को सरकार को आवश्यक कार्रवाई के लिए संदर्भित किया। बसपा के भीमराव अम्बेडकर ने प्रदेश में बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा 69000 शिक्षक भर्ती में पिछड़ा वर्ग व अनुसूचित जाति के साथ न्याय न करके आरक्षण नियमों के उल्लंघन के सम्बन्ध में सूचना दी। सूचना की ग्राह्यता पर भीमराव अम्बेडकर ने अपने विचार व्यक्त किए। बेसिक शिक्षा मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) संदीप सिंह ने सदन को तथ्यों से अवगत कराया। सभापति कुँवर मानवेन्द्र सिंह ने सूचना पर कार्यस्थगन अस्वीकार कर सरकार को आवश्यक कार्यवाही के लिए संदर्भित किए जाने के निर्देश दिए। याचिकाओं को याचिका समिति कों संदर्भित किया गया।

राज्यपाल के अभिभाषण पर शुरू हुई चर्चा

डा. प्रज्ञा त्रिपाठी एवं निर्मला पासवान ने राज्यपाल के अभिभाषण पर कृतज्ञता पूर्वक धन्यावाद प्रकट करते हुए कहा कि वर्षों से अधूरे राम मंदिर का सपना पूरा हुआ। राम लला अपने घर में विराजे तथा सरकार की लाभार्थी योजनाओं को जन-मानस तक पहुंचाने का कार्य हमारी सरकार में हो रहा है। इसी दौरान अधिष्ठाता डॉ. सरोजनी अग्रवाल ने सदन का सभापतित्व किया। राज्यपाल के अभिभाषण पर धन्यवाद चर्चा में भाग लेते हुये सपा नेता लाल बिहारी यादव ने कहा कि अभिभाषण झूठ का पुलिन्दा है। इस सरकार में महिलायें असुरक्षित एवं अपराधियों का बोल-बाला है चारों तरफ भ्रष्टाचार का बोल-बाला है किसान विरोधी सरकार है अस्पतालों की हालत खराब है। बिजली की समस्या, दिन-प्रतिदिन बढती जा रही है। यह सरकार बेरोजगार नवयुवकों को रोजगार उपलब्ध कराने की किसी ठोस नीति नहीं बना पा रही है। तत्पश्चात् अधिष्ठाता डॉ. सरोजनी अग्रवाल ने 2:35 बजे सदन की बैठक सोमवार 5 फरवरी 2024 को 11 बजे तक के लिए स्थगित कर दी।

निर्दलीय समूह के राजबहादुर सिंह चन्देल एवं डॉ आकाश अग्रवाल ने प्रदेश में कार्यरत शिक्षकों, कर्मचारियों एवं अधिकारियों की पुरानी पेंशन योजना को बहाल कराए जाने के संबंध में सूचना दी। सूचना की ग्राह्यता पर राजबहादुर सिंह चन्देल, एवं ध्रुव कुमार त्रिपाठी ने अपने विचार व्यक्त किए। नगर विकास एवं ऊर्जा मंत्री अरविन्द कुमार शर्मा ने सदन को तथ्यों से अवगत कराया और कहा यह निर्णय केंद्र सरकार पर है। इसमें यूपी सरकार कुछ नहीं कर सकती। सभापति कुंवर मानवेन्द्र सिंह ने सूचना पर कार्यस्थगन अस्वीकार कर सरकार को आवश्यक कार्यवाही के लिए संदर्भित किए जाने के निर्देश दिये। याचिकाओं को याचिका समिति कों संदर्भित किया गया।

आईआईएम के गुरुजी अपर जिलाधिकारियों को सिखाएंगे आपदा प्रबंधन के गुर

● आपदाओं को कम करने और निपटने में टेक्नोलॉजी के उपयोग पर प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

● तीन चरणों में आयोजित किया जाएगा प्रशिक्षण शिविर

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

योगी सरकार प्रदेश के सभी जिलों के अपर जिलाधिकारियों (एडीएम) को महामारी, बाढ़, सूखा, अतिवृष्टि, वज्रपात जैसी आपदाओं से निपटने और इसके उचित प्रबंधन में निपुण बनाने के लिए प्रशिक्षण शिविर का आयोजन करने जा रही है। यह शिविर तीन चरणों में आयोजित किया जाएगा, जिसमें प्रदेश के विभिन्न जिलों के 25-25 एडीएम को प्रशिक्षण दिया जाएगा। शिविर में जलवायु परिवर्तन, संवेदनशीलता और आपदा प्रबंधन के क्षेत्र के आईआईएम समेत विभिन्न प्रमुख संस्थानों के एक्सपर्ट प्रशिक्षण देंगे। योगी सरकार पहले चरण में आईआईएम लखनऊ में 6 और 7 फरवरी को शिविर का आयोजन करने जा रही है, जिसमें 25 एडीएम प्रतिभाग करेंगे। शिविर को चार अलग-अलग सेशन में विभाजित किया गया है।

अपर मुख्य सचिव राजस्व सुधीर गर्ग ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का आपदाओं से होनी वाली जनहानि को न्यूनतम करने पर खास फोकस है। इसी का नतीजा है कि पिछले साढ़े 6 साल में प्रदेश में बाढ़ समेत अन्य आपदाओं से होने वाली जनहानि को काफी कम किया गया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की दूरदर्शिता और आपदा के पहले ही अधिकारियों के अर्लट होने से यह संभव हो पाया है। उन्होंने बताया कि सीएम योगी की मंशा के अनुरुप आपदाओं से निपटने और उसके उचित प्रबंधन के लिए प्रदेश के सभी जिलों के एडीएम का प्रशिक्षण कराने का निर्णय लिया गया है। इसी के तहत आईआईएम लखनऊ में दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर में जलवायु परिवर्तन और संवेदनशीलता, आपदा प्रबंधन, राहत लॉजिस्टिक्स, स्टेकहोल्डर प्रबंधन, डिजिटल पहल और डिजाइन थिंकिंग के उपयोग जैसे विषयों पर चर्चा की जाएगी। इससे अधिकारियों को जिला स्तर पर नीति, प्रबंधन और क्रियान्वयन तंत्र को समझने में मदद मिलेगी। आईआईएम लखनऊ के प्रोफेसर एस वेंकटरमैया ने बताया कि शिविर के जरिये अधिकारियों को जलवायु संवेदनशीलता और आपदा प्रबंधन में टेक्नोलॉजी के इस्तेमालए चुनौतियों और जोखिमों की समझ विकसित करने में मदद मिलेगी।

प्रशिक्षण शिविर में एक्सपर्ट द्वारा अधिकारियों को नई प्रबंधन तकनीक, हाईटेक टेक्नोलॉजी के साथ-साथ जलवायु परिवर्तन और आपदा प्रबंधन में नये अवसरों की जानकारी दी जायेगी। प्रशिक्षण शिविर को प्रदेश के वर्तमान जलवायु परिवर्तन और आपदा प्रतिक्रिया को देखते हुए डिजाइन किया गया है। योगी सरकार का शिविर के जरिये प्रदेश में बढ़ती आपदाओं की घटनाओं को कम करने, प्रदेशवासियों को जागरुक करने के साथ जनहानि को न्यूनतम करने का उद्देश्य है। योगी सरकार की इस पहल से प्रदेश में जलवायु परिवर्तन और आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में एक नये युग की शुरुआत होगी। शिविर के पहले सत्र में आईआईएम लखनऊ के प्रोफेसर ऑफ स्ट्रेटजिक मैनेजमेंट नीरज द्विवेदी, दूसरे सत्र में उत्तर प्रदेश सरकार के सीनियर ऑफिशियल्स, तीसरे सत्र में इंटेलेक्ट चेन्नई के सीईओ डॉ. अरुण जैन और चौथे सत्र में प्रसाद उन्नीकृष्णन और कोच्चि के जीटी भरत सम्मिलित होंगे। दूसरे दिन पहले सत्र में प्रसाद उन्नीकृष्णन और जीटी भरतए दूसरे तीसरे और चौथे सत्र में आईआईएम लखनऊ के प्रो. एस वेंकट शामिल होंगे।